"उनके लिए जो यथास्थिति से संतुष्ट नहीं है... सभी के लिये।"

विवेक एस. पटवर्धन

एक्जीक्यूटिव कोच एवं ओ. डी. कन्सल्टेंट, भूतपूर्व वी. पी. - एच आर, एशियन पेंट्स

संतोष नायर



NATIONAL BESTSELLER

जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स

आजीवन लीडर रहें

ELEVEN COMMANDMENTS of LIFE MAXIMIZATION

NOW IN HINDI

पवन गोयनका द्वारा लिखित प्रस्तावना

प्रेजिडेंट - ऑटोमोटिव एवं फार्म एक्विपमेंट सेक्टर ऑफ महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा लिमिटेड

JAICO

VISIT…

LANZAROTE Caliente.com

जीवन उन्नयन के

इलेवन कमांडमेंट्स

आजीवन लीडर रहें

ELEVEN COMMANDMENTS of LIFE MAXIMIZATION

NOW IN HINDI

संतोष नायर



जयको पब्लिशिंग हाउस

अहमदाबाद बेंगलोर भोपाल भुबनेस्वर चेन्नई
दिल्ली हैदराबाद कोलकाता लखनऊ मुम्बई

लेखक की प्रशंसा में

लोगों को इतना सक्षम बनाना कि वे अपने आने वाले कल को स्वयं द्वारा नियंत्रित अनुभव कर सकें, एक दुर्गम कार्य है और केवल वही लोग इस चुनौतीपूर्ण कार्य को करने का बीड़ा उठा सकते है जो स्वयं इस पथ पर चले है। यह तो आरम्भ से ही सुस्पष्ट था, कि संतोष को इस बात का पूरा विश्वास है कि केवल वे स्वयं ही, अपने भाग्य निर्माता है। हर चुनौती को अवसर में बदलने का उनका प्राकृतिक गुण, अपने आस-पास के प्रत्येक संसाधन का उन्नयन, व अपेक्षाओं से परे जा कर अनअपेक्षित को पा लेने की उनकी योग्यता ने इस बात में कोई संशय नहीं छोड़ा था कि वे एक विजेता ही है।

हमेशा से ही एक सम्भावना-विचारक रहने वाले, और कभी भी उत्तर में ना न सुनने वाले संतोष, अपनी नाव मंझधार में झिझोड़ने से कभी भयभीत नहीं हुए, और उन्होंने वास्तव में यह किया भी जब उन्होंने जीवन उन्नयन का पथ चुना और महान सफलता अर्जित की। उन्होंने स्वयं अपना जीवन रूपांतरित कर अन्यों के लिये उदाहरण प्रस्तुत किया। अपने जीवन के विभिन्न व विस्तृत अनुभवों के आधार पर उन्होंने क्षमताओं के उन्नयन, जीवन की गुणवत्ता को अधिक समृद्ध करने व उसे अधिक उत्पादक एवं संपूर्ण बनाने के मार्ग का मानचित्र तैयार किया। और अपने इस उद्यम को लोगों को प्रभावित करने व असंभव कल्पनाओं को बेच लेने के अपने ईश्वर प्रदत्त गुण से जोड़ कर उन्होंने कई युवाओं के जीवन को प्रभावित किया व अपने पद चिन्हो पर चलने को प्रेरित किया।

इस मन को छू लेने वाली पुस्तक में संतोष का जीवन उन्नयन का दर्शन समाया हुआ है और यह लोगों को उनके स्तर उन्नत करने, उन्हे सीमाओं में जकड़ देने वाले विश्वासों को चुनौती देने और रूपांतरित करने वाले परिवर्तनों को, अपनाने को प्रेरित करती है। यदि लोग इस पुस्तक को पढ़कर ईमानदारी से इन कमांडमेंट्स का प्रयोग अपने जीवन में करें, तो निश्चित ही उनके भविष्य व उनके आस-पास की दुनिया की रंगत बदल जायेगी, और यदि ऐसा हुआ तो, संतोष नायर का आजीवन नेता बने रहने का स्वप्न साकार हो जायेगा।

– सुरेश एल. गोकलाने

एग्जीक्यूटिव वाइस चेयरमैन, यूरेका फोर्ब्स लि.

यथा वचन तथा काज! संतोष नायर वह व्यक्ति है जिन्होंने यह चरितार्थ कर लाखों लोगों को अपने अनुसरण के लिये प्रेरित किया है।

सत्ताईस वर्ष की आयु में, संसार की सबसे बड़ी कम्पनियों में से एक का सी.ई.ओ. होने व आय. आय. एम (अहमदाबाद) व इंजिनियरिंग की डिग्रियाँ प्राप्त कर लेने के बाद मैं स्वयं को दुनिया का शंहशाह समझने लगा था, और तब मेरी मुलाकात संतोष नायर से हुई। मैं समझने लगा कि अभी मुझे और कितना सीखना है–व्यवसाय के बारे में, लोगों के बारे में, प्रबंधन, नेतृत्व, जीवन और स्वयं के बारे में भी।

जिस समय मैं 10,000 लोगों के दल का नेतृत्व कर रहा था, उन्होंने मुझे फिर से प्रेरित किया। उन्होंने मुझे मंझधार में अपनी नाव झिंझोड़ने की प्रेरणा दी और इस प्रक्रिया में मेरे भीतर के उद्यमी ने जन्म लिया। समय के साथ संतोष मेरे प्रेरणा पुंज बन गये और मुझे सफलता के लिये प्रेरित करते रहे।

इस पुस्तक में दिये गये इलेवन कमांडमेंट्स, संतोष नायर के लिये, वाकई वेद–वाक्यों से कम नहीं है। उन्होंने अपना जीवन इन्हीं के आधार पर जीया है। मैंने भी इन कमांडमेंट्स को आत्म सात करने का प्रयत्न किया है, और फल स्वरूप मुझे सुस्पष्ट दृष्टि उन्मुक्त उर्जा और अविश्वसनीय परिणाम मिले है।

यदि कोई पुस्तक है, जिसे आप सिर्फ पढ़े ही नहीं, अपितु जीवन में भी उतारे.......................तो वो यही है।

– रवि सक्सेना
सी.ई.ओ,
एम.आई.एस.बी, बोक्कोनी स्कूल ऑफ बिज़नेस
एमडी, वंडरशेफ होम अप्पलायंसेस
भूतपूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर–सोडेक्सो

(आज के सफल उद्यमी रवि को कई कम्पनियाँ व ब्रांड स्थापित करने का श्रेय जाता है, जिनमें शामिल है–सोडेक्सो, ग्लोरिया जींस कॉफीज, फनसिटी, एवं येलोचिलि रेस्त्रां जिनमें भारत में 75,000 से अधिक लोग काम करते है।)

सत्रह वर्षों तक एक व्यवसाय को स्थापित करने व चलाने के बाद मैं मानता हूँ कि जीवन का खेल खेलने की अंर्तदृष्टि मुझे जिस विश्वविद्यालय से मिली उसका नाम है–“धक्कों का विश्वविद्यालय”।

मैंने अपने करियर के बहुत आरम्भ मे ही यह सीख लिया था कि मुर्खतम व्यक्ति अपनी पुरानी गल्तियों को ही दोहराते रहते है। उनसे समझदार सीखतें हैं, और आगे बढ़ जाते हैं। सबसे समझदार न केवल अपने जीवन के अनुभवों से अंर्तदृष्टि पाते हैं अपितु अन्य समझदार लोगों, जैसे संतोष नायर, द्वारा रचित रूपरेखाओं और तकनीकों को भी अपना लेते है।

इस जीवन यात्रा में संतोष मेरे सहयात्री भी है और मेरे मानस का एक भाग भी। इस पुस्तक में सफलता के विषय में उन्होंने जो भी अमूल्य अंतः दृष्टियाँ इतनी उदारता से लोगों के साथ बांटी है, वे मेरे स्वयं के अवलोकन का प्रतिबिम्ब है। संतोष ने जिस दर्शन, आचारशास्त्रा, आचार व्यवहार एवं नीतियों को उच्चारित किया है, वे अभी सेल्स हैल्प पर प्रकाशित अन्य किसी भी साहित्य में नहीं मिलती। मै ऐसे कई धुरंधर व्यवसायियों को जानता हूँ जो अपनी अंतप्रेरणा से उन्हीं निष्कर्षों पर पहुँचे है और लाभान्वित हुए है जिनका वर्णन संतोष नायर ने किया है।

जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स एक कीर्तिमान स्थापित करने वाली पुस्तक है और ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गयी है जिसे जीवन का सामना गिरेबान से पकड़ कर करने व चुनौतियों को जीने का जुनून है। मैं हर उस उद्यमी, मार्केटिंग का कार्य करने वाले व्यक्ति एवं व्यवसायी को यह पुस्तक पढ़ने की सलाह दूंगा जो अपने जीवन व व्यवसाय को सफल बनाना चाहते है।

– संजीव गुप्ता

मैनेजिंग डायरेक्टर, ग्लोबल एडवरटाइज़र्स,

संतोष नायर एक उच्च–योग्यता वाले प्रोफेशनल है, तथा उन्होंने जीवन की हर भूमिका का निष्पादन सर्वोत्कृष्ट रूप से किया है। उनके साथ काम करना एक मनोरंजक अनुभव है क्योंकि उनका उत्साह आपको प्रेरित करता है वे अथाह परिश्रमी है और प्रत्येक वस्तु के विस्तृत प्रयोग के प्रति प्रवृत्त रहते है।

उनका जीवन व कार्य के प्रति “हो सकता है” का सकारात्मक रुख मित्रों व सहकर्मियों को समानरूप से प्रभावित करता है। वे केवल कार्यों के सम्पादन एवं निष्पादन में ही विश्वास नहीं रखते, अपितु अपने सहकर्मियों को सिखाने व उन्नत बनाने को भी महत्व देते है।

मेरी समस्त शुभकामनायें उनके साथ है।

– ए. डब्ल्यू. जॉर्ज

मैनेजिंग डायरेक्टर

टी.पी.सी. एल, इंडिया

भूतपूर्व बिज़नेस प्रमुख, हीरो मांइडमाइन

(हीरो ग्रुप)

अनुक्रमणिका

आभारोक्ति

पुस्तक लिखना, सदा ही मेरी कार्यसूची का भाग रहा है, किन्तु मैं नहीं जानता था कि यह इतनी जल्दी हो जायेगा। वह 10 फरवरी 2011 का दिन था, इस दिन मैंने जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स पर मुम्बई के एक सभागार में करीब 2500 लोगों के समक्ष व्याख्यान दिया था। यहीं पर जयको पब्लिकेशंस के मुख्य संपादक श्री रायसम शर्मा–जिन्हें अब मै प्रेम से शर्मा जी बुलाता हूँ, ने इस पुस्तक को लिखने का बीज बोया।

शर्मा जी की पहल के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती, उन्ही के जोर देने पर मैंने यह पुस्तक लिखी, और एक अन्य व्यक्ति है नन्ही परी पूर्णिमा जो पूरी प्रगाढ़ता से मुझे उत्साहित करती रही। ये वही है जिन्होंने अथक परिश्रम व मुझे निंरतर याद दिला कर यह सुनिश्चित किया कि मैं अपना कार्य समयसीमा में पूरा कर सकूं। जब तक मैं इस ग्रह पर हूँ एक लेखक के रूप में मेरे जन्म व प्रार्दुभाव का श्रेय जयको पब्लिकेशंस के अथक प्रयासों को ही जायेगा।

समर्पण

- यह पुस्तक मेरे पिता श्री के. एस. नायर को समर्पित है, जिनसे मैंने मजबूत होना सीखा।

- मेरी माता श्रीमती इंदिरा एस. नायर को मुझे नीचे न गिरने देने के उनके जुनून व हठ के लिये।

- मेरी बहनों सुधा नायर एवं सीमा मेनन को जिनके मुझमें विश्वास ने मेरा स्वयं में विश्वास मजबूत किया।

- मेरी पत्नी सिंधु को, जिनका अद्वितीय व निःस्वार्थ प्रेम मेरी वास्तविक क्षमताओं को उजागर करने में सहायक हुआ।

- मेरी तीन सुंदर बेटियों देविका, मालविका तथा राधिका को जिन्होंने कभी मुझसे समय का आग्रह नहीं किया, जब में अत्यधिक व्यस्त था।

- मेरे अधिकारियों और उनके अधिकारियों को–अनिल कुमार गुप्ता, अनिल अम्बो, लीलू बत्रा, राजेश मल्होत्रा, विनोद स्वामी, सिंथिया डीसूजा, सुरेश गोकलाने, अखिल मरफतिया, ए. के. सुब्रहमण्यम, पी. के. रॉय, ए. बी. सुरेश, मनीष कौल, अशोक कुमार,

- अरुण नलवड़े, जॉन सेल्वाराज, जे. पी. सिंह एवं ए. डब्ल्यू. जॉर्ज, जिनके ज्ञान ने मुझे वह बनाया जो मैं आज हूँ।

- मेरे सभी मौजूदा व भूतपूर्व, सहकर्मियों, अधीनस्थों व smmart के कर्मचारियों को जिनके निस्वार्थ समर्पण ने मेरे जीवन के संपूर्ण उन्नयन में सहायता की।

- मेरे सभी ग्राहको एवं दुनियाभर में फैले शुभ चिन्तकों को जिनके सीमाहीन समर्थन व प्रेम ने मुझे एक महान सेल्समैन, सेल्स मैनेजर, नेता, प्रशिक्षक, कोच व उद्यमी बनाया।

- उन सभी महान विचारकों एवं दार्शनिकों को, जिनके जीवनों, व्यवहारों, पुस्तकों, ओडियों, वीडियों एवं संपूर्ण अस्तित्व ने मुझे, उन्हें एक मापदंड न

मानकर एक ऐसे मील के पत्थर के रूप में देखने को प्रेरित किया, जहाँ से मेरी यात्रा का आरम्भ अपेक्षित हैं।

- और अंत में मेरी एग्जीक्यूटिव असिस्टेंट नौशीन मर्चेंट को मैं जिनकी योग्यताओं व सहयोगशीलता को आंकने की स्थिति में कभी नहीं रहा। उनके बिना यह पुस्तक बन ही नहीं सकती थी। धन्यवाद नौशीन, आपके निःस्वार्थ समर्पण के लिये, जिससे मेरे सर्वोत्तम कार्यों का सम्पादन हो पाया। धन्यवाद, मेरे साथ यह पुस्तक लिखने के लिये.....................धन्यवाद मेरे विचारों को शब्द देने के लिये।

प्राक्कथन

आज के इस गतिशील एवं द्रुतगामी संसार में मानव जीवन को उर्जावान व उत्साहित रखना और अधिक चुनौतिपूर्ण होता जा रहा है। किसी भी व्यक्ति के लिये कठिन शारीरिक एवं मानसिक अपेक्षाओं के बीच एक संतोषप्रद जीवन जीने का अर्थ है, अपनी योग्यताओं व क्षमताओं के साथ संपूर्ण जीवन का उन्नयन। जीवन के उन्नयन का यह गुण अचानक, अनजाने में या प्रतिक्रिया स्वरुप नहीं मिलता। उन्नयन स्वेच्छा व संपूर्ण चेतनता के साथ किया गया एक प्रयास है।

मैं संतोष को एक दशक से जानता हूँ और सदा ही उनके उत्साह, ऊर्जा व संघर्षपूर्ण जीवन से डटकर मुकाबला करने की उनकी वृति का प्रशंसक रहा हूँ। संतोष की तीव्रता, प्रभावशीलता व उत्साह में निरंतर वृद्धि ही हुई है। मेरी संस्था महिन्द्रा एंड महिन्द्रा के साथ उनकी यात्रा 1998 में आरम्भ हुई और तभी से मैंने उन्हे अपने समूह की विभिन्न कम्पनियों में कार्यरत कई सहकर्मियों को प्रेरित करते देखा है।

जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स पुस्तक जीवन के प्रति उनके उत्साह व जोश का एक सरल व सुबोधपूर्ण वर्णन है। इस पुस्तक में संतोष ने जीवन के हर पक्ष को चुनौती दी है और प्रदर्शित किया है कि उन्होंने स्वंय से उत्कृष्टता कैसे चाही, कठिनाईयों की अवहेलना कैसे की, समाज के मान्य नियमों को कैसे तोड़ा, और कैसे पारंपरिक विचारों को तोड़ कर सदा एक डब्ल्यू. आय. पी. (वर्क इन प्रोग्रेस–कार्यशील व्यक्ति) बने रहे। वे यह भी बताते है कि किस प्रकार कोई भी व्यक्ति इन सरल इलेवन कमांडमेंट्स को अपनाकर अपने जीवन को उन्नयनित कर, एक अद्वितीय जीवन जी सकता है, और व्यक्ति इनका प्रयोग स्वयं के लिये ही नही, अपितु अपने आस–पास के लोगों के जीवन को भी रूपांतरित करने के लिये करता है। किसी भी व्यक्ति के जीवन उन्नयन का अर्थ है उसकी वास्तविक क्षमताओं को बंधनमुक्त करना, अपने निकटवर्ती संसार को श्रेष्ठतम बनाना और इस बात का ध्यान रखना कि आपकी उपस्थिति एक प्रवर्धक के प्रभाव की रचना करे। अपनी क्षमताओं के उन्नयन के लिये यह अनिवार्य है कि आप स्व–संविधान से प्रेरित हो, आत्मविश्वासी हो, स्वायत्त हों और बाहरी शक्तियों द्वारा संचालित न हों। उपलब्ध संसाधनों में से प्रत्येक का उपयोग करते हुए, अन्य लोगों की ऊर्जा व चमत्कारिक प्रभावशीलता को अंगीकार करते हुए; उनका अध्ययन करते हुए उनसे कुछ सीखते हुए; जीवन की अनअपेक्षित स्थितियों के बावजूद, अपने ध्येय व महत्वाकांक्षाओं पर ध्यान

केंद्रित रखते हुए; आपको चारों ओर से घेरे हुए व भावनात्मक रूप से क्षीण करने वाले विकर्षणों पर से, प्रयत्नपूर्वक ध्यान हटाते हुए ही आप सर्वाधिक परिणाम दे पायेंगे और अपनी पूरी क्षमताओं को चरितार्थ कर पायेगें।

संतोष चीज़ों को अलग तरीके से करने, यथास्थिति को चुनौती देने व आवश्यकता न होने पर भी नये प्रयोग करने के महत्व पर भी ज़ोर देते हैं। अपने व्यवसाय या करियर के उत्कर्ष पर जब सब कुछ ठीक चल रहा हो, जीवन स्थिर हो, और उत्पादन अपने चरम पर हो, तब नये प्रयोग करना, नवविचार लाना और चल रहे कार्य में हलचल खड़ी करना एक बहुत चुनौतीपूर्ण कदम होता है। यह विश्वास कि भविष्य, भूत का ही विस्तार है, बड़ी सम्भावनाओं को सीमित कर देता है।

अत: जीवन उन्नयन के लिये व्यक्ति में निरंतर उन्नत (राइज) होने व अन्यों को उन्नत करने की तीव्र इच्छा होना अनिवार्य है। एक बार ये विचार व शब्द यदि हमारे कार्यों में परिवर्तित हो जायें, तो हमारे लिए सम्भावनाओं के अंतहीन द्वार खुल जाते हैं। महिन्द्रा समूह ने उन्नत (राइज़) होने के इस दर्शन को अपना कर ऐसे समाधान विकसित किये जिनसे गतिशीलता को शक्ति मिली, ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्नता बढ़ी और लोगों के जीवन जीने के तरीकों में सुधार आया। उन्नत होने (राइज़) के इस दर्शन का सार संतोष के दर्शन की प्रतिध्वनि है और आप इसका उल्लेख इस पुस्तक में कई बार पायेंगे।

यह पुस्तक मानवीयता के प्रति उपयुक्त श्रद्धांजलि है और हर उस व्यक्ति के लिये पढ़ने योग्य है जो जीवन उन्नयनित करना चाहता है।

डॉ. पवन गोयनका,

प्रेजिडेंट

ऑटोमोटिव एंड फार्म इक्विपमेंट सेक्टर्स

महिन्द्रा एंड महिन्द्रा लिमिटेड

प्रस्तावना

मैंने अब तक विभिन्न विषयों पर सैकड़ो कार्यक्रम किये हैं किन्तु जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स अविवादित रूप से सर्वश्रेष्ठ है– यह मुझे सर्वाधिक प्रिय भी है क्योंकि इसमें मेरे पूरे जीवन का निचोड़ समाहित है, और मेरे जीवन की सबसे बढ़िया, मूलभूत एवं जीवन रूपांतरित करने वाली शिक्षाएं एवं अनुभव जिनका संकलन मैंने पिछले 29 वर्षों के दौरान एक सेल्समैन, सेल्स मैनेजर, सेल्सलीडर, एक प्रशिक्षक, सलाहकार, शिक्षक, परामर्शदाता, सामर्थ्य–प्रवर्धक, और फिर क्रमशः उन्नत होते हुए भारत के जाने माने व सम्मानित सेल्स, आत्मविश्वास, मोटीवेशन गुरू, एक उद्यमिता शिक्षक व स्वयं एक उद्यमी होते हुए किया है। यह पुस्तक इस अमूल्य कार्यक्रम की पांडुलिपी है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक की विषय–वस्तु आपके जीवन उन्नयन में उतनी ही सहायक होगी, जितनी मेरे हुई।

चेतावनी

यह पुस्तक केवल उनके लिये है जो जीना, सीखना, प्रेम करना व अपने पीछे एक वसीयत छोड़ना चाहते हैं।

यह पुस्तक साधारण मनुष्यों व कमजोर दिलवालों के लिये नहीं है, अपितु उनके लिये है जो सामान्य हैं किन्तु असामान्य होने की हिम्मत रखते हैं और इस असामान्यता की कीमत चुकाने को भी तैयार हैं।

सार्थक जीवन.....एक परिचय

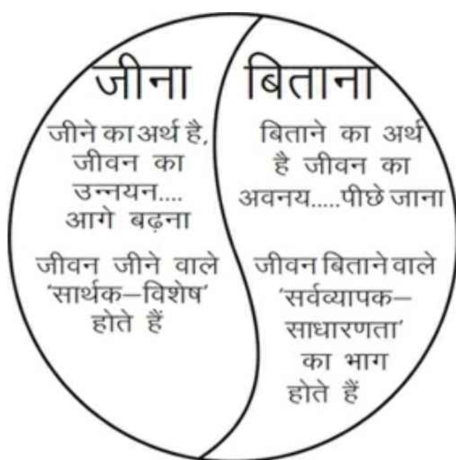
उन्नयनित व सार्थक होना ही जीवन है अन्यथा आपका जीवन एक निरर्थक यात्रा से अधिक कुछ नहीं।

मैं जीवन में दो प्रकार के लोगों से मिला हूँ.... पहले वे जो इस दुनिया में आये और चले गये, लेकिन उनके अपने परिवार, निजी मित्रों और सहकर्मियों के अतिरिक्त किसी अन्य को उनके अस्तित्व का भान तक न हुआ। ये वे लोग हैं, जिनके इस पृथ्वी पर आने और चले जाने से संसार में कोई बदलाव नहीं आया। ऐसा व्यक्ति एक साधारण मनुष्य होता है, चाहे वह एक पुत्र हो या पुत्री, एक पति हो या पत्नि अथवा माता या पिता। वह एक आम कामकाजी व्यक्ति होता हैं, जिसके विचार, जीवन व जीवन जीने का तरीका भी साधारण ही होते हैं। वे स्वयं को एक आम आदमी के रूप में ही देखते हैं और उनका वर्तमान और भविष्य भी आम मनुष्य का ही होता है। इस साधारण वृत्ति के साथ एक सीमित सुख–वृत में व्यतीत होते उनके जीवन से उनके निजी साथी व निकट का वातावरण भी प्रभावित नहीं होते। यदि जिग जिगलर के शब्दों में कहूँ, तो मैं इन मनुष्यों को 'सर्वव्यापक–साधारणता' का नाम दूंगा। ऐसे लोग साधारण मनुष्यों की व्यापक भीड़ का हिस्सा बने रहते हैं और इसी रूप में अपना पूरा जीवन बिता देते हैं।

दूसरी श्रेणी में आने वाले लोग प्रथम श्रेणी वाले इन व्यक्तियों से एकदम विपरीत होते हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने भीड़ से ऊपर उठकर अपने जीवन में महान काम किये है और दुनिया पर अमिट छाप छोड़ी है। अपने उद्योगों, समाज या मानवता को उनका योगदान अतुलनीय है। फिर चाहे वह ए आर रहमान हों या बाबा आम्टे (जिन्होंने कुष्ठ रोगियों के लिये आश्रय स्थल बनाया) मार्टिन लूथर किंग, स्टीव जॉब्स (एप्पल कंपनी) नेल्सन मन्डेला या अन्य।

इन व्यक्तियों को इनके सार्थक जीवन, बलिदानों, भोगे गए दुःख व आघातों, साहसिक फैसलों, कदम–कदम पर मिलने वाली चुनौतियों व अंतहीन विरोध का सामना करने, तथा अपने जज्बे, संघर्ष, जोश और मन्तव्य के प्रति जुनून व नकारात्मक परिस्थितियों में न टूटने के लिये जाना जाता है। इस परिचय के अभाव में नेल्सन मन्डेला के जीवन को समझना कठिन होगा जिन्होंने अपने जीवन के 26 वर्ष रंगभेद की नीति का विरोध करते हुए जेल में बिता दिए।

छब्बीस वर्षों की सजा किसी भी व्यक्ति की अपने मन्तव्य के लिए संघर्ष तो क्या जीने की इच्छा भी समाप्त करने के लिए काफी है। ये सभी उस दूसरी श्रेणी में आने वाले लोग हैं जिन्हें हम 'विशिष्ट सार्थक' का नाम दे सकते हैं। ये वे लोग हैं जो लम्बे समय से निरंतर, एक आर्दश नायक का असाधारण जीवन जी रहे हैं, उनके विचार, शब्द, कार्य व क्रियाएँ एक साधारण व्यक्ति के लिये उदाहरण है और वह उनका अनुसरण करता है। उनकी उपस्थिति एक उत्सव का कारण बन जाती है और अनुपस्थिति ऐसा शून्य बन जाती है जिसकी पूर्ती कोई अन्य व्यक्ति संपूर्ण जीवन में भी नहीं कर सकता। इस श्रेणी में आने वाले लोगों के जीवन से उनके आसपास रहने वाले व उनसे जुड़े लोगों का जीवन भी प्रभावित होता है और यह प्रभाव उनकी मृत्युपर्यंत भी बना रहता है। ये ऐसे जीवन होते है जो बहुतों के अस्तित्व का कारण बन जाते हैं; उनका जीवन स्वयं उनसे कहीं बड़ा व महान होता है, यह ऐसा जीवन है जिसे दोहराया नहीं जा सकता। इस संसार में लाखों करोड़ों लोग जन्म लेते है, अपना जीवन व्यतीत करते है, और चले जाते है। बहुत कम लोग ऐसे होते है जो जीवन जी कर इस संसार से विदा लेते है।



बहुत कम लोग सार्थक–विशेष की श्रेणी में आते हैं (5 प्रतिशत) अन्यथा अधिकांश जन–जीवन उसी सर्वव्यापक–साधारणता का ही भाग होता है। अत: यहां से हम सर्वव्यापक–साधारणता को आम मनुष्य व सार्थक–विशेष को सार्थक–जीवन के नामों से संबोधित करेंगे।

बचपन में हम सभी अमिताभ बच्चन, नील आर्मस्ट्रांग, बिल गेट्स (माइक्रोसॉफ्ट), बनना चाहते थे, या दूसरे शब्दों में कहें तो हम सार्थक–विशेष लोगों के समूह का हिस्सा होना चाहते थे। लेकिन जैसे–जैसे हम बड़े हुए, दैनिक जीवन की बढ़ती कठिनाइयों व बढ़ती उलझनों ने हमें अपने जीवन के ध्येय को पाने का मौका नहीं दिया। और हम सर्वव्यापक–साधारणता का हिस्सा हो गये।

तो फिर हम कैसे इस श्रेणी से उपर उठ कर स्वयं को इस सार्थक-विशेषों के समूह का हिस्सा बनायें? वह क्या है जो इस 5 प्रतिशत जनसंख्या को भीड़ से अलग कर के एक विशिष्टता प्रदान करता है?

मैंने एक सार्थक-विशिष्ट होने का निर्णय 4 ऑक्टोबर 1985 को लिया। यह वह दिन था जब मैंने एक सेल्समैन के रूप में यूरेका फोर्बस् में काम करना आरम्भ किया। तभी से मैं अपने जीवन को एक सार्थक-जीवन बनाने की प्रक्रिया में हूँ। पिछले 29 वर्षों की इस प्रक्रिया में मैंने एक चीज़ अनुभव की है।

निर्णय लेने वाल़े.....

वे लोग जो एक सार्थक-विशिष्ट होने का निर्णय ले लेते हैं.... जाने अनजाने में सार्थक उन्नयनित जीवन जीने की कला का अभ्यास आरंभ कर देते हैं।

जीवन का उन्नयन / सार्थक जीवन क्या है?

जीवन एक ईश्वर प्रदत्त भेंट है। हम सभी को आज से 20, 30, 40, 50, या 60 वर्ष पूर्व यह भेंट प्राप्त हुई है। अधिकांश लोग अपने पूरे जीवन में, अपनी क्षमता का केवल 5 प्रतिशत ही उपयोग में ला पाते हैं। उनकी वास्तविक क्षमता, योग्यता, तीव्र इच्छाओं, शक्ति व जीवन के वास्तविक उद्देश्य का 95 प्रतिशत अनछुआ ही रह जाता है। उनके अनहद् नाद को ध्वनि व सुर मिलने से पहले ही उनका जीवन समाप्त हो जाता है। जीवन रुपी इस भेंट का सही उपयोग, जीवन को उसकी चरम सीमा तक उन्नयनित करना ही है और यही प्रक्रिया नारायण मूर्ति, सरदार वल्लभ भाई पटेल, इला भट्ट, (सेवा- सेल्फ एम्प्लॉईड विमेन्स असोसिएशन की रीढ़), आमिर खान, पीटर ड्रकर, जॉन डी. रॉकफैलर, बैंजामिन फ्रैंकलिन, विंस्टन चर्चिल, थॉमस जैफरसन, जॉर्ज वॉशिंग्टन, वॉल्ट डिस्नी, एल्बर्ट आइन्स्टीन, जॉन एफ. कैनेडी, हैलन कीलर, हेनरी फोर्ड (फोर्ड मोटर्स), सैम वॉल्टन (वॉल मार्ट), रे क्रॉक (मैक डॉनल्डस्) व इन्ही तरह के कई अन्य, ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपनी योग्यताओं की चिर सीमाओं को खोजा और अपने जीवन को सार्थक बनाया। ये सभी लोग आयु व समय की सभी सीमाओं से परे हैं और यही इन्हें सार्थक-विशिष्ट व्यक्तियों के समूह का हिस्सा बनाता है।

एक सार्थक-जीवन को आगे बढ़ाने वाले विचार व इन विचारों को गति देने वाला दर्शन और अधिक स्पष्ट होता जायेगा, ज्यों-ज्यों हम सार्थक-जीवन की परिभाषा की ओर बढ़ेंगे।

पिछले 29 वर्षों में 200 से अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनियों को दिये प्रशिक्षण के अपने व्यापक व विविध अनुभवों के निचोड़ से मैंने यह परिभाषा तैयार की है। इस प्रशिक्षण ने 12.5 लाख व्यक्तियों को जीवन में बदलाव लाने में सहायता

की है, इसके अतिरिक्त हज़ारों माइक्रो–मिनि व मध्यम उद्यमी इस प्रशिक्षण के फलस्वरूप पिछले 12 वर्षों से सफलतापूर्वक अपना काम–काज चला रहे हैं।

यह परिभाषा अत्यंत कठिन व प्रबल तो है ही, साथ ही इसमें जीवन का सार भी गर्भित है। सार्थक–जीवन के चमत्कार को अनुभव करने के लिये आवश्यक है कि आप इस परिभाषा को अपने मानस में उतार लें। मैं तो यह सलाह दूंगा कि यदि आप इस परिभाषा को एक गोदने के रूप में अपने शरीर पर धारण नहीं कर सकते तो अपने घर में ऐसी जगह दें कि यह परिभाषा आपके जीवन का अविस्मरणीय भाग हो जाय – चाहें तो आप इसे अपने बाथरूम में, अपने बिस्तर के पास, फ्रिज पर, टेलीविज़न के निकट या अपने अध्ययन कक्ष में लटका लें।

तो यह है वह अमूल्य परिभाषा,

सार्थक–जीवन एक लम्बी एकाकी प्रक्रिया है जिसमें आपके मौजूदा स्व का निरंतर हनन होता है, आप संभावनाओं से परे हट कर सोचते हैं तथा भावों को क्षय करने वाले व्यवधानों से दूरी बना कर, मौजूदा संसाधनों को अकेले ही उन्नयनित करके अपनी जीवन नैया को मंझधार में ले जाते हैं, ताकि आपका जीवन स्वायत्त, जीवंत, मजबूत इरादों, शब्दों व क्रियाओं से परिपूर्ण एक अग्रणी नायक का अद्वितीय जीवन हो और इस प्रकार का सार्थक–जीवन आप अंतिम सांस तक जी सकें।

चिंता न करें..... व ऐसा न सोचें कि आपकी व्यावसायिक बुद्धि व क्षमता दांव पर लगी है – यदि आपको यह परिभाषा एक बार पढ़ने से समझ में न आये। जैसा मैंने पहले भी कहा, यह एक कठिन व प्रबल परिभाषा है, जो कि पहली बार पढ़ने पर निश्चित ही आपको कहीं अधिक पेचीदा लगेगी। किन्तु कुछ बार पढ़ने के बाद आप इस परिभाषा में उन महान लोगों की झलक पा सकेंगे, जिनकी चर्चा मैंने पहले की है।

1995 में अपने सार्थक–जीवन की यात्रा प्रारम्भ करते हुए जब मैंने इन महान प्रतिभाओं के जीवन पर दृष्टि डाली तो पाया कि इन व्यक्तियों की रचना ही कुछ अलग है। इस नस्ल के लोगों के क्रिया–कलापों में कुछ ऐसा था जिससे मैंने जाना कि:

उनकी तंत्र रचना विशिष्ट थी,

ये निर्देशित थे।

और आज, जब मैंने यह पुस्तक लिखना आरम्भ किया तो मैंने जाना कि,

ये सभी आंतरिक रूप से निर्देशित थे।

मैंने इन निर्देशों को कमांडमेंट्स या 'आज्ञाओं' का नाम दिया है जो सार्थक-जीवन की इस राह पर आपका पथ-प्रदर्शन करेंगी।

जरा रुकिये.... क्या मैंने अभी-अभी 'कमांडमेंट्स' शब्द का प्रयोग किया? लेकिन क्या कमांडमेंट्स प्रभु द्वारा स्थापित नियम नहीं हैं? यदि हां, तो फिर ये नियम सार्थक-जीवन में कैसे सहायता करते हैं?

वास्तव में 'कमांडमेंट्स' शब्द उन लोगों को तुरंत कुछ याद दिला देता है जो जानते हैं कि 'टेन कमांडमेंट्स' प्रभु द्वारा सीधे मोज़ेस को दिये गये थे तथा इन्होंने इब्रियों को बताया कि उन्हें इस पृथ्वी पर किस प्रकार अपना जीवन जीना चाहिये। लेकिन क्या 'कमांडमेंट्स' मात्र एक धर्म द्वारा अनुमोदित जीने का तरीका है? या हम इसे धर्म के दायरे के बाहर से भी समझ सकते है?

कमांडमेंट्स क्या है?

आक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार, कमांडमेंट्स का अर्थ है,

- प्रभु का विधान
- एक आदेश
- एक अनुदेश
- निदेश
- आज्ञा

.... जो कि व्यवहार या कार्यों को ऐसे उचित आचरण की ओर निदेशित करता है, जिसका धार्मिक होना आवश्यक नहीं है।

बीते दिनों में मैंने ग्यारह अनुदेशों का संकलन किया है, जो मैंने स्वयं को कई वर्षों पहले दिये थे। इन्हीं अनुदेशों, आज्ञाओं, आदेशों व निदेशों के कारण, पिछले 29 वर्षों की मेरी मानव-यात्रा बहुत ही व्यवस्थित व निरंतर उत्थान की ओर बढ़ाने वाली रही है। इसका महत्वपूर्ण कारण रहा है कि मैंने अपने भीतर के परमात्मा को, मुझे इस यात्रा के दौरान निर्देशित करने दिया और मैंने संतोष नायर के विचारों, शब्दों व कार्यों को निर्देशित किया।

मैंने उसे एक आदेश दिया, कुछ कार्य करने के अनुदेश दिये, एक विशेष तरीके से जीवन जीने की आज्ञा दी, और उससे एक प्रतिमान की मांग की। जी हां, उसे आंतरिक रूप से अनुदेशित किया और ये अनुदेश मैंने दिये।

मैं नहीं जानता कि आपने कभी स्वयं को कोई कमांडमेंट्स दिया है; मुझे यह भी नहीं मालूम कि आप भविष्य में स्वयं को कोई कमांडमेंट देने वाले हैं; किन्तु यदि आप ऐसा कुछ करने का निर्णय लेते हैं तो आज ही करें; स्वयं को जीने का, प्रेम का, सीखने का और अपने पीछे एक संपदा छोड़ने का कमांडमेंट देने का सर्वोत्तम दिन आज ही है; बशर्ते आप एक सार्थक-विशेष होना चाहते हैं और सार्थक-जीवन का खेल खेलने के लिये तैयार हैं।

जैसे-जैसे यह पुस्तक आगे बढ़ रही है, मैं आपके सामने 'सार्थक-जीवन के इलेवन कमांडमेंट्स' प्रस्तुत करने वाला हूँ। आप यह इलेवन कमांडमेंट्स स्वयं को देकर अपनी सार्थक-जीवन की यात्रा का शुभारंभ कर सकते हैं। यह रहस्योद्घाटन आपके लिये जीवन का अर्थ व जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण निश्चय ही बदल देगा और यदि आपने इसे गंभीरता से लिया और पूरे मन से इसका पालन किया तो आप जीवन की नई उंचाइयों को छू लेंगे।

इन कमांडमेंट्स की ओर बढ़ते हुए, मैं आपको चेता दूं कि यह यात्रा बहुत कष्टदायक, श्रमसाध्य, चुनौतियों से परिपूर्ण और जीवन से कहीं बड़ी है। मेरा आपसे एकमात्र अनुरोध है कि जैसे-जैसे मैं इन कमांडमेंट्स, अपने निजी अनुभवों, सफलताओं और त्रासदियों पर से पर्दा हटाऊं आप मेरे साथ बने रहें।

मित्रों, यहां मैं आपको यह भी बता दूं कि यह कोई सामान्य पुस्तक नहीं है। यह उन सैकड़ों पुस्तकों से हट कर है, जो आपने अभी तक पढ़ी हैं। यहां हम सार्थक-जीवन की चर्चा कर रहे हैं; अर्थात, ऐसा जीवन जिसे जीने के लिये आपको अन्यथा 40 जीवन जीने होंगें। यह ऐसी पुस्तक नहीं है जिसे आप समय बिताने के लिये यात्रा में पढ़ लें, या अपनी आराम कुर्सी में बैठे हुए इसके पृष्ट पलट लें या कोई प्रेरणा पाने हेतु आप इसका कुछ हिस्सा भोजन से पहले पढ़ लें। इस पुस्तक की विषय-वस्तु इन सभी से कहीं अधिक गंभीर है।

इस पुस्तक को आप एक बैठक में पढ़कर इसमें समाहित 29 वर्षों के ज्ञान को समझ लेने व आत्मसात कर लेने का प्रयास एक मूर्खतापूर्ण कार्य होगा। यदि आप इस पुस्तक का वास्तविक प्रभाव देखना चाहते हैं और इसके सार को अपने मानस में उतारना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि आप इसकी विषय-वस्तु को पूर्ण रूप से आत्मसात करें और इसका एक ही तरीका है कि आप इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द को समुचित समय व ध्यान देकर पढ़ें व समझें, तभी अगले शब्द पर जायें।

अत: मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस पुस्तक को एक बैठक में न पढ़ें। इसका एक-एक अध्याय पढ़ें, उस पर कुछ क्षण के लिये मंथन करें, विचार करें, विवेचना करें व यह प्रतिज्ञा लिख लें कि प्रत्येक अध्याय व कमांडमेंट को कम से कम तीन बार पढ़ने के बाद ही आप अगले पर जायेंगे।

इस पुस्तक के लिये एक दोसौ पृष्ठों की कॉपी ले लें व उसे 'सार्थक–जीवन हैन्ड–बुक' का नाम दे देगें। प्रत्येक अध्याय पढ़ने के 24 घंटों के अंदर, जो भी आपने सीखा वह इस हैन्डबुक में लिख लें। प्रत्येक अध्याय में कुछ अमल योग्य क्रियाएं सुझाई गयी हैं; उन पर कार्य तभी आरंभ करें जब आपने तीन बार हर अध्याय पढ़ लिया है और उस से आपने जो सीखा उसे हैन्डबुक में लिख लिया है।

सार्थक–जीवन की इस यात्रा के दौरान आपका संतोष नायर की दुनिया में स्वागत है।

कमांडमेंट 1

अपने अवसान की तिथि की घोषणा

सदा किसी कार्य में संलग्न रहें,
अन्यथा आपका अहंकार मज़बूत हो जायेगा
व आपको लगेगा कि आपने अपना गंतव्य पा लिया है।
इसी क्षण से आपकी प्रगति रुक जायेगी।

आप शायद आश्चर्य करें कि सार्थक–जीवन के संदर्भ में 'अवसान–तिथि' की क्या भूमिका है। जिस प्रकार दवाइयों की 'बेस्ट–बिफोर' तिथि होती है; उसी प्रकार क्या 'अवसान–तिथि' वह दिन है जब तक आप इस ग्रह पर रहने वाले हैं या जिस दिन तक काम करते रहने का निर्णय लिया है? अवसान–तिथि से मेरा तात्पर्य कुछ और ही है।

अभी तक आप एक विशेष तरीके से अपना कार्य कर रहे होंगे; अपनी टीमों के प्रबंधन का आपका अपना तरीका होगा। लोगों का इन्टरव्यू लेने की शैली आपकी अपनी हो सकती है; अपने बच्चों/जीवन–साथी, अपने बॉस/सहकर्मियों के प्रति आपका व्यवहार भी विशिष्ट होगा; आप किसी खास बाज़ार में काम करते होंगे या आप अपना व्यवसाय भी किसी खास व्यावसायिक प्रतिरूप के अनुरूप चलाते होंगे। अब तक आप जिस भी क्रिया का अभ्यास करते रहे हों, वह आपका नियमित व्यवहार बन जाती है, और आपको उसका प्रतिफल भी मिलता रहता है। यदि आप आज भी उसी नियमित व्यवहार का प्रयोग करते रहे तो बेहतर प्रतिफल आपकी पहुंच से दूर हो जायेंगे। सच्चाई तो यह है कि बेहतर तो क्या, आप अपना अपेक्षित प्रतिफल भी नहीं पा पायेंगे; क्योंकि निरंतर अभ्यास से निखारे गये उस व्यवहार की प्रासंगिकता आज समाप्त हो गयी है।

अवसान तिथि उस तिथि की ओर संकेत करती है जिस पर आपके मौजूदा स्व, कार्यशैली या व्यवहार का अवसान हो जाता है; जिससे कि आप उन्नत हो कर अगले स्तर तक पहुंच सकें।

यदि आप कोई दवा उसकी बेस्ट–बिफोर तिथि के बाद में लेते हैं तो क्या होगा? या तो वह प्रभावहीन रहेगी या फिर आपको उसके दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ेगा। इसी प्रकार एक समय के बाद, यदि आप चाल–ढ़ाल बात–चीत, काम करने के तरीके, व्यवहार, वेशभूषा व स्वयं को प्रस्तुत करने के वही पुराने तरीके अपनाये रहते हैं तो उनका प्रभाव भी एक पुरानी दवाई के प्रभाव सा ही होगा – या तो आप प्रभावहीन रहेंगे और आपको कोई प्रतिफल न मिलेगा या उनके दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे जो कि कहीं अधिक नुकसानदायक होंगे; इनसे आप के आस–पास की स्थिति और अधिक बिगड़ जायेगी और आप शायद न तो कभी अपने निकट की वस्तुओं की प्रकृति को बदल पायें और न ही अपने जीवन को उन्नयनित करके सार्थक कर सकें।

अत: आपको सदा अपने आप से पूछना है कि 'मैं ऐसा पैरासिटामॉल कैसे बन गया, जिससे बुखार काबू में नहीं आता? क्या मैं ऐसा एंटीबायोटिक हूँ जो

कि रोग का इलाज न कर सके? क्या मैं ऐसा गिटार बन गया हूँ जिससे इच्छित धुन नही बज पाती? क्या मैं गुलाब का बासी फूल हूँ, जिसमें कोई खुशबू नहीं है? यदि आपका उत्तर हां है तो जान लें कि आपके ऊपर उठ कर अगले स्तर तक जाने का समय आ गया है। और जिस भी दिन आप जीवन में ऊपर उठना चाहें, उस तिथि को अपनी अवसान की तिथि के रूप में घोषित कर दें।

समय-समय पर नियमित रूप से स्वयं को मिटायें और ऊपर उठें। एक नये, भिन्न व बेहतर व्यक्ति के रूप में उभरें।

यदि हम निरंतर अपने मौजूदा स्व को समाप्त कर अगले स्तर तक उठने वाले व्यक्तियों के बारे में सोचें तो प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान का नाम सहज ही एक प्रत्यक्ष एवं जीवंत उदाहरण के रुप में सामने आता है। फिल्म इंडस्ट्री में इस अभिनेता को नवीनता व रचनात्मकता का बादशाह माना जाता है। फिल्म 'कयामत से कयामत तक' में अपनी एक चॉकलेट-बॉय की छवि से हट कर, फिल्म 'दिल चाहता हैं' का 'कूल-ड्यूड-मित्र' और उसके बाद फिल्म 'लगान' का ग्रामीण युवक जो अन्यायपूर्वक लगाए कर के खिलाफ़ विद्रोह करता है या फिल्म 'तारे ज़मीं पर' में एक परिपक्व शिक्षक की भूमिका हो या फिर फिल्म 'थ्री इडियट्स' में मौलिक व बिंदास विद्यार्थी का रूप; और फिर फिल्म 'गज़नी' का आक्रामक नायक या 'सत्यमेव जयते' का साहसी टॉक-शो होस्ट – उन्होंने हर बार अपने नये रूप से दर्शकों को चौंकाया है और इसीलिये उन्हें अद्वितीय कलाकार माना जाता है।

सार्थक-जीवन की राह पर चलने के लिये अपने मौजूदा स्व को समाप्त कर उसमें समय-समय पर नवीनता लाना, आवश्यक ही नहीं अनिवार्य व वांछित भी है।

निर्णय एवं घोषणा

अपने मौजूदा स्व को समाप्त कर देने के फैसले की घोषणा करना भी महत्वपूर्ण है। लोग अपने मौजूदा स्व की समाप्ति का निर्णय तो ले लेते हैं किंतु उसको सार्वजनिक रूप से घोषित करने से बचते हैं। जीवन में सार्थकता तभी आ पाती है, जब आप अपने निर्णय की सार्वजनिक घोषणा करते हैं।

आप पूछ सकते हैं कि इसकी घोषणा क्यों आवश्यक है? इसका उत्तर जानने के लिये हम एक सिद्धांत की ओर चलते हैं!

व्यक्तिगत दबाव वि. सार्वजनिक दबाव

जब आप दुनिया को यह बता देते हैं कि आपके मौजूदा स्व का समापन होने जा रहा है और आपके काम करने के तरीकों में बदलाव आने वाला है, तो आप अपने सार्थक–जीवन की यात्रा में अगले पायदान पर पहुंच जाते हैं – चूंकि इस स्थिति में आपके पास कोई विकल्प नहीं होता और आपको यह कार्य करना ही होता है। अब जब आपने अपना इरादा जग–जाहिर कर दिया है तो आप अपनी प्रतिबद्धता से पीछे नहीं हट सकते। और यदि आप इसे कार्यान्वित नहीं करते हैं तो आप लोगों के उपहास का पात्र बन जायेंगे। अत: आपको सार्वजनिक दबाव के चलते स्वयं को बदलना पड़ता है।

उदाहरण के लिये, एक दिन आप यह निर्णय लेते हैं कि अब से आप मराठी के नहीं बल्कि सिर्फ अंग्रेज़ी ही में बोलेंगे। लेकिन आप किसी को इस निर्णय से अवगत नहीं कराते हैं। इस स्थिति में आप ऐसी कई परिस्थितियों, जैसे कि एक आवश्यक कार्य, फैक्ट्री में अचानक आ खड़ी समस्या या कोई पारिवारिक दु:ख को बढ़ावा दे देते हैं, जो आपके द्वारा निर्धारित दिन से पहले ही आपको विचलित कर अपने निर्णय टालने पर मज़बूर कर देती है। आपके उपर अपने निर्णय पर अमल करने का कोई नैतिक दबाव नहीं होता है और तय की गयी तिथि को टाल देने का विकल्प हमेशा आपके पास रहता है, आखिरकार, आप किसी को जवाबदेह नहीं हैं।

अब कल्पना कीजिये कि आपने एक दिन विशेष से मराठी छोड़ कर अंग्रेजी में बोलने का निर्णय लिया और इस निर्णय की घोषणा भी कर दी। अब आपको चाहे कितनी ही गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़े, आपको अपनी प्रतिबद्धता को निभाना होगा। चूंकि अब आप लोगों के प्रति जवाबदेह हैं, और यदि नहीं तो आपसे प्रश्न पूछे जायेंगे और अपनी बात से पीछे हट जाने पर आपका उपहास भी किया जायेगा। यह बाहरी दबाव आपको अपने निर्णय को क्रियान्वित करने के लिये प्रेरित करता है और इस तरह आप सार्थक–जीवन के अगले पायदान पर पहुंच जाते हैं।

सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले सभी व्यक्तियों ने अपना जीवन जीया तथा उससे प्रेम करते हुए निरंतर कुछ न कुछ सीखा, व एक विरासत छोड़ी; यह तभी संभव हो पाया जब उन्होंने अपने इरादों को जगजाहिर किया।

फिर भी कई लोग अपने निर्णयों को सार्वजनिक करने से कतराते हैं क्योंकि उनके लिये सार्वजनिक दबाव के कष्ट को निरंतर सहन करना संभव नहीं है; और इसी कारण वे अपने गंतव्य तक पहुंचने में असफल रहते हैं।

यदि एक बार आपने अपने निर्णय की घोषणा कर दी तो आपके लिये अपने मौजूदा स्व का समापन करना अनिवार्य हो जाता है – क्योंकि आपके पास कोई अन्य विकल्प नहीं रहता।

आप जिन वस्तुओं अथवा कार्यों का समापन करना चाहते हैं उन्हें नीचे दी गयी तालिका में सूचिबद्ध करें। उनके समापन की तारीख व प्रक्रिया भी लिखें और इसकी सार्वजनिक घोषणा करें।

समापन योग्य वस्तुएं	समापन की तिथि	घोषणा की प्रक्रिया

बुद्धि बनाम बुद्धिमत्ता

स्व-समापन की इस प्रक्रिया के दो महत्वपूर्ण अंग हैं – बुद्धि एवं बुद्धिमत्ता। किसी विषय विशेष को समझना बुद्धि का परिचायक है, जैसे, आप समझते हैं कि किसी वस्तु को कैसे बेचा जाय। किंतु बुद्धिमत्ता तब प्रकट होती है जब आप इस ज्ञान का प्रयोग अपने जीवन में करते हुए उसमें दक्षता हासिल कर लेते हैं। जैसे कि आपने विक्रयकला में दक्षता पा ली है। बुद्धि का अर्थ है ज्ञान या जानना; जबकि बुद्धिमत्ता का अभिप्राय इस ज्ञान के उपयोग से है। यह उपयोग या क्रियान्वन बार-बार किया जाना होता है, इस उपयोग में ज्ञान के साथ विभिन्न प्रयोग करना, उनमें नवीनता लाना व उन्हें सुधारना निहित है। यह क्रिया तब तक दोहराई जाती है जब तक कि आप इसमें इतनी दक्षता न पा लें कि इस ज्ञान के उपयोग के क्षेत्र में परिणाम की गारंटी दे सकें, और यही आपकी बुद्धिमत्ता का द्योतक है।

क्या लोग इस बात से अनजान हैं कि उन्हें सुबह जल्दी उठना चाहिये, सैर पर जाना चाहिये, कुछ समय व्यायाम करना चाहिये, अपना ज्ञान बढ़ाने के लिये पुस्तकें पढ़नी चाहिये, बिज़नेस साल-दर-साल बढ़ना चाहिये, चिन्ता नहीं करनी चाहिये। लेकिन क्या प्रत्येक व्यक्ति ये सब करता है।

अपने आप को मंद बुद्धि वाला व्यक्ति न समझें, यदि आप भी ऐसा ही कुछ करते हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, प्रश्न बुद्धि का नहीं बल्कि बुद्धिमत्ता

का है। सभी व्यक्तियों के पास करीब-करीब एक सी बुद्धि होती है, लेकिन इस जीवन यात्रा में कुछ ही आगे बढ़ पाते हैं; अधिकांश लोग इसी बात पर मंथन करते रहते हैं कि 'वे' क्यों, और 'हम' क्यों नहीं? इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही सीधा है – वे लोग जीवन में आगे बढ़ जाते हैं जो बुद्धिमत्ता से काम लेते हैं; और शेष मात्र अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए अपने कार्य संपादित करते रहते हैं।

बुद्धि एवं बुद्धिमत्ता- ये दो शब्द मुझे भारतीय क्रिकेट के दो जाने-माने नामों की याद दिलाते हैं- सचिन तेन्डुलकर, जो कि भारत के सर्वाधिक प्रिय बल्लेबाज हैं और विनोद कांबली, जो शायद सचिन के सबसे प्रबल प्रतिस्पर्धी होते, किन्तु वे क्रिकेट की दुनिया में मात्र एक मेहमान भूमिका निभा कर चले गये। इन दोनों ने एक साथ, एक से जोशो-खरोश से क्रिकेट के खेल में पदार्पण किया था। प्रतिभा और खेल की समझ के मामले में काम्बली तेन्डुलकर से कहीं आगे थे। किन्तु एक बुद्धिमान खिलाड़ी जैसे आगे नहीं बढ़ पाये, जबकि सचिन अपनी बुद्धिमत्ता से आगे बढ़े और पिछले 24 वर्षों से लगातार अग्रणी खिलाड़ियों की श्रेणी में हैं।

जीवन की त्रासदी है कि बुढ़ापा जल्दी आता है और अकल देर से

– बैंजामिन फ्रैंकलिन

स्वयं को इस त्रासदी से बचायें। बुद्धि से परे जाकर सोचने व समझदार बनने के लिये अपने मौजूदा स्व का निरंतर हनन अतिआवश्यक है; क्योंकि आप बुद्धिमत्ता या समझदारी तभी पा सकेंगे जब आपने स्वयं को सार्थक-जीवन के अगले स्तर तक उन्नत कर लिया है।

बुद्धिमत्ता के निर्माण की प्रक्रिया

अब तक की चर्चा में हमने यह तो कह दिया कि सार्थक जीवन तभी सम्भव है, जब हम अपने कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पादित करें। लेकिन अगला प्रश्न है कि बुद्धिमत्ता पायें कैसे; सर्व प्रथम हम यह समझ लें कि बुद्धिमत्ता कोई बाहरी तत्व नहीं है जिसे प्राप्त किया जाना है। यह आपके आंतरिक गुणों में से एक है और इसका निर्माण भी आपके भीतर ही करना होता है इसी प्रक्रिया को बुद्धिमत्ता के निर्माण की प्रक्रिया कहते हैं।



बुद्धिमत्ता निर्माण की प्रक्रिया के चार चरण हैं–

1. डेटा
2. जानकारी
3. ज्ञान
4. बुद्धिमत्ता

चरण 1 – डेटा

पुस्तकों, ऑडियो, वीडियो, मित्रों व प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि से हमें जो भी प्राप्त होता है। वह डेटा है। इस डेटा का 95 प्रतिशत भाग हम 24 घंटे के भीतर ही भूल जाते हैं। तथा 5 प्रतिशत एक हफ्ते में गवां बैठते हैं। जब भी आप विक्रयकला या नेतृत्व के बारे में कोई पुस्तक पढते हैं या कोई ऑडियो बुक सुनते हैं आप को कुछ डेटा प्राप्त होता है यदि इस डेटा को जानकारी में नहीं बदला गया तो यह सदा के लिये खो जाता है।

पढ़ी गई पुस्तक से सतही बदलाव तो अवश्य आते हैं लेकिन अधिकांश लोग इन बदलावों से अभिभूत हो उत्तेजित व प्रसन्न हो उठते हैं। और इसी भावना के साथ उनका व पुस्तकों का संपर्क समाप्त हो जाता है। दूसरी ओर

सार्थक-जीवन के यात्री अपना यह संसर्ग बनाए रखते है और डेटा बदलने की इस प्रक्रिया को पार करते - चरण 1 पर न रुकते - बुद्धिमत्ता निर्माण के अगले चरण की ओर बढ़े चलते हैं; जो कि है जानकारी।

चरण 2 - जानकारी

बुद्धिमत्ता निर्माण की प्रक्रिया का अगला चरण है- डेटा का जानकारी में रूपांतरण। हर व्यक्ति यह कार्य अपने तरीके से करता है। कुछ लोग प्रशिक्षण कार्यक्रम में जो कुछ पाते हैं, उसे रिकार्ड कर लेते हैं। सार्थक-जीवन के कुछ अन्य यात्री यह पूरी प्रक्रिया सैकड़ों बार दोहराते हैं। जिससे उनकी विषय पर पकड़ मज़बूत हो जाये। सम्भव है कि डेटा को जानकारी में बदलने का आपका तरीका कुछ और हो। पिछले 29 वर्षों से, मै जो तरीका अपना रहा हूँ वह है- एकत्रित डेटा की अपनी समझसे विवेचना करना और फिर उसे लिख लेना। मैं प्रत्येक पुस्तक को जिसे पढ़ता हूँ अथवा जिस ऑडियो या वीडियो को देखता हूँ व उस प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम को जिसमें मैं भाग लेता हूँ सौ से अधिक पृष्ठों में कलम बद्ध कर लेता हूँ। इससे मुझे भविष्य में संदर्भ के लिये एक स्पष्ट व लिखित रूपरेखा मिल जाती है। अधिक सें अधिक डेटा का संचय व उसका जानकारी में रूपांतरण आपके मौजूदा स्व का हनन करता है। व आपको अगले स्तर तक उन्नत कर देता है। जी हाँ यहीं से आपके मौजूदा स्व के समापन व नये स्व के जन्म के निर्माण का आरम्भ होता है।

चरण 3 - ज्ञान

डेटा को जानकारी में बदलने के उपरांत आपको इस जानकारी का दृढता से प्रयोग करना है। जी हाँ जानकारी का नियमित उपयोग ही ज्ञान है। ज्ञान वास्तव में कार्यान्वियन की स्थिति है। ध्यान रखें, अपने निर्णय को क्रियान्वित करने में आप कई बार असफल होंगे। क्योंकि इस दौरान आपका पुराना स्व उभरते हुए नये स्व का विरोध कर द्वंद करने लगता है।

आप बार बार लगातार असफल होते हुए भी दृढ बने रहें। अपनी जानकारी के चरण पर लौटें और एकत्रित संदर्भ को टटोले ताकि आप जान सकें कि आप कहाँ असफल हो रहे हैं और स्वयं को कैसे सुधारा जाए। स्वयं को सुधारने के कई प्रयत्नों के बाद क्रमशः आपकी असफलताओं में कमी आने लगती है; जैसा कि उपर दिये चित्र में दर्शाया गया है। और आप अतः पहली बार सफलता का स्वाद चख लेते हैं। यह वह स्थिति है जहाँ से आप ज्ञान से एक चरण उपर उठ कर इस प्रक्रिया के अंतिम चरण पर पहुँच जाते हैं।

चरण 4 – बुद्धिमत्ता

नियमित प्रयत्न के बाद आप नवीन क्रियाओं को सही प्रकार से करने में सफल तो हो जाते हैं किन्तु विफलताओं का चक्र पुन: आरम्भ हो सकता है। असफलता के बार बार सफलता में परिवर्तित होने से सफलताओं का आकार व महत्व बढ़ने लगता हैं और अन्त में, यहीं पर ज्ञान बुद्धिमत्ता में परिवर्तित हो जाता है।

इस स्तर पर आपको ठीक–ठाक पता होता है कि करना क्या है; एक कठिन परिस्थिति में जीने के लिये किन गुणों की आवश्यकता होगी; एक जाने माने झूठे के साथ कैसा व्यवहार करना है; और उसे एक सच्चे व्यक्ति में कैसे बदलना है; आदि। इस चरण पर आपने कई क्षेत्रों के लियें बुद्धिमत्ता का निर्माण कर लिया है। एक बार निर्मित हो जाने पर बुद्धिमत्ता सदा आपके साथ रहती है और आपने जिस विषय पर बुद्धिमत्ता हासिल की है; आप उस विषय के ज्ञाता कहलाते है। यहाँ मुझे एक घटना याद आती है; जब मैने पहली बार डॉन बैवेरेज के एक कार्यक्रम में भाग लिया था। उस कार्यक्रम में इस विश्व प्रसिद्ध लाइफ कोच का कहा एक–एक शब्द मैंने नोट कर लिया था। इसके साथ ही मैंने उन नोट्स की व्याख्या भी लिख ली थी। इस प्रकार मैंने अपने डेटा को जानकारी में परिवर्तित कर लिया था। मैंने केवल वही नहीं लिखा था जो मैं समझता था अपितु मैंने यह भी लिखा कि मैंने इनसे क्या सीखा और मुझे उससे क्या लाभ मिल सकता है। जब मैं इस डेटा को जानकारी में बदल रहा था तो मैंने स्वयं को कमांडमेंट दिया कि मैंने आज जो भी सीखा है उसें मैं अध्याय–दर–अध्याय कार्यान्वित करूँगा। साथ ही मैंने इस लक्ष्य प्राप्ति के क्रियान्वयन की एक रुपरेखा भी तैयार कर ली। मैने एक नोट बुक भी खरीद ली और फिर अपने नोट्स की सहायता लेते हुए हर सीख को अपने अवचेतन में उतार लिया। आज 20 वर्षों बाद मैं पूरे गर्व और उत्साह से कह सकता हूँ कि मैंने पुस्तक में दिये प्रत्येक शब्द का अभ्यास किया।

सन् 1990 में मैंने एक कार्यक्रम में भाग लिया था। जिसका नाम था LIFE–Living in Freedom and Enquiry अर्थात स्वतंत्र एवं उत्सुक हो कर जीना। इसी कार्यक्रम से जुड़ा सात दिन का एक और कार्यक्रम था। The Existential Laboratory इस कार्यक्रम के संचालक थे स्वामी सुखबोधानंद व इस कार्यक्रम के दौरान हम एक हरे भरे जंगल में एक तम्बू में रहे जहाँ रात को बिजली की भी व्यवस्था नहीं थी। प्रतिभागियों को एक नियमित समय पर सो जाने का सख्त आदेश था। मैने कार्यक्रम का यह नियम तोड़ा और स्वंय को चादर से ढ़क कर रात को घंटों अपने नोट्स बनाये। इस प्रकार पूरे दिन की कार्यशाला में प्राप्त हुए डेटा को मैंने जानकारी में बदला और आज वे सभी चीजें मेरी बुद्धिमत्ता का हिस्सा है।

मैंने हर कार्यक्रम के दौरान अपने विचारों को कलम बद्ध किया चाहे वह MILT का लीडरशिप कार्यक्रम हो या अपोरेश आचार्य का MILT सेल्स कोर्स हेल्मट फलैश का डायनेटिक्स का कार्यक्रम या कोई अन्य।

जिग जिगलर की लक्ष्य निर्धारण पर तैयार की गई ऑडियो पुस्तक जो मैंने 1985 में सुनी थी, व अन्य कई किताबें जिनमें टॉम हॉपकिंस, ब्रायन ट्रेसी, जिग जिगलर, डैन सुलिवान की लिखी पुस्तकें शामिल हैं। तथा मेरे पसंदीदा जोल बारकर के ऑडियो और वीडियो; सभी मेरे अध्ययन कक्ष में ढेरों हस्त लिखित कागजों के रूप में मौजूदा हैं; जिनमें मैंने प्रत्येक पढ़ी हुई पुस्तक के बारे में लिखा है। आज ये सभी मेरी बुद्धिमत्ता का भाग है। नीचे दी गई तलिका में लिखें कि उपरोक्त संकल्पना से आपको कौन सी चार सीखें मिलीं।

इन्हें अपने जीवन का स्थायी भाग बनाने हेतु आप क्या करेंगे व इस कार्य की समय सीमा तथा इसके लिये आपको किस सहायता की आवष्यकता होगी यह भी लिखें।

नम्बर	सीखें	इसे जीवन में उतारने के लिये आप क्या करेंगें	आपको किसकी सहायता की आवश्यकता होगी	समय–सीमा
1				
2				
3				
4				

शिक्षा देना, शिक्षा प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका है। आने वाले सप्ताह में हर मिलने वाले व्यक्ति से इस पर चर्चा किजीए और देखिये कि क्या आप 'अपने अवसान की तिथि की घोषणा' इन शब्दों का प्रयोग अपने वार्तालाप में कर पाते हैं।

जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति को बुद्धिमत्ता निर्माण की आवश्यकता है। इसके लिये आप कोई भी क्षेत्र ले सकते है। उदाहरण के लिये :– सेल्स, नेतृत्व, मार्केटिंग, ब्रैंडिंग, टीम का निर्माण, लोगों का प्रबंधन, समय-पालन, व्यवहार,

व्यक्तित्व, वेशभूषा, बोल-चाल आदि। इसके अतिरिक्त आपकी व्यावसायिक व व्यक्तिगत रुचि के सभी क्षेत्र इस प्रकार निर्मित बुद्धिमत्ता से कार्यों का संचालन मौजूदा स्व को समाप्त करने व समय-समय पर उसके नवीकरण की प्रक्रिया को सरल बना देता है। और आपका जीवन उन्नत हो अगले स्तर पर पहुँच जाता है।

अपने जीवन को जीवन-पर्यन्त उन्नयनित व सार्थक रखने के लिये आपको यह आज्ञा, निदेश, आदेश, प्रभु का नियम, यह कमांडमेंट, अपने काम के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रति मिनट देना होगा।

अपने अवसान की तिथी घोषित करें।

कमांडमेंट
2

सम्भावनाओं के विचारक बनें

सम्भावना अज्ञात है।

स म्भावनाओं के विचारक बनें न कि सकारात्मक विचारक।

- संभावना अज्ञात है।
- यह कल्पना, इरादे एवं बोध से परे है।
- यह तात्कालिकता से परे है तथा साथ ही आपके विचारों शब्दों व क्रियाओं से भी परे है।
- सम्भावना अभी किसी भी रूप में उपस्थित नहीं है; चाहे वे विचार हों या परिकल्पना।
- यह एक पूर्ण रूप से नये संसार की रचना है; सम्भावनाओं का संसार।
- यह एक विश्वास है, कुछ ऐसा करने का जो आपने पहले कभी न किया हो, कुछ ऐसा रचना जिसका कभी अस्तित्व न रहा हो।
- संभावना पवित्र है; यही प्रभु है; यही वह वस्तु है, जो संसार को अचंभित कर हतप्रभ कर देती है।

आप एक सकारात्मक विचारक हो सकते हैं। किन्तु जब आपके आसपास की परिस्थियाँ व हालात बदलने लगते हैं तब सकारात्मक सोच रुक जाती है। सकारात्मक विचारक कभी भी जीवन को सार्थक नहीं बना सकते क्योंकि जब सब कुछ उलटने लगता है; स्थितियाँ काबू से बाहर जाने लगती हैं तथा पूरा संसार आपको बीच राह में छोड़ देता है; वे नकारात्मक विचारक बन जाते हैं।

सार्थक-जीवन पाने के लिये आपको संभावनाओं का विचारक होना होगा!

क्या आपने कभी परिकल्पना से परे कुछ करने का प्रयत्न किया है। उदाहरण के लिए, एक साल में अपने व्यवसाय को 500 प्रतिशत बढ़ा लेना एक माह में अपना वजन 20 किलो कम कर लेना, अपने जमे हुए व्यवसाय को रातों-रात दूसरे शहर में ले जाना। क्या ऐसा करते हुए आपको कभी उपहास का सामना करना पड़ा है; यदि नहीं तो आपने अभी तक असम्भव की तलाश नहीं की है।

बल्ब का अविष्कार करते हुए थॉमस एडिसन 10000 बार असफल रहे, किन्तु उन्होंने हार नहीं मानी; नारायण मूर्ति भी इन्फोसिस की स्थापना करने के प्रयासों में कई बार असफल रहे; रे क्रॉक की मैकडानल्ड की कल्पना को 300 से अधिक निवेशकों ने नापसंद कर दिया था। रिटेल व्यवसाय में बिगबाज़ार से क्रान्ति लाने वाले किशोर बियानी को अपने परिवार के ही विरोध का सामना करना पड़ा, वॉल्ट डिस्नी ने जब डिस्नीलैंड की कल्पना लोगों के सामने रखी तो पूरी दुनिया ने उनका उपहास किया, किन्तु इनमें से किसी ने भी अपने इरादे को नहीं छोड़ा बल्कि वे तब तक अपने इरादों पर दृढ़ रहें जब तक कि उन्होंने अपने सपनों को सच्चाई में नहीं बदल दिया। ये सभी सम्भावनाओं के विचारक थे।

आखिर वह क्या चीज़ है; जो सम्भावनाओं के विचारक को आमजन से अलग बनाती हैं? इन दोनों प्रकार के लोगों में अंतर करने वाली मात्र एक ही वस्तु है और वह है सम्भावनाओं के विचारकों का शून्य बाध्यता के सिद्धान्त पर अमल करना – समय, धन व संसाधनों की कमी उनके लिये कोई मायने नहीं रखती और वे अपना कार्य पूर्ण करने के अन्य विकल्प ढूंढ़ लेते हैं, चाहे उन्हें लौकिक या आलौकिक किसी भी प्रकार के बंधन से जूझना पड़े। यह सम्भव है कि अपेक्षित फल की प्राप्ति के लिये आपके पास दुनिया की सबसे अच्छी सुविधाएँ, संसाधन धन व समय न हो। ऐसी परिस्थिति में काम नहीं हो पायेगा की घोषणा कर देना सर्वाधिक सरल होता है। यह सामान्य बुद्धि से प्रेरित कार्यों का सबसे अच्छा उदाहरण है और इसमें व्यक्ति को किसी भी सोच–विचार की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु, इस तरह के बंधनों के साथ अपेक्षित फल पाने के लिये मात्र विवेक या सकारात्मक सोच काफी नहीं होती, वरन व्यक्ति को सम्भावनाओं पर विचार करना होता है और यही उसे सम्भावना–विचारक बना देता है।

उदाहरण के लिये आपको 24 घंटे में एक सीमित बजट व बिना किसी सहायता के एक पार्टी आयोजित करने को कहा जाता है या फिर आपको 1000 युनिट प्रतिदिन निर्मित करने का लक्ष्य दिया जाता है, जब कि अभी तक उस फैक्ट्री में प्रतिदिन मात्र 350 युनिट ही निर्मित हुए हैं। इन परिस्थितियों में व्यक्ति की त्वरित प्रतिक्रिया होगी। यह असम्भव है, मैं यह नहीं कर सकता किन्तु सम्भावना–विचारक यह ढूंढ़ना आरम्भ कर देता है कि यह कार्य कैसे किया जा सकता है, वह इस पर वाद–विवाद नहीं करता कि यह कार्य हो पायेगा या नहीं।

दूसरी ओर हैं, हमारे मध्यमार्गी मित्र जिनके विचार सम्भव–असम्भव नामक ध्रुवों के बीच के होते हैं। अर्थात जब सकारात्मक विचारक का सामना 1000 युनिट जैसी परिस्थिति से होता है, तो वे काम करने को तो तैयार हो जाते हैं किन्तु इस भय से कि कहीं काम देने वाले बुरा न मान जाए; और फिर, वे निम्नलिखित प्रबल कथनों के साथ असम्भव कार्य स्वीकार करने की घोषणा करते है।

1. आइये यथार्थ वादी बनें
2. आइये व्यवावहारिक बनें
3. मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।

यह मध्यमार्गी व्यक्ति अपनी बात कुछ इस तरह आरम्भ करेगा– यह न तो व्यावहारिक है और न ही यर्थाथवादी फिर भी यदि आप कहते हैं, तो मै इसे करने का पूरा प्रयत्न करूँगा। इस संवाद में ही उसने अपनी असफलता का प्रावधान

रख लिया है और विडम्बना यह है कि यह असफलता उन्हें संतोष भी देती है और सर उठाकर खडे रहने की हिम्मत भी– आखिरकार उन्होंने प्रयत्न जो किया।

दूसरी ओर संभावना–विचारक ऐसे किसी कथन का प्रयोग ही नहीं करते। वे काम शुरू कर देते हैं और उसे कर डालते हैं; इसके लिये वे अपनी गहनतम क्षमताओं, योग्यताओं और अपने आसपास के वातावरण व मौजूदा परिस्थितियों की विशिष्टताओं का पूरा दोहन करते हैं। एक कहावत है, कि विपरीत परिस्थितियों में ही मनुष्य का चरित्र उजागर होता है। इस कहावत के अनुरूप 'शून्य–बाध्यता' का सिद्धान्त यह सुनिश्चित करता है कि लोगों को उनकी सीमाओं से परे धकेल कर, उनके सही मूल्य को परख कर, ही साधारण मनुष्यों में से उन्नयनित जीवन रचे जायें। इस प्रक्रिया के अंत में या तो आप उबर आते हैं अन्यथा डूब जाते हैं – अन्य कोई रास्ता नहीं होता।

यदि आपको बिना मेहनत किये ही सब कुछ मिलता रहे तो आपको शून्य–बाध्यता के सिद्धांत के अंतर्गत कार्य करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे सारी दुनिया की दौलत नहीं मिली, क्योंकि इस कमी ने मुझे 29 वर्षों तक बाध्यताओं के साथ काम करने को मजबूर किया और मुझे सम्भावना–विचारक बना दिया।

मुझे याद है आज से 12 वर्ष पूर्व सन् 2000 में जब मैंने अपनी स्वयं की ट्रेनिंग कम्पनी शुरू की तब मेरे पास ऑफिस के लिये भी जगह नहीं थी। मैने अपने एक सहकर्मी के साथ मिलकर – 'स्मार्ट' की शुरूआत अपने पिता के छोटे से घर के बगीचे से की और वहाँ से बढ़ते हुए मैंने इसे आज के स्वरूप तक पहुँचा दिया है। यदि मैंने उस समय धन व संसाधनों के अभाव को अपने ऊपर हावी हो जाने दिया होता, तो शायद 'स्मार्ट' का जन्म नहीं हुआ होता और मैं अभी भी किसी दूसरी कम्पनी के लिये कार्य कर रहा होता।

और, यह कौन कहता है कि आज कोई बंधन नहीं है। जी हाँ बंधन तो आज भी हैं। समय, शरीर, संसाधन व धन के बंधन आज भी हैं और सदा रहेंगे। यद्यपि आज मेरे पास समुचित धन है किन्तु मैंने अपने मन, शरीर, हृदय एवं आत्मा को अपनी अंतिम साँस तक एक सम्भावना–विचारक के रूप में कार्य करने हेतु तैयार किया है। जिससे मैं जीवन में अधिक बड़ी चुनौतियों का सामना कर सकूँगा। न कि अपने अन्य मित्रों व सहकर्मियों की भांति जिनकी उम्र व जीवन मुझ से भिन्न नहीं है। किन्तु धन, सुख–सुविधाओं व संसाधनों के बावजूद उनके जीवन की गति मंद पड़ने लगी है। वे धीरे धीरे नष्ट होने लगे हैं, व विघटन की कगार पर हैं। उन्होंने जीवन में आगे बढ़ना बंद कर दिया है। वे स्वयं को एक निरापद/सुरक्षित क्षेत्र में समेट लेते हैं और उनके जीवन का उन्नयन व सार्थकता उसी क्षण वहीं पर समाप्त हो जाती है। सम्भावना विचारक व्यक्ति का आयु, स्वास्थ्य एवं अर्थिक स्थिति से कोई लेना देना नहीं है। यह एक मानसिक क्रीड़ा है जो मन के

लिये, मन में ही खेली जाती है; यह एक स्थायी तथ्य है जो जीवन के साथ ही समाप्त होता है।

एक प्रशिक्षक के अपने जीवन में, मैं ऐसे कई लोगों से मिला हूँ जिनके लिये व्यायाम, स्वास्थ्य, पढना व अपना ज्ञान बढाना, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना आदि क्रियाऐं बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। और वे उनसे कहीं गहराई में जुड़े होते हैं। किन्तु समय का अभाव उन्हें इन सबसे दूर कर देता है।

एक साधारण मनुष्य के लिये सायंकाल 7 बजे घर पहुँचना, 2 घंटे टी.वी. देखना, परिवार के साथ रात का भोजन करना व 10:30 बजे सो जाना ही आर्दश जीवन है। किन्तु एक सम्भावना–विचारक शाम को घर पहुंचना, समय पर भोजन करना, टेलीविजन देखना, रात को सो जाना, आराम करना जैसे विषयों पर विचार ही नहीं करता है। उन्होंने बहुत प्रयत्न पूर्वक व विचार करने के बाद यह निर्णय लिया होता कि, ये सारी चीजें साधारण मनुष्यों के लिये हैं और यदि उन्हें संसार में अपनी अलग पहचान बनानी है व जीवन को उन्नयनित व सार्थक बनाना हैं, तो जीवन जीने के इस प्रारुप में बदलाव करना होगा। इसके बाद उन्हें कभी समय की कमी नहीं होती चाहे वे कोई पुस्तक पढना चाहें, व्यायाम करना चाहें या फिर किसी प्रशिक्षण कार्यक्रम का लाभ उठाना चाहें। वे सुबह 3 बजे उठकर योगाभ्यास कर सकते हैं, फिर टहलने जा सकते हैं और फिर चौबीस घंटे का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चला सकते हैं। सुबह – शाम, समय से पहले या समय के बाद इन सब से वे अप्रभावित रहते हैं, जब तक कि वे अपना निर्धारित लक्ष्य न पा लें।

हमारी पौराणिक कथाओं–काव्यदंतियों व आज के समाचार पत्रों में भी हमे सम्भावना–विचारकों के बारे मे सुनने को मिलता है। उदाहरण के लिये महाभारत का एकलव्य, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, दादा साहेब फालके एवं मदर टेरेसा।

एकलव्य धनुर्विद्या सीखना चाहता था, किन्तु द्रोणाचार्य उसे सिखाने के लिये तैयार नहीं थे। एकलव्य में मौजूद सम्भावना–विचारक ने गुरु न होते हुए भी उसे हार नहीं मानने दी। उसने धनुर्विद्या सीखने के दूसरे विकल्प खोज लिये और द्रोणाचार्य के शिष्य अर्जून से बेहतर धर्नुधारी बन गया।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने अपनी गरीबी को अपनी महत्वाकांक्षाओं को क्षीण नहीं करने दिया, उन्होंने सडक की रोशनी में बैठकर पढ़ाई की और केवल अपनी योग्यता व ज्ञान के बूते पर भारत के राष्ट्रपति बने।

दादा साहेब फालके ने भारतीय सिनेमा को सबसे बडा योगदान दिया है। एक साधारण परिवार से आये साधारण परिस्थितियों में, अपना छापाखाना चलाने वाले एक साधारण जीवन जीने वाले इस महानायक के जीवन में कुछ असाधारण था जो वह था पहली भारतीय फिल्म बनाना व पूरे भारतीय फिल्म

उद्योग को एक मंच देना। एक तो गरीबी व दूसरे फिल्म बनाने का कोई ज्ञान न होना ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी उनके अंदर के सम्भावना-विचारक ने उन्हें अपने स्वप्न को साकार करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने अपना छापखाना बेच दिया और गंभीर आर्थिक समस्याओं की परवाह किये बिना अपनी पत्नी के गहने गिरवी रखे व इग्लैंड जाकर फिल्म टेक्नॉलाजी की पढाई की, वहाँ से आवश्यक उपकरण खरीदे व भारत लौट कर फिल्म निर्माण आरम्भ किया। जब फिल्म की नायिका के लिये, लोकलाज के कारण से, किसी भी महिला ने कैमरे के सामने आने से मना कर दिया; तो उन्होंने एक रसोईये के लडकी जैसे दिखने वाले सहायक को नायिका की भूमिका दे दी। लेकिन मुख्य कलाकर के अभाव के बावजूद अपने निर्णय को नहीं छोड़ा। इस दौरान अत्यधिक फिल्म देखने के कारण उनकी आंखो की रोशनी करीब-करीब चली गयी उन्हें शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं भावनात्मक कष्ट उठाने पड़े; वे बिल्कुल सड़क पर आ गये। यहाँ तक कि उन्हें अपने घर के बर्तन तक बेचने पड़े। उन्होंने सब कुछ किया सिवा एक काम के .... हिम्मत हारना।

उन पर भारत की पहली चलती-फिरती फिल्म बनाने का जुनून सवार था और उस क्षण में उनके व ईश्वर के बीच कोई नहीं था। उनके विश्वास, जुनून व उद्देश्य ने हमें भारतीय फिल्म इंडस्ट्री की सौगात दी है। चारों ओर से बाधाओं से घिरे होने पर भी उन्होंने घुटने नहीं टेके।

अपितु तब तक अपने निश्चय पर कायम रहे, जब तक उनका स्वप्न पूरा नहीं हो गया और उन्होंने भारतीय फिल्म समुदाय पर पक्की छाप नहीं छोड़ दी। आज, जब तक धरती पर जीवन है, बाबा साहेब फालके को याद रखा जायेगा।

इस प्रतिष्ठित फिल्मकार से मीलों दूर, किसी और शताब्दी में व संसार के दूसरे कोने दो युवा भी इसी तरह की ऊर्जा, जोश व जुनून के साथ कुछ ऐसा रचना चाहते थे जो पहले कभी न रचा गया हो। सन् 1998 में 25 वर्ष के सर्गेइ ब्रिन एवं लैरी पेज ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में अपनी पी.एच.डी. की पढाई छोड़ कर एक ऑनलाइन सर्च इंजिन "गूगल" की स्थापना की; उनका अविष्कार "सर्च इंजिन ऑप्टीमाइज़ेशन" एक बिल्कुल ही नयी परिकल्पना थी जो पहले न तो सुनी गयी थी और न ही देखी गयी थी, व जिसने इंटरनेट को बेहतर बनाने के साथ ही, एक दशक से कम समय में गूगल को घर-घर पहुँचा दिया। इन दोनों युवाओं का पथ प्रदर्शन करने हेतु न तो कोई नियम थे न कोई अधिनियम और न ही कोई प्रतिमान; यहाँ तक कि कोई केस स्टडी भी उनकी मदद के लिये उपलब्ध नहीं थी। उन्होंने अपने स्वयं के खांचे बनाये, स्वयं को निर्देशित किया और एक ऐसी भीमकाय संस्था की स्थापना की जो आधुनिक टेक्नोलॉजी को निरंतर प्रभावित कर रही है।

चाहे वे नीरज गुप्ता हों जिन्होंने पारम्परिक काली व पीली टैक्सी को एक परिष्कृत, वातानुकूलित रेडियो टैक्सी – मैट्रो में रूपांतरित कर दिया। जो कि आज भारत के कई शहरों में सेवाएँ दे रहीं हैं। इससे कहीं बड़ा रूपांतर जो उन्होंने किया वह था, धूर्त, अड़ियल, हेरा–फेरी करने वाले, असभ्य व यूनियन के तहत काम करने वाले स्थानीय टैक्सी ड्राईवरों को सुस्कृंत, व्यवहार–कुशल व शिष्ट शोफर में बदलना या फिर मार्क ज़करबर्ग जिन्होंने दुनिया की सबसें बडी सोशल नेटवर्किंग साइट – फेसबुक बनाकर इंटरनेट में तूफान खड़ा कर दिया। चाहे यह स्टार बक्स कॉफी की युवाओं के लिये तीसरा घर बनाने की परिकल्पना हो या बैंगलूर के पति–पत्नि सुरेश–मीना कृष्णन का ट्युटर विस्तार का विचार जो कि अमेरिका व यूनाइटेड किंगडम के विद्यार्थीयों को इन्टरनेट द्वारा उनके विद्यालय का पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं। ये सभी अपने आप में अविष्कारिक रचनाऐं हैं। इन में से किसी के भी पास उनसे पहले किया हुआ कोई ऐसा काम नहीं था, जिसे वे पृष्ठभूमि की तरह प्रयोग कर सके; न ही उनके पास कोई प्रतिमान थे, जिस पर वे चल सकें, न ही देखकर समझने के लिये कोई नमूना था। सीखने के लिये कोई उदाहरण भी नहीं थे और नही कोई पथप्रदर्शक था, जो सही राह बता सके। उन्होंने अपना मार्गदर्शन स्वयं किया, अपने कार्यों को स्वयं निर्देशित किया, अपनी राहें खुद तराशीं, असम्भावनाओं में से सम्भावनाऐं खोजीं और स्वयं आस पास के लाखों लोगों के जीवन उन्नयनित किये। ये सभी लोग केवल एक लक्ष्य से प्रेरित थे; कुछ ऐसा रचें जो आज तक अस्तित्वहीन था।

असम्भव को करना भी एक मनोरंजन है।

– वॉल्ट डिस्नी

असम्भव से सम्भव की सोच की ओर,

एक सम्भावना–विचारक होने के लिये आपको स्वयं से एक मूलभूत प्रश्न करना आवश्यक है, यह मैंने कई वर्षो पहले प्रसिद्ध परिवर्तन गुरू जोल बारकर से सीखा।

कुछ ऐसा है, जो आज मेरे व्यवसाय में करना असंभव है, यदि वह किया जा सके; तो क्या वह मेरे कार्य–क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा?

यद्यपि यह प्रश्न उन असंभावनाओं के बारे में है, जिनका सामना आप अपने व्यवसाय में करते हैं, परन्तु आप इस प्रश्न को अपने जीवन पर भी लागू कर सकते हैं। इसके लिये आपको इसका नीचे दिया प्रारूप प्रयोग करना होगा।

यदि कुछ ऐसा है। जो आज मेरे जीवन में करना असंभव है। किन्तु वह किया जा सकता है, तो क्या वह मेरे कार्य-क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा? यह प्रश्न आप असंख्य बार पूछ सकते हैं, और थोड़े से विचार व प्रयोग के बाद आप इसके कई रूपांतर भी तैयार कर सकते है।

- **कुछ ऐसा है जो आज मेरे पति/पत्नी/बच्चों/माता-पिता/सम्बधियों के साथ मिल करना असम्भव है; यदि वह किया जा सके, तो क्या वह कार्य-क्षेत्र में कुछ मूलभूत परिर्वतन लायेगा?**

- **कुछ ऐसा है जो मेरे व्यवसाय/मार्केट/टेरिटरी में करना असंभव है; यदि वह किया जा सके, तो क्या वह मेरे कार्य-क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा?**

- **कुछ ऐसा है जो आज मुझे मिले समय से करना असंभव है; यदि वह किया जा सके, तो क्या वह मेरे कार्य-क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा।**

- **कुछ ऐसा है जो आज मेरे धन से करना असंभव है; यदि वह किया जा सके, तो क्या वह मेरे कार्य-क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा।**

- **कुछ ऐसा है जो आज मेरे शरीर से करना असंभव है; यदि वह किया जा सके, तो क्या वह मेरे कार्य-क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा।**

जब आप स्वयं से सम्भावना-विचारक-प्रश्न पूछते हैं और फिर असम्भव कार्य को वास्तव में कर लेते हैं तो आपके आस-पास की दुनिया में आपकी पहचान बनने लगती है। और यहीं से जीवन का उन्नयन आरम्भ हो जाता है। जब आप असम्भव कार्यों की एक पूरी कड़ी सफलता पूर्वक कर लेते हैं; तो लोग आपको ध्यान पूर्वक देखने लगते हैं; आपका अनुसरण करते हैं; आपको आदर्श मानने लगते हैं; और उन्नयनित जीवन आप में घर करने लगता है; उन्नयनित जीवन की प्रक्रिया आपमें स्थापित होने लगती है।

अब आप एक आम आदमी से एक सार्वजनिक व्यक्तित्व बनने लगते हैं; आप पर दबाव बढने लगता है - अध्याय 1 याद करें, जिसमें हमने सार्वजनिक दबाव की बात की थी - और संसार के प्रति आपका दृष्टिकोण बदल जाता है - अपने इस दृष्टिकोण से आप स्वयं अपरिचित थे। अब आप जो भी सोचते हैं, संप्रेशित करते हैं व क्रियान्वित करते हैं, वह संसार को बेहतर बनाता है और फिर अचानक ही इस ग्रह पर आपकी उपस्थिति सार्थक बन जाती है। संसार आपकी ओर दिशा, मार्गदर्शन और प्रेरणा पाने के लिये देखने लगता है। आप

कभी जिस 'व्यापक–साधारणता' का भाग थे, अब नमस्कार कर उस से विदा ले लेते हैं; और सार्थक विशिष्ट लोगों के क्षेत्र में प्रवेश कर लेते हैं। अब आप एक उन्नयनित जीवन वाले व्यक्ति बन जाते हैं।

4 अक्टूबर 1985 को मैने एक घर–घर जा कर वैक्यूम क्लीनर बेचने वाले के रूप में यूरेका फोर्ब्स कम्पनी में काम करना आरम्भ किया। उन दिनों यूरेका फोर्ब्स का औसत राष्ट्रीय सेल्स चार वैक्युम क्लीनर प्रतिमाह था। किन्तु कुछ लोग 8, 12, या 14 भी बेच लेते थे, किन्तु ऐसा वे नियमित तौर पर नहीं कर पाते थे।

11 अक्टूबर 1985 को जब माह का सेल्स क्लोज़ करने में मात्र 20 दिन बाकी थे, मैंने 26 वैक्यूम क्लीनर बेचे, व एक सेल्स–मैन के रूप में एक शानदार यात्रा आरम्भ की। अगले महीने मैंने 32 वैक्यूम क्लीनर बेचे, फिर 34, 36, 39, 41 व 42 व 43, यह संख्या महीने–दर–महीने बढ़ती गयी।

श्री अनिल अम्बो जो हमारे ऑल इंडिया सेल्स हेड थे, व मेरे बॉस के सुपरवाइज़र भी, हमेशा कहा करते थे कि एक सेल्समैन को अपने पिछले महीने की सेल्स से कम से कम एक ज्यादा बेचना चाहिये। मैंने इस बात को बहुत गंभीरता से लिया और अपने पूरे सेल्स करियर में कभी भी पिछले माह की सेल्स से कम सेल्स नहीं की। ऐसा करना असंभव है, किन्तु मैंने किया; मैं एक सम्भावना–विचारक था।

यूरेका फोर्ब्स के इतिहास में पहली बार किसी शाखा ने 300 सेल्स का आंकड़ा छुआ, यह मेरी शाखा थी, मैं पहला ब्रांच मेनेजर था, जिसने महीने में 400 सेल्स पूरी की, फिर एक माह में 500 सेल्स, यह एक बहुत कठिन कार्य था – कभी किसी ने ऐसा करने का साहस नहीं किया था; किसी ने इस बारे में सोचने का भी साहस नहीं किया था। यह असम्भव था, किन्तु मैंने किया। मैं एक सम्भावना–विचारक था।

यूरेका फोर्ब्स में अपने आठ सुनहरे वर्षों के दौरान मैंने जो किया वो अन्य कोई भी सेल्समैन, ग्रुपलीडर, सेल्स सुपरवाइज़र, ब्राँच मैनेजर व डिवीज़नल सेल्स मैनेजर नहीं कर पाया। आज तक कंपनी को मेरे जैसा दूसरा सेल्स–मैन, सेल्स मैनेजर, सेल्स लीडर नहीं मिल पाया है। मैंने जो भी रिकार्ड बनाये उन्हें आज भी कोई चुनौती नहीं दे पाया है। और वे नये लोगों के मन में कुछ करने की आकांक्षा जगाते हैं।

जब मैंने यूरेका फोर्ब्स छोड़ा तो मैं कम्पनी के इतिहास का सबसे छोटा, सर्वाधिक धनी कर्मचारी था। ऐसी अमिट छाप छोड़ना असम्भव है, किन्तु मैंने ऐसा किया। मैं एक सम्भावना–विचारक था।

यूरेका फोर्ब्स छोड़ने के बाद, अपनी दूसरी कम्पनी रीयल वैल्यू में भी एक डिप्टी जनरल मैनेजर के रूप में मैं बहुत अच्छा काम कर रहा था। और महीने–

दर-महीने पुराने व नये कीर्तिमान तोड़ रहा था तभी कम्पनी की एक इकाई वैक्युमाइज़र डिविज़न बैठ गई और उसने कम्पनी को औद्योगिक और वित्तीय पुर्नगठन बोर्ड के मंच पर पहुँचा दिया। कम्पनी समय पर अपने कर्मचारियों को तनख्वाह नहीं दे पा रही थी और हमें लोगों को नौकरी छोड़ने के लिये कहना पड़ रहा था; हालांकि कुछ लोगों ने अपने आप ही काम छोड़ दिया। यह बहुत कठिन समय था।

इन बिगड़ते हुए हालातों में मैंने व मेरे एक सहकर्मी व ब्रांच मैनेजर, प्रदीप पाटील ने निर्णय लिया कि हम अस्वीकृत उम्मीदवारों की एक नयी टीम बनायें व एक नयी शुरुआत करें। यह कोई सामान्य बात नहीं थी। हमने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। और हमें यह करना पसंद भी नहीं आ रहा था। लेकिन हम हार नहीं मानना चाहते थे। अत: हम ने 20 ऐसे उम्मीदवारों की टीम बनायी, जिन्हें हम सामान्य परिस्थितियों में कभी न चुनते और उन्हें सफल सेल्समैन में रूपांतरित किया। हमने न तो मौजूदा हालातों, न ही परिस्थितियों और न ही धन व संसाधनों की बाध्यता को दोष दिया। यह असम्भव था। किन्तु हमने किया। हम सम्भावना-विचारक थे।

हमारे इस अस्वीकृत उम्मीदवारों को सफल कर्मचारियों में रूपांतरित करने के कार्य ने मेरे जीवन को सर्वाधिक पूर्णता दी। इस अनुभव ने मुझे यह पक्का विश्वास दिला दिया कि किसी भी प्रकार के व्यक्ति को बदला जा सकता है। चाहे उसकी शैक्षणिक योग्यताएँ व उपलब्धियाँ कुछ भी हों। अत: जब आप हमारे 'स्मार्ट' कार्यालय में आते हैं, तो आप कभी भी किसी कर्मचारी, ऑफिस असिस्टेंट से लेकर रिसेप्शनिस्ट, ड्राईवर, हमारे सेल्समैन और हमारे वरिष्ठ मैनेजर तक को एक ही कार्य दोबारा करते हुए नहीं पायेंगे। यह असम्भव है किन्तु मैंने किया है। और अभी भी कर रहा हूँ। मैं एक सम्भावना-विचारक हूँ।

सन् 1996 मैं मैंने प्रशिक्षण व सलाहकारिता के क्षेत्र में अपनी यात्रा प्रारम्भ की। तब मैं स्वयं से कई बार यह संभावना-विचारक-प्रश्न पूछा करता था, यदि कुछ ऐसा है जो कि एक प्रशिक्षक के लिये करना असम्भव है, किन्तु वह किया जा सकता है तो क्या वह मेरे कार्य-क्षेत्र में कुछ मौलिक परिवर्तन लायेगा।

फिर एक दिन मैंने स्वयं से कहा, एक माह में 10 दिन प्रशिक्षण, 10 दिन व्यापार-विस्तार और 10 दिन नियोजन-तैयारी एवं एक महिना स्व उन्नयन असम्भव है। मैने इसे अपना लक्ष्य बनाया और किया। क्रमश: मैंने प्रशिक्षण की अवधि पहले 15 दिन व फिर 20 दिन तक बढ़ा दी और जबकि मेरे अन्य प्रशिक्षक-मित्र - 10 दिन की यात्रा से घबराते थे। मुझे एक माह याद आता है, जब मैंने 24 दिनों तक निरंतर, बड़े आराम से, प्रशिक्षण-कार्यक्रम किये। इस दौरान मैं रात को यात्रा करता था और तभी अपनी तैयारी भी कर लेता था; और यह सब करते हुए मैंने तनिक भी शारीरिक, मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक

थकान न तो मन पर अनुभव की और नही शरीर पर। यह करना असम्भव था। किन्तु मैंने किया। मैं सम्भावना-विचारक था।

एक सेल्समैन का काम करते हुए मैंने स्वयं को कसम दिलायी थी, कि मैं जब तक कम से कम एक वैक्युम क्लीनर नहीं बेच लूंगा घर नहीं जाऊँगा। सन् 1986 में एक दिन मैंने सैकड़ों दरवाजे खट-खटाए व कई लोगों को प्रेजेंटेशन दिये, किन्तु रात के 11 बजकर 45 मिनट हो गये थे। और मैंने अभी तक एक भी वैक्युम क्लीनर नहीं बेचा था। मैंने स्वयं से वादा किया था कि बिना बेचे मैं घर नहीं जाऊँगा। यह मेरे जीवन की नीति या सज़ा थी, और मैं उस पर कायम रहना चाहता था। आधी रात से कुछ मिनिटों पहले मैंने एक मकान की दूसरी मंजिल पर रोशनी देखी। मैं उस घर तक गया और एक क्षण का भी विचार किये बिना मैंने दरवाजा खटखटाया। जिस व्यक्ति ने दरवाजा खोला वह आधी रात एक सेल्समैन को देखकर हतप्रभ व अचंभित था। उसके आश्चर्य पर बिना कोई ध्यान दिये मैंने अपनी सामान बेचने की बात आरम्भ कर दी-'सर मैं यूरेका फोर्ब्स से हूँ और मेरे पास एक छोटी मशीन है जो आपके घर की उपर से लेकर नीचे तक की हर चीज साफ कर सकती है। मैं आपको इस मशीन का एक डेमॅन्स्ट्रेशन देना चाहता हूँ और आपको इसके लिये कुछ नहीं देना है। सर क्या मैं अंदर आ सकता हूँ।' उस व्यक्ति ने मुझे बीच में रोका और कहा-'भले मानस यह आधी रात का समय है;' 'मैंने उत्तर दिया-जी हाँ सर यह आधी रात है। क्या मैं अंदर आ सकता हूँ।'

मैं उस व्यक्ति का तात्पर्य समझ रहा था; किन्तु मैंने स्वयं को उसके समय संबंधी विचारों से बाधित नहीं होने दिया और अपना प्रस्ताव जारी रखा। तब उसने मुझ से पूछा कि मैं इतनी मेहनत क्यों करता हूँ। मैंने उसे बताया कि इसके दो कारण हैं।

1. मैं एक बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ।
2. मैंने स्वयं से वादा किया है, कि मैं जब तक कम से कम एक वैक्युम क्लीनर नहीं बेच लूंगा घर नहीं जाऊँगा।

उसने मुझे अंदर आने दिया और मैंने उसे एक शानदार प्रस्तुति दी। वह बहुत प्रभावित हुआ; और बोला कि वह चार मशीनें खरीदना चाहता है। यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। किन्तु साथ ही मैं उत्साहित भी हो गया - कहाँ तो मैं एक मशीन बेचने के लिये मेहनत कर रहा था और यह आदमी तो चार मशीनें खरीदना चाहता है। उत्तर में उसने कहा, "मैं मुबंई व महाबलेश्वर के बीच में लक्ज़री बस सेवा चलाता हूँ। और मेरे पास चार बसें हैं। यात्रा के दौरान लोग बस में वेफर्स, मूंगफली आदि गिरा देते हैं। क्या यह वैक्यूम क्लीनर सारी चीजें

उठा कर बस को साफ कर देगा?" मैंने कहा, हाँ, यह कर देगा, तब उसने कहा यदि ऐसा हो सकता है तो वह चार मशीनें ले लेगा।

आम तौर पर उसकी बसें रात 10–11 बजे तक मुंबई लौट आती थीं, किन्तु उस दिन एक बस रास्ते में खराब हो जाने के कारण, उनके आने में कुछ घंटों की देरी हो गयी थी। वह आधी रात को जगा हुआ था क्योंकि उसकी गाड़ियाँ एक निर्धारित जगह पर रात डेढ़ बजे पहुँचने वाली थीं; और वह वहाँ जाने के लिये तैयार हो रहा था। मैं उसके साथ मरीन ड्राइव गया, जहाँ बसें आने वाली थीं, और बसों का इंतजार करने लगा। आखिरकार सुबह 3:30 पर बसें वहाँ आ पहुंची।

मैं तुरंत बस के अंदर गया और अपना डेमॅन्स्ट्रेशन आरंभ कर दिया किन्तु मेरे आश्चर्य और भय की सीमा न रही, जब बस की बैटरी में खराबी के कारण मशीन शुरू ही नहीं हो पायी। डेमॅन्स्ट्रेशन असफल रहा और उस व्यक्ति ने मशीनें खरीदने से मना कर दिया। मैं समझ गया कि अभी मेरी परीक्षा पूरी नहीं हुई है।

उसने मुझसे पूछा कि क्या वह मुझे कहीं छोड सकता है। और मैंने कहा महालक्ष्मी स्टेशन; हम लोग वहाँ सुबह 4 बजे पहुँचे। पहली ट्रेन 4:30 पर आने वाली थी और वह मुझे या तो दक्षिणी मुम्बई में मेरी सेल्स टेरेट्री, ग्रांट रोड की ओर ले जाती या फिर उत्तरी मुम्बई अंधेरी जहाँ मैं रहता था। मुझे घर जाने वाली ट्रेन पकडने का विचार तक नहीं आया और मैं अपनी सेल्स टेरेट्री की ओर जाने वाली ट्रेन में चढ़ गया। मैंने एक दुकान से टूथ ब्रश व टूथ पेस्ट खरीदा और एक होटल में जाकर तैयार हुआ। इन दोनों जगहों के अधिकतर ग्राहक उस क्षेत्र के मिल मजदूर थे। और उनके लिये वे जगहें सुबह जल्दी खुल जाती थीं। उस दिन मिल कर्मचारियों के आने के पहले ही मैंने दोनों जगहों से आर्डर लेकर अपना खाता खोला और हमेशा की तरह काम पर आगे बढ़ गया।

सुबह के 6:45 का समय था और मैं अपनी टेरेटरी में था। यह वही समय था जब मेरे अधिकांश दिनों की शुरूआत होती थी। अपने दिन का आरम्भ मैं संभवित ग्राहको के द्वार खटखटाने, कोल्डकॉल्स करने व आगे की मुलाकात का समय तय करने से करता था। यह मुलाकात उसी दिन की भी हो सकती थी – अगले की भी, और उससे अगले की भी– पिछली रात का बदला लेने की नीयत से मैंने दोपहर 12 बजे तक तीन वैक्युम क्लीनर बेच दिए। मैंने ऑफिस जाकर पैसे जमा कराये और घर चला गया। मैने स्वयं से वादा किया था कि मैं तब तक घर नहीं जाऊँगा जब तक मैं कम से कम एक वैक्युम क्लीनर नहीं बेच लूंगा और मैंने अपना वादा निभाया। यह असंभव था। किन्तु मैंने किया। मैं एक सम्भावना–विचारक था।

सेल्स का काम करने वाले लोग काम पर आमतौर पर सुबह 9:30 – 10:00 बजे तक पहुँचते हैं; मैं अपनी टेरेटरी में प्रतिदिन सुबह 6:45 पर पहुँच जाता

था और 9 बजे तक जब कि शेष संसार अपना दिन आरम्भ करने की तैयारी में होता है, मैं अपना 25 – 30 प्रतिशत काम निपटा लेता था। मैं दुनिया से 25 – 30 प्रतिशत आगे रहता था। मैंने अनुभव किया कि यदि आप अन्यों से 25–30 प्रतिशत आगे रहने की आदत डाल लेते हैं, तो 8 – 10 साल में आपका जीवन उन्नयनित होने लगता है; यह बात मुझे तब पता नहीं थी किन्तु आज मैं यह जानता हूँ।

उन १२ वस्तुओं की सूची बनाइये जो आपके व्यवसाय या जीवन, सम्बन्ध, क्षेत्र, विषय, बाजार, विभाग टेक्नॉलजी, उत्पाद आदि ......, इनमें से कोई एक चुनें, में करना असम्भव है। किन्तु यदि आने वाले एक वर्ष में ये कर ली गयी तो क्या वह आपके काम में कोई मौलिक परिवर्तन लायेगी।

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

जैसा कि मैंने इस अध्याय के आरम्भ में कहा था; सम्भावना अज्ञात है, जो आपकी कल्पना इरादों एवं बोध के परे है। आप के मौजूदा विचारों शब्दों व कार्यों के भी परे है। जब आप इसके क्रियान्वन में संलग्न होते हैं, तो यह अर्थहीन लगती है किन्तु क्रियान्वन पूरा हो जाने पर वह सार्थक बन जाती है। अत: यदि किसी कार्य की असम्भावना के प्रति आपका विश्वास दृढ़ है। तो बिना हिचकिचाहट उसे कर डालिये। थोड़े ही समय में यह सम्भावना आपका सह–स्वभाव बन जायेगी और स्वभाव शाश्वत है; यह कठिनाइयों में भी कायम रहता है, यह कभी परास्त नहीं होता।

असम्भव कार्य कर लेने से आप प्रभु समान हो जाते हैं। आप एक सम्भावना–विचारक बन जाते हैं।

अपना पूरा जीवन उन्नयनित करने हेतु आपको निम्न लिखित आज्ञा, अनुदेश, निदेश, आदेश या प्रभु का यह विधान अपने जीवन के हर दिन, हर घंटे, हर मिनट स्वयं को देना होगा।

'सम्भावना–विचारक बनें'

कमांडमेंट
3

जीवन नैया को बीच मंझधार में ले जा कर झिझोड़ें

**उन्नयन की राह पर न चलने वाले मनुष्य
का जीवन अत्यंत सुखमय होता है।
और सुख जीवन के उन्नयन को समाप्त कर देता है।**

हम एक अनियमित व अनिश्चित समय में जी रहे हैं। प्रतिदिन, घंटे-वार रूप में नयी परिकल्पनाएँ, नये उत्पाद व सेवाएं प्रस्तुत की जा रहीं हैं। यदि आप उन्हें प्रस्तुत नहीं करेगे तो कोई अन्य कर देगा, यदि आप नये विचार नहीं लायेगें तो कोई अन्य ले लायेगा; यदि आप नये उत्पाद व सेवायें नहीं लायेंगें तो श्रेय किसी और को चला जायेगा। यदि आप चुनौतियाँ स्वीकार नहीं करेंगे तो कोई अन्य करेगा। यदि आप माउंट एवरेस्ट को जीतने का प्रयत्न नहीं करेंगे तो कोई और उसे जीत लेगा...... जिसने पहला कदम उठाया उसी ने जीवन को उन्नयनित कर लिया।

हर बार जब कोई अन्य व्यक्ति आगे बढकर संसार को जीत लेता है, तब आप केवल पछता सकते हैं, उदास हो सकते हैं या स्वयं के दुर्भाग्य व तुच्छता पर दुःखी हो सकते हैं। इसके बाद आपके पास एक अनुयायी बनकर जीने का विकल्प ही रह जाता है। लेकिन यदि आप एक अग्रणी का सफल जीवन चाहते हैं, न कि एक चिर - अनुयायी का महत्वहीन अस्तित्व, तो अपनी जीवन नैया में तब खलबली पैदा करें जब वह बीच मंझधार में हो।

इसका अर्थ है यथास्थिति को चुनौती दे कार्यों को भिन्न रूप में करें, वर्तमान पर प्रश्न उठायें खलबली पैदा करें, चलती गाडी के पहिये बदलें; यानि ऐसे समय कुछ नया करें जब सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा हो। उस समय नये प्रयोग करें जब उनकी कोई प्रत्यक्ष आवश्यकता न हो; सम्भावित को परखने हेतु कोई कदम उठायें, अर्थात सदा अग्रणी रहें और अन्य लोगों को छूने न दें।

जीवन नैया को तब झिंझोड़ें जब वह मंझधार में हो, न कि किनारे पर!

यदि आप नाव को जोर से तब झिंझोड़ें जब वह किनारे पर या किनारे के पास ही हो, तो वह थोड़ा सा अवश्य हिलेगी। लेकिन जल्दी ही स्थिर हो जायेगी। किन्तु दूसरी ओर यदि नाव को मंझधार के बीचों-बीच ले जाकर झिंझोड़ा तो परिणाम गम्भीर हो सकते हैं, नाव उलट सकती है; उसके अंदर पानी भर सकता है। उसमें सवार यात्री डूब सकते हैं, और जान-माल का बड़ा नुकसान हो सकता है।

अब जरा इस उदाहरण को अपने जीवन से जोड़ें। जब आपका व्यवसाय या करियर अपने शीर्ष पर होता है, तब सब कुछ ठीक चल रहा होता है, जीवन नियमित होता है; धनागमन बना रहता है, और उत्पादन अपने चरम पर होता है। कर्मचारी भी सब कुछ यथावत चाहते हैं, न कोई प्रयोग, न नवपरिवर्तन, न नई नौकरी और न ही नया उद्योग; उद्योगकर्मी भी न तो व्यवसाय की लाइन बदलना चाहते हैं, न उत्पाद और न ही व्यवसाय चलाने के तरीके। ये सभी लोग यथास्थिति भंग होने और उसके परिणाम से डरते हैं। वे अपनी सफलता, कद, नाम, यश व सम्पत्ति से संतुष्ट होते हैं और नहीं चाहते कि बड़े सपनों का पीछा करते हुए, वे अपना सब कुछ खो दें। कुछ लोगों के पास और भी कारण हैं, जैसे

बढ़ती उम्र, उसमें शामिल जोखिम या फिर वे पहले ही बहुत कष्ट भोगने के बाद सफलता पा सके हैं, और अब पुन: उन कष्टों से नहीं गुजरना चाहते।

लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्हें यश, सफतला, एवं धन की अगली सीढ़ी तक केवल एक चीज पहुँचा सकती है और वह है, बीच मंझधार में अपनी जीवन नैया को हिलाना। जो यह जानते हैं, वे अपना जीवन उन्नयनित कर लेते हैं।

यह क्यों आवश्यक है? सफलता के साथ आने वाली चीजों में एक दम्भ भी है; यह जीवन के प्रति आपका रवैया बदल देता है, आप मानने लगते हैं कि भविष्य, भूत का ही एक आयाम है और जो परिकल्पनाएँ व विचार आपको यहाँ तक लेकर आये है, वे आपको आगे भी ले जायेंगे। आप मानने लगते हैं कि आप अपना लक्ष्य स्वयं के विचारों, कार्यों व क्रियाओं द्वारा ही पा सकते हैं; और आपकी पुरानी सफलताओं ने इस विश्वास की एक मिसाल कायम कर दी है।

पूरी दूनिया को विश्वास दिलाना कि आप जो कर रहे है, वही ठीक है; आपका सर्व प्रिय शगल हो जाता है और आप जीवन की संभावनाओ की ओर से आंखे बंद कर लेते हैं। आप जीर्ण होने लगते हैं और स्वयं को एक ऐसे बंधन व मानसिक स्थिति में जकड़ लेते है, जिस से आप आलस्य के कारण सदा कुछ घटने की प्रतीक्षा में रहते हैं। आप शरीर व मन से थक जाते हैं व आपकी सुन्दरता, कांति, शक्ति व जीवन के प्रति आपका उत्साह खोने लगता है। कुछ नया खोजने की आपकी योग्यता को मानो जंग लग जाता है; और आप अपने दैनिक क्रिया-कलापों में ही उलझे रह जाते हैं। आपकी बचाव - आक्रामकता- कठोरता के महत्व की समझ कम होने लगती है। जीवन में अब तक पायी आपकी बढ़त व अपनी व अपने पर्यावरण की क्षमताओं के दोहन की आपकी योग्यता पर आपकी पकड़ ढ़ीली होने लगती है। आप का ठीक समय व कार्यक्षेत्र चुनने का विवेक खो जाता है, और आप अंर्तःमुखी होने लगते हैं, आस पास के लोगों पर आपकी निर्भरता भी बढ़ जाती है। स्वयं के बचाव का आपका गुण मानो कहीं उड़ जाता है और आप अपनी ही मान्यताओं व विश्वास में जकड़ जाते हैं। आप अकर्मण्यता और सफलता के नशे के परमानंद का रस लेने लगते हैं और यही असफलता का सबसे बड़ा चिन्ह है।

इस मानसिक स्थिति से अलग होने के लिये मैंने स्वयं को जो कमांडमेंट्स दिये उनमें से एक था-

अपनी जीवन नैया को बीच मंझधार में ले जाकर झिंझोड़े।

नाव को हिलाने-डुलाने का आरम्भ करने से पहले इस प्रक्रिया के चार बुनियादी नियमों को जान लें, ये चारों या इनमें से कोई एक आपके जीवन को उन्नयनित कर सकता है:

1. असतत् के दर्शन में विश्वास रखें।
2. ग्यांरटी की अपेक्षा न रखें।
3. दूसरों से समर्थन की आशा न रखें।
4. नाव को झिंझोड़ने के लिये आपको सफलता के शीर्ष पर होना होगा।

असतत के दर्शन में विश्वास रखें

जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है। आपके आस-पास के लोग - उनकी प्रतिबद्धता, सहयोग, निष्ठा - आपके सम्बंध व उनका जीवन, आपके मौजूदा काम अथवा व्यवसाय की प्रकृति, आय, परिस्थितियाँ, रहन-सहन का स्तर, संपत्ति, सुख-सुविधाएँ, परिश्रम व संघर्ष तथा स्वयं जीवन; इनमें से कुछ भी शाश्वत-सतत नहीं है। यह सब किसी न किसी दिन समाप्त होगा, उसे समाप्त होना ही है।

कई लोग अपनी तात्कालिक परिस्थितियों के चलते पूरी तरह अकर्मण्य हो जाते हैं; उन्हें लगता है कि ये स्थितियाँ जीवन भर रहनेवाली हैं; उन्हें यथास्थिति का टूटना भयावह लगता है। किन्तु यह कथन सही है कि जब तक आप चिर-परिचित को पीछे नहीं छोड़ देते, तब तक नयी ऊँचाइयो को नहीं पा सकते और इसके लिये आपका असतत के दर्शन को अंगीकार करना आवश्यक है। सभी संगठनों को हर स्तर पर, असतत के इस दर्शन को स्थापित कर लेना चहिए। प्रत्येक व्यक्ति, संबंध, उत्पाद, प्रक्रिया, व्यवस्था, आदर्श, क्रियान्वय का तरीका व शायद पूरे व्यवसाय को समय समय पर बदलने की व कुछ नया जोड़ने की आवश्यकता होती है। जब आप चले आ रहे कार्य को छोड़ कर नये व्यवसाय में प्रवेश करते हैं तो आप बुरी तरह से असफल हो सकते हैं; किन्तु आपको इस असफलता के लिये तैयार रहना होगा, उसका सामना करना होगा, उससे संघर्ष करना होगा और विजेता बन कर उभरना होगा।

बजाज समूह की एक इकाई बजाज ऑटो को किसी समय एक स्कूटर निर्माता के रूप में जाना जाता था। उनकी शानदार मोटर साइकिलों व बाइक्स जैसे कि पल्सर, डिस्कवर आदि की पूरी श्रृंखला को बाज़ार में उतारने के बाद भी, अपनी पुरानी छवि को बदलने में उन्हें एक दशक से अधिक का समय लगा। इस समय उन्हें मार्ग दिखाने वाला एक मात्र विचार था- असतत का दर्शन।

किसी समय उनकी कम्पनी का प्रमुख उत्पाद दुपहिया स्कूटर का घर-घर में प्रचलित नाम बजाज चेतक ही था। बजाज समूह के अपरम्परागत उत्तराधिकारी राजीव बजाज ने इस छवि को बदलने का निर्णय लिया। जिस समय विश्व के बड़े मोटर साइकिल निर्माता हीरो मोटरकॉर्प, यामाहा आदि स्कूटर के क्षेत्र में

प्रवेश कर रहे थे, उन्होंने स्कूटर का व्यवसाय छोड़, 100 प्रतिशत मोटर साइकिल बनाने वाली ब्रांड बनने का निर्णय लिया। उनके पिता राहुल बजाज उनके सबसे बड़े आलोचक व शाश्वत विरोधी थे; किन्तु राजीव दृढ रहे, वे जानते थे कि जब तक वे चले आ रहे उत्पादों को नहीं छोड़ेंगे, उनके लिये एक नयी छवि व स्थान बनाना असम्भव होगा। इस प्रकार असतत के मार्ग दर्शन में उन्होंने अपनी नैया को मंझधार में ले जाकर अपने उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला को झिंझोड़ा और आज बजाज ऑटो एक प्रसिद्ध मोटर साइकिल निर्माता हैं; जिनका व्यवसाय विश्व के 50 से अधिक देशों में फैला है।

इसी प्रकार नोकिया, संचार के क्षेत्र का एक अग्रणी ब्राण्ड मूलरुप से लुगदी व कागज के निर्माता थे। सन् 1865 में इसकी स्थापना मध्य फिनलैंड के इसी नाम के एक शहर में की गई थी। जैसे–जैसे टेक्नोलॉजी विकसित हुई व जंगल घटते गये; नोकिया ने अनुभव किया कि यदि उन्होंने शीघ्र ही अपना व्यवसाय नहीं बदला तो उनका नामो–निशान मिटते देर न लगेगी; और नोकिया ने स्वयं को एक फॉरेस्ट मैनेजमेंट कम्पनी से एक दैत्याकार संचार कम्पनी के रुप में पुर्ननिर्मित किया। आज यदि नोकिया और आगे बढ़ना चाहता है और विश्व में एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान के रुप में अपना वर्चस्व कायम रखना चाहता है, तो उसे पुन: असतत के दर्शन की ओर जाना होगा। यह किसी भी रुप में हो सकता है। कम्पनी को चली आ रही विचार प्रक्रिया की समप्ति द्वारा अथवा संचार का उद्योग छोड़ कर किसी नये, भिन्न व बेहतर क्षेत्र मे प्रवेश करना होगा; जो उन्हें अगले स्तर तक ले जाये।

एक और उदाहरण है– ITC का जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, इंडियन टोबैको कम्पनी (पूर्व नाम, इम्पीरियल टोबैको कम्पनी ऑफ इंडिया)। यह 70 के दशक की सिगरेट बनाने वाली प्रमुख कम्पनी थी। तम्बाकू व धुम्रपान के हानिकारक प्रभावों के प्रति बढ़ती जागरूकता से अजीत हसकर, जो उस समय कम्पनी के मुख्य अधिकारी थे, यह समझ गये थे कि यदि ITC ने स्वयं को सिर्फ तम्बाकू के व्यवसाय तक सीमित रखा तो यह आत्मघाती होगा। अत: 1975 में ही कम्पनी ने अपने पंख फैलाये और विविधीकरण आरम्भ कर दिया; उन्होंने अपनी उपस्थिति, होटल, पेपर–बोर्ड, स्पेशिऐलिटि पेपर, पैकेजिंग, कृषि–जन्य व्यापार, डिब्बाबंद भोज्य पदार्थों, कन्फैक्शनरी, सूचना प्रौद्योगिकी, ब्रांडेड कपड़े, व्यक्तिगत देख–भाल के उत्पादों, लेखन सामग्री, माचिस व अन्य एफएमसीजी उत्पादों के क्षेत्र में दर्ज की। सात बिलियन डॉलर की कुल बिक्री व छब्बीस हजार कर्मचारियों के साथ 60 स्थानों से व्यापार करने वाले इस समूह ने एक डाइवर्सीफाइड (बहुउत्पाद व्यावसायिक प्रतिष्ठान) बिजनेस हाउस के रूप में ख्याति अर्जित की है। 1955 में स्थापित आय सी आय सी आय बैंक को किसी समय भारतीय औद्योगिक ऋण एवं निवेश निगम के नाम से जाना जाता

था। यह संस्थान विश्व बैंक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों व बीमा कम्पनियों का संयुक्त उद्यम था व इसका उद्देश्य भारतीय उद्योगों को उनकी परियोजनाओं के लिये वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना था। 90 के दशक तक इस संस्था ने एक रूढ़िवादी इकाई के रूप में कार्य किया इसी दौरान के बी कामथ एशियन डेव्हेलपमेंट बैंक, मनीला से अपना 8 साल का कार्यकाल पूरा कर लौटे और आय सी आय सी आय के एमडी व सीईओ का पदभार ग्रहण किया। कामथ जानते थे कि भारत में बैंकिग क्षेत्र बहुत तेजी से विकसित हो रहा है; और यदि आय सी आय सी आय अपनी मौजूदा भूमिका के बाहर नहीं निकला तो शीघ्र ही गुमनाम हो जायेगा। अत: उन्होंने इस संस्था को विकासोवित्तीय संस्थान से विविध-वित्तीय सेवा समूह में परिवर्तित कर अपने द्वार खुदरा ग्राहको के लिये खोल दिये।

सन् 1996-98 में उन्होंने गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं के अधिग्रहण की श्रृंखला आरम्भ की और आय सी आय सी आय बैंक की स्थापना का मार्ग तैयार कर लिया। सन् 1998 में जब आय सी आय सी आय बैंक ने इन्टरनेट बैंकिग का संचालन आरम्भ किया, तब तक बैंक ने स्वयं की नयी ब्रैंड वन-स्टॉप फाइनेन्शियल-सर्विस-प्रोवाइडर स्थापित कर ली थी। सन् 1999 में आय सी आय सी आय बैंक भारत व एशिया का - जापान के अतिरिक्त, ऐसा पहला बैंक, कम्पनी अथवा वित्तिय संस्थान बन गया जो पचास लाख अमेरिकन डिपॉज़िटरी शेअर्स के साथ न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टेड हुआ और जिसने अपने ऑफर साइज़ से 13 गुना अधिक डिमांड बुक जनरेट की।

असतत अनिवार्य है!

ग्यारंटी की अपेक्षा न रखें

ग्यारंटी, आश्वासन, सुरक्षा, आश्रय - ये सभी शब्द साधारण मनुष्यों के लिये बने हैं। जीवन उन्नयन की राह पर चलने वाले नयी पहल करने से पहले किसी ग्यारंटी की मांग नहीं करते। उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता नहीं होती कि जो जोखिम वे उठा रहे है, वह उन्हें उन्नति देगा या अवनति; क्या नयी नौकरी उन्हें विकास देगी। क्या नयी लिखी पुस्तक पाठकों को पसंद आयेगी; क्या नया डिज़ाईन पास होगा; क्या नयी धुन लोकप्रिय होगी; क्या नया निवास शुभ होगा; क्या नया उत्पाद बिकेगा; क्या नया कर्मचारी कार्यों का निष्पादन कुशलता से करेगा; क्या एक नया बाजार व्यापार बढायेगा; क्या नया मॉडल अधिक लाभप्रद रहेगा आदि। वे कार्यों के सम्पादन में विश्वास रखते हैं। वे जोखिम उठाते हैं, जोखिम वाले निर्णय लेते हैं; और फिर उन्हें सफलतापूर्वक क्रियन्वित कर लेते हैं क्योंकि वे सोच विचार कर उपयुक्त जोखिम उठाते है। और इसका कारण मात्र विषय के प्रति आशावादी होना ही नहीं है, बल्कि उनका

साहसी होना उलट–फेर से बचने का माद्दा होना और उनकी आगे बढने की प्रेरणा, उनका जुनून भी हैं। सार्थक व उन्नयनित जीवन वाले व्यक्ति अपने हर कार्य के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं।

बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये किसी भी विषय के प्रति आपकी प्रतिबद्धता, ही आपका जुनून है।

–डॅन सुलिवॉन

स्टीव जॉब्स की प्रतिबद्धता नवोन्वेशन के प्रति थी। उन्होंने अपने पद, यश व उत्पादों से अपेक्षित लाभ की परवाह न करते हुए, अविश्वसनीय टेक्नोलॉजी की श्रृंखला प्रस्तुत की। ए. आर. रहमान की प्रतिबद्धता संगीत के संसार के प्रति है; न कि अपने श्रोताओं की अपेक्षा से और इसी कारण वे 'जय हो' व 'साडा हक्क' जैसे स्तरीय व लोकप्रिय गानों की रचना कर पाये। इस बात की पूरी सम्भावना रहती है कि 'साडा हक्क' किसी को पसंद न आये या आईफोन 4 असफल रहे। किन्तु फिर भी ये लोग उत्कृष्टता के जुनून से प्रेरित हो आगे बढ़ते रहते हैं– न कि सफलता की आशा में।

जब फनीश मूर्ति की आई–गेट नामक 2500 करोड़ रुपये की भारतीय कम्पनी ने अपने से दुगने आकार की 5000 करोड़ रूपये की भारतीय कम्पनी पाटनी कम्प्युटर्स को खरीदा, तब फनीश मूर्ति ने मंझधार में अपनी नैया को झिंझोड़ा था। इस बात की कोई ग्यारंटी नहीं थी कि यह विलय सफल होगा; कि वे दोनों कम्पनियों को एक कर पायेंगे; कि पाटनी जैसी बड़ी कम्पनी के पुराने कर्मचारी नयी कम्पनी के लिये काम करते रहेंगे; कि स्टॉक मार्केट उनका साथ देगा; कि आई–गेट इस खरीददारी को सम्भाल पायेगी; कि उनका दिवाला नहीं निकलेगा; कि वे सफल होंगे...........

अन–अनुमोदित यात्रा

सार्थक–जीवन वाले व्यक्ति, अपने पथ के एकाकी यात्री होते हैं। वे स्वयं समाहित व स्वयं में संपूर्ण, आत्म–निर्भर व्यक्ति होते हैं, जिन्हें अपने कर्म पर विश्वास होता है; और वे मात्र अपनी ही विचार प्रक्रिया पर, बिना किसी के संबल, सहायता या अनुमोदन की अपेक्षा किये; जो उन्हें उचित लगे वह कार्य करते हैं। उनका अपना ही एक ध्येय होता है; एक सहजबुद्धि, एक अंर्तःचेतना, एक सुविचारित, अनुसंधानित निर्णय होता है, जो उन्हें उनके भविष्य की ओर निर्देशित करता रहता है। और उन्हें नयी पहल करने के लिये संसार के अनुमोदन की आवश्यकता नहीं होती। अनुमोदन न लेने के उनके इस कृत्य के पीछे कोई दम्भ या दृष्टता नहीं होती अपितु सार्थक–जीवन वाले व्यक्ति यह जानते हैं कि

दुनिया उनके विचारों को नकार देगी; और उन्हें उसी राह पर चलने को कहा जायेगा, जिसके दर्शन में संसार विश्वास करता है। उनकी बुद्धिमत्ता उनसे कहती है कि उनके आस पास के लोग उनके विचारों पर विश्वास करना व सबल देना तो दूर, समझ ही नहीं पायेंगे; यद्यपि वे विचार संसार को बदल सकते है और इसलिये वे कदम उठाने से पहले लोगों के अनुमोदन की प्रतिक्षा नहीं करते।

वे विद्रोही तो होते हैं किन्तु ध्येयहीन नहीं...... उनका ध्येय – नवोन्वेशन हो सकता है; स्वतन्त्रता हो सकता है या किसी राष्ट्र, समुदाय या प्रतिष्ठान के लिये भी हो सकता है; विशेषता यह है कि वह ध्येय इतना प्रबल व महत्वपूर्ण होता है कि वे इसे बिना किसी के अनुमोदन के अकेले ही लेकर चल सकते हैं। वे संसार के नियमों व मानदंडो को अनदेखा कर देते हैं, खतरे उठाते हैं। अपने जीवन का उद्देश्य जानने के लिये जो कुछ उचित लगता है, करते हैं; और यह सब वे साथी, समर्थन और संरक्षण न मिलने पर भी करते हैं।

वे नेता होते हैं और जानते हैं कि जीवन नैया उन्हें अकेले ही झिंझोड़नी है और संसार तभी उनके साथ चलेगा जब उनकी नैया स्थिर होकर जीवन–उन्नयन की राह पर उनका मार्गदर्शन कर रही होगी। यद्यपि इस यात्रा मे वे सहयात्री होंगे; किन्तु उन्नयनित जीवन वालों को सदा अग्रणी व साधारण मनुष्यों को उनके अनुयायी के रूप में देखा जायेगा।

भारत की सबसे बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी कम्पनियों में से एक विप्रो के चेयरमैन अजीम प्रेमजी ने हाल ही में अपने दो सीईओ को नौकरी से इस आधार पर हटा दिया कि उन्होंने कम्पनी के विकास को धीमा कर दिया। इस कदम के कारण कई अन्य लोग भी कम्पनी छोड़ सकते थे; कंपनी के शेयर्स लुढ़क सकते थे; इससे अफवाओं व अटकलों का बाज़ार गर्म हो सकता था व उद्योग उनका निरादर कर लज्जित कर सकता था। किन्तु अजीम प्रेमजी जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं और वे हर परिणाम के लिये तैयार थे क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा होगा। उन्होंने मंझधार में, बिना किसी का अनुमोदन लिये, नैया झिंझोड़ी थी। उनके इस कदम के फलस्वरूप उन्होंने ने 1456.40 करोड रुपये का लाभ अर्जित किया, जो वित्तीय वर्ष 2011–12, जिस दौरान उन्होंने यह भारी कदम उठाया, की अंतिम तिमाही की तुलना में 11.95 प्रतिशत अधिक था। वे जीवन उन्नयनित करने वाले व्यक्ति हैं।

यहाँ वे पाँच निर्णय लिखिये जो आप अगले एक वर्ष में अपने व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में लेने वाले हैं। ये निर्णय आपकी अंर्तःचेतना, साहस व अंर्तःज्ञान पर आधारित हों व बिना किसी की सहायता अथवा अनुमोदन के लिये गये हों, साथ ही इनके क्रियान्वयन की रूपरेखा व उसकी समय सीमा भी लिखें।

नम्बर	निर्णय	समय–सीमा	क्रियान्वन की रूपरेखा
1			
2			
3			
4			
5			

अपनी सफलता के शीर्ष पर ही करें

यदि आपको अपनी नाव झिझोंड़नी है, तो यह अपनी सफलता के शीर्ष पर ही करें।

सैकड़ों हजारों व्यापार अपनी ही सफलता व बाजार में अग्रणी स्थिति से अभिभूत हो कमजोर हो जाते हैं। वे यह अनुमान नहीं लगा पाते कि यदि उन्होंने नवनिर्माण पर ध्यान नहीं दिया तो उनका ताज कोई और ले जायेगा।

भारत की पहली सफल कार एम्बैसेडर (हिन्दुस्तान मोटर्स द्वारा निर्मित) ने भारतीय कार उद्योग का बहुत लम्बे समय तक नेतृत्व किया; किन्तु जब मारुति व अन्य कार निर्माता कहीं अधिक हल्की, फैशनेबल, छोटी व चमकदार कारें ले आये तो वे अपना वर्चस्व कायम न रख सके और एम्बैसेडर कार इतिहास का हिस्सा हो गई।

दूरदर्शन – भारत का पहला टीवी चैनल, जिसने वर्षों तक एक–छत्र राज किया, स्टार टीवी व अन्य सैटेलाईट चैनल के आने पर एकाएक धाराशायी हो गया।

सन् 1960 में, व उसके पहले भी स्विट्ज़रलैंड को दुनिया का सबसे बड़ा घड़ी निर्माण राष्ट्र माना जाता था। उनकी प्रोद्योगिकी विशिष्ट थी। ऑटोमैटिक घडियाँ– जिसमें उन्हें महारत हासिल थी और जिसने उन्हें बहुत मुनाफा दिया था, बाजार का 65 प्रतिशत हिस्सा उनके पास था; और उन्हें घड़ी निर्माताओं का नेता, निर्विरोध माना जाता था। 'मेड इन स्विट्ज़रलैंड' का अर्थ था कीमती, उत्तम–दर्जा, व अत्यंत उच्च मानकों का पालन। जीवन बहुत सुन्दर था; स्विस

उन्नति करते जा रहे थे, वे अपनी सफलता के चरम पर थे। तभी 1968 में कुछ घड़ी अनुसंधानकर्ताओं ने स्विट्ज़रलैंड के सबसे बड़े घड़ी निर्माताओं से संपर्क किया और उनके सामने घड़ी बनाने की नयी टेक्नॉलॉजी– क्वॉर्ट्ज़ टेक्नॉलाजी प्रस्तुत की। इस टेक्नॉलॉजी से बनी घड़ी में कहीं कम पुर्जे लगते थे व वे ऑटोमैटिक घड़ियों से हजारों गुना सही समय बताती थीं। उन अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार घड़ी का भविष्य यही था।

उस विचार को तत्काल नकार दिया गया; क्योंकि स्विस मानते थे कि इससे घड़ी उद्योग को कोई लाभ नहीं होगा। उनका विश्वास था कि भविष्य उनके भूतकाल का ही एक आयाम रहेगा और उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक घड़ियों की सम्भावना की ओर से आंखें मूंद लीं। वे इतने आत्मविश्वासी थे कि उन्होंने इस विचार को अपने नाम से पेटेन्ट करा लेने के बारे में भी नहीं सोचा और अनुसंधानकर्ताओं को बेरंग वापस लौटा दिया।

स्विस घड़ी निर्माताओं की अस्वीकृति के बावजूद अनुसंधानकर्ता ने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें अपने विचार पर विश्वास था। उनके विद्रोह में एक ध्येय निहित था। वे अपने उद्योग को उचित व उन्नत प्रोद्योगिकी देना चाहते थे। वे किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ रहे थे जो उनके विचारों से सहमत हो; और इसी खोज में उन्होंने उसी वर्ष वार्षिक घड़ी कांग्रेस में भाग लेकर अपनी टेक्नॉलॉजी को प्रदर्शित किया। दो कम्पनियों – जापान की सीको और अमेरिका की टेक्सास इन्स्ट्रूमेन्ट्स ने उनकी संकल्पना को आगे बढ़ाने में रूचि दिखायी; आगे जो हुआ, उससे सभी परिचित हैं।

इसके ठीक दस वर्ष बाद 1978 में स्विस घड़ी निर्माता, घड़ी निर्माण उद्योग की अपनी अग्रणी स्थिति खो चुके थे। और दुनिया के घड़ी बाजार में उनका अधिकार 65 प्रतिशत से गिरकर 10 प्रतिशत रह गया था; और इस पतन का प्रभाव इतना गहरा व नाटकीय था कि उन्हें अपने 6600 कर्मचारियों में से 5500 को छोड़ना पड़ा। एक राष्ट्र जो अपनी सफलता के चरम पर था, अपनी नैया को मंझधार में झिंझोड़कर और उन्नत हो सकता था; यदि वे नयी टेक्नॉलॉजी में विश्वास करते, उसका मूल्य समझते व उसे अपना लेते। किन्तु वे अपने दम्भ व नयी टेक्नॉलॉजी को न पहचान पाने के कारण इतनी तेजी से सूखे कि दुबारा पनप न पाये। यदि आपने शीर्ष पर रहते हुए अपनी दिशा नहीं बदली तो वह दिन दूर नहीं जब कोई आपको धरती पर पटक देगा।

काश! एम्बैसेडर, दूरदर्शन व स्विस घड़ी निर्माताओं को इस क्रांति का पूर्वानुमान हो गया होता और उन्होंने अपनी चाल बदल ली होती।

थोपे जाने से पहले परिवर्तन ले आयें

प्रत्येक परिवर्तन अपने साथ बहुत सा भय, असुरक्षायें, कठिनाईयाँ, दुख:, त्याग व जोखिम लेकर आता है। जब आप अपनी सफलता के शीर्ष पर होते हैं और बदलाव का निर्णय लेते हैं तो आपको कम से कम दु:ख व कठिनाईयों का सामना करना पडता है; क्योंकि जिस परिवर्तन का आपने आरम्भ किया है, उसकी पहल भी आप ही ने की व संचालन भी आप ही कर रहे हैं। यह मार्केट द्वारा संचालित नहीं है; यह आप पर थोपा नहीं गया है। यदि बदलाव थोपा गया हो तो आपकी आधी उर्जा व प्रतिबद्धता तो बदलाव का विरोध करने में खर्च हो जाती है। नये विचार को 'ना' कहते ही आप उसके पूरे प्रभाव को अनुभव करने से वंचित हो जाते हैं और उसकी शक्ति से अप्रभावित ही रह जाते हैं। सबसे बड़ी बात आप मौके का फायदा उठाने से चूक जाते हैं। अत: बदलिये! इसके पहले कि आपको बदलना पड़े।

एक आम आदमी सफलता के चरम पर पहुँच कर यथास्थिति बनाये रखने का प्रयत्न करता है आपको कोई बिरला ही मिलेगा जो ऊँचाई पर पहुँच कर उथल पुथल मचाये। जब बुरा समय शुरू होता है, उत्पाद अस्वीकृत हो जाते हैं; टीम बिखर जाती है और व्यापार नीचे जाने लगता है। ऐसे में स्वस्थ दिमाग वाला कोई भी व्यक्ति अपने बचाव के उपाय ढूढ़ेगा; किन्तु सफलता के शीर्ष पर होते हुए व्यापार व उससे संबंधित विचार धारा में मौलिक परिर्वतन लाना, उन्नयनित जीवन जीने वालों का ही गुण है।

15 अप्रैल 1955 को जब रेक्रॉक ने मैकडॉनल्ड भाइयों से मैकडॉनल्ड का नेशनल फ्रैंचाइज़ खरीदा, वे एक सम्पन्न व्यक्ति थे; आराम का जीवन जी रहे थे। किन्तु 52 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने जीवन, करियर और सम्पत्ति को दावं पर लगाया व मैकडॉनल्ड को खरीदा; उन्हें इस व्यापार के विचार में पूरा विश्वास था। उन्होंने सालों अमेरिका की सड़को की धूल छानी लेकिन हिम्मत नहीं हारी क्योंकि वे अपने स्वप्न को साकार करना चाहते थे। इस प्रक्रिया में उन्होंने अपनी नैया को बीच समुद्र में अपनी जीवन की पूरी कमाई से झिंझोड़ा और वह भी तब, जब वे अपने करियर के शिखर पर थे।

टोयोटा कम्पनी की 'क्वालिस' सफलतापूर्वक चल रही थी और 8000 युनिट प्रतिमाह बिक रहे थे – जो कि एसयूवी गाडियों की बिक्री का आज तक का सबसे ऊँचा कीर्तिमान है। किन्तु तभी उन्होंने 'क्वालिस' का उत्पादन रोक कर 'इनोवा' का उत्पादन आरम्भ कर दिया।

यदि इनोवा फेल हो गई तो? यदि ग्राहकों ने इसे नापसंद कर दिया तो? क्या वे क्वालिस को दोबारा बाजार में ला पायेंगे? यदि तब तक क्वालिस की मांग भी समाप्त हो गई, तो क्या वे मार्केट को फिर से जीत पायेंगे? यदि किर्लोस्कर, टोयोटा के भारतीय मालिक इन विचारों से घिरे होते तो इन दोनों उत्पादों ने टोयोटा को जो गर्जन दिया वह कभी भी संभव न हो पाता, जी

हाँ, बाज़ार में मात, असफलता, इनोवा का मार्केट में न चल पाना और फिर क्वालिस को पुर्नजीवन न दे पाना यह सब कुछ हो सकता था। लेकिन टोयोटा ने अपनी नाव को बीच समुद्र में झिंझोड़ा –जब क्वालिस अपनी सफलता के उत्कर्ष पर थी और इसका परिणाम सभी ने देखा।

ये सारे निर्णय जो इन संगठनों व प्रत्येक व्यक्ति ने लिये, अनुसंधानित व सुविचारित थे। इनमें कोई भी मात्र अंर्तःचेतना पर आधारित नहीं था। यदि रेक्रॉक किर्लोस्कर टोयोटा और उनके जैसे हजारों अन्य लोगों ने ये साहसिक निर्णय न लिये होते, ये जोखिम व चुनौतियाँ न उठाई होतीं तो वे आज भी अपना व्यवसाय सफलतापूर्वक चला रहे होते व व्यक्तिगत जीवन फल–फूल रहा होता; किन्तु जो मानसिक शक्ति, चरित्र, आत्म–विश्वास व जीवन की समझ उन्हें इन अनुभवों को जीते हुई मिली उससे वे वंचित ही रहतें।

चाहे आपको अपने संगठन के ढांचे में बदलाव लाना हो, या नये अथवा पुराने मार्केट में कोई नया उत्पाद लाना हो, या उचित कार्यान्वियन के अभाव में कम्पनी के उच्चतम अधिकारियों को काम से निकालना हो, या अपनी जमी–जमाई नौकरी छोड़ कर कोई नया व्यवसाय आरम्भ करना हो, या अपना 29 वर्षों का ब्रम्हचर्य त्याग कर विवाह करना हो, या अंर्तराष्ट्रीय बाजार में उतरना हो, या किसी कम्पनी का अधिग्रहण करना हो या अपनी पुरानी निष्ठावान मारुति 800 को विदा करना हो; यह एक प्रक्रिया को छोड़कर नयी प्रक्रिया को आरम्भ करना ही है .... यह तब करें जब आप सफलता के शीर्ष पर हों, जब आपके पास हर सुख–सुविधा हो, जब आप सब कुछ हार सकते हों; यह एक जुआ है, दांव लगायें।

कॉरपोरेट ट्रेनिंग के अपने पेशे में मैं शीर्ष पर था, जब मैंने अपनी नैया को झिंझोड़ा और कॉरपोरेट ट्रेनिंग को नमस्कार कह दिया। मैं उद्योग का चहेता था। चाहे वह वोडाफोन तब का नाम हचिसन, मैक्स, ऑरेंज हो या एशियन पेंट्स, कोका–कोला या प्रॉक्टर एण्ड गैम्बल, हिन्दुस्तान लीवर या महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, फोर्ड या ह्युडंई, स्टैंडर्ड चाटर्ड बैंक या सोडेक्सो–पास, आइटीडब्लयू सिगनोड या न्युहॉलैंड ट्रैक्टर्स, एलआयसी या बिरला सन लाइफ, मैक्स न्यूयॉर्क लाइफ या मैटलाइफ, अवीवा लाइफ इंश्योरेंस या रिलायन्स लाइफ, डीएलएफ या एचडीएफसी या आयसीआयसीआय या टाटा स्काई, युटीआई या कोटक लाइफ, पारस फार्मास्युटिकल्स या सेंट गोबेन, टाटा एआयजी या ब्लोप्लास्ट, एयरटेल या एचएसबीसी, आयन एक्सचेंज,या स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एसकेएफ बियरिंग्स या फिलिप्स, टाटा मोटर्स या सोनी। चाहे वह सेल्स ट्रेनिंग रही हो या लीडरशिप, बड़े ग्राहकों को संभालना– अकाउण्ट मैनेजमेन्ट हो या नैगोसिएशंस का कौशल, चेंज मैनेजमेन्ट (परिवर्तन प्रबंधन) या पीपल मैनेजमेन्ट (लोगों का प्रबंधन) का कौशल, संप्रेशन या प्रस्तुतिकरण का

कौशल, कस्टमरकेयर या क्वालिटी सर्विस (गुणवत्तापूर्ण सेवाएं), मैं सर्वाधिक वांछित प्रशिक्षक था। जिसकी जड़ें जमीं हुई थीं, जिसके संबंध सभी जगह थे, जो जाना-माना था और सहज था।

मुँह जबानी फैला हुआ मेरा प्रचार इतना प्रभावशाली था कि मैं पूरे वर्ष के लिये अनुबंधित था। आने वाले दो वर्षों के लिये मेरे कार्यक्रम तैयार थे और मेरे पास छः माह की प्रतीक्षा सूची भी थी। मैं उत्कर्ष पर था, तब मैंने कॉरपोरेट प्रशिक्षण से विदा लेकर एमएसएमसी के (लघु सूक्ष्म और मध्यम उद्यम) क्षेत्र में प्रवेश किया। मैंने कॉरपोरेट जगत की चमक-दमक को नमस्कार किया और कोका-कोला व यूनीलीवर की दुनिया छोड़कर मैं स्पारटन इंजीनियरिंग, श्री गणेश स्टोर्स, सांई फास्टनर्स, चीनू ट्रेवल्स, सनी एडवरटाईजिंग, लोकेश ज्वेलर्स की दुनिया में आ गया। ये ऐसे प्रतिष्ठान थे जिनका नाम उनके मालिकों व कर्मचारियों के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था, ये ऐसी कम्पनियां थी जिन्हें संसार तो क्या भारत, महाराष्ट्र, मुम्बई, अंधेरी, जे.पी. रोड़, जे.पी. रोड़ स्थित आकृति आर्केड या उसकी पांचवी मंजिल पर भी कोई नहीं जानता था, यहां तक कि आकृति आर्केड के 504 नम्बर के ब्लॉक में बैठे हुए व्यक्ति को यह पता नहीं था कि 506 नम्बर में आपका प्रतिष्ठान है।

मैं कॉर्पोरेट ट्रेनिंग के चमक-दमक, वैभव व फैशनेबल अंदाज़ को छोड़कर, 5000-50000 करोड़ रूपये वाली कम्पनियों को छोड़कर, 50 लाख - 5 करोड़ रूपये वाली कम्पनियों पर उतर आया था मैंने मंझधार में पहुंचकर अपनी नाव को झिंझोड़ लिया था। बदलाव में साथ आने वाले सभी दुःखों व आपत्तियों तथा त्याग व बलिदानों से मैं फिर गुजरा और यह मेरा पहला परिवर्तन नहीं था, मैं पहले भी कई बार अपनी नाव को झिंझोड़ चुका हूँ और मुझे इतना अभ्यास हो गया है कि आज यह मेरे डीएनए का, मेरे अवचेतन का, मेरी आत्मा का, मेरी शैली का व मेरे जीवन का भाग बन चुका है।

इस परिवर्तन के लिये मैंने नाव को बीच समुद्र में झिंझोड़ने की चारों शर्तें पूरी की:

१. **असतत के दर्शन में विश्वास-** स्थितियों के बदलने से भंग होने से मुझे परेशानी नहीं हुई। निरन्तरता से प्राप्त होने वाले सुख व आनन्द को मैं हमेशा छोड़ता रहा हूँ।

२. **ग्यारण्टी की अपेक्षा न करें-** मैंने कभी किसी से न तो अपनी सफलता की ग्यारण्टी मांगी और ना ही सबकुछ ठीक हो जाने का आश्वासन। मैंने कभी अपनी जीवन शैली कायम रख पाने की चिन्ता नहीं की। बीच मंझधार में होते हुए इस तरह की अपेक्षाएं एक पागल ही कर सकता है। बीच मंझधार में केवल एक चीज की ग्यारण्टी होती है और वह है मौत। और मैंने हमेशा

मृत्यु को अपने सामने रखकर अपनी नाव को झिंझोड़ा। मेरा पूर्ण विश्वास है कि एक बार मरने के बाद आपको कोई चिन्ता नहीं करनी, क्योंकि तब सब कुछ समाप्त हो जाता है। आप न तो कुछ स्मरण कर पायेंगे न कोई पछतावा......ठीक है!

३. अनुमोदन की अपेक्षा न करें– मैंने कभी किसी से अपने कार्यों की पुष्टि नहीं मांगी और ना ही अनुमोदन। जब भी आप कुछ नया निम्न और बेहतर कर रहे होते हैं, आप अकेले होते हैं। एकाकी होना ही आपकी विशिष्टता है।

★ आप एक मूर्ख मनुष्य लगेंगे, इसे स्वीकार करें।

★ आपको ताने मारे जायेंगे, उनका सामना करें।

★ आपकी हंसी उड़ायी जायेगी, उड़ाने दो।

★ आपसे प्रश्न पूछे जायेंगे, उनसे चिंतित न हों।

★ आप आत्म–संदेह की स्थिति में रहेंगे, उस में बने रहें।

आपको कोई अनुमोदन या पुष्टि नहीं मिल पायेगी क्योंकि आपका मूल्यांकन करने हेतु कोई मापदण्ड नहीं है। इस राह पर अभी तक कोई नहीं चला है। यह तैयार रास्ता नहीं है इसे आप बना रहे हैं। आप एक अनजाने क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। अनुमोदन मांगने की मूर्खता न करें।

4. सफलता के शीर्ष पर जीवन नैया को झिंझोड़ें– पद खोने का भय मुझे कभी नहीं रहा, अत: मैंने सफलता मिलने पर ही अपनी नाव झिंझोड़ी। यह वह अवधि होती है जब मैं प्रयोग कर सकता हूँ, गल्तियाँ कर सकता हूँ, दुःख व कठिनाईयों से लड़ने का साहस, समय व अवसर मेरे पास होता है – इससे पहले कि यह सब मुझ पर थोपा जाये या मुझे करना पड़े।

नैया को हिलाना–डुलाना या झिंझोड़ना कुछ लोगों के स्वभाव में ही होता है, किन्तु कुछ अन्य को उसे अपने मानस का भाग बनाने के लिये मेहनत करनी होती है। जब तक आप सुरक्षा व सुख के दायरे में रहते हुए ही कार्य करते रहेंगे, आप अपनी जीवन नैया को नहीं झिंझोड पायेंगे और जब तक आप यह नहीं करेंगे, जीवन उन्नयनित नहीं होगा।

नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग यह लिखने के लिये करें कि आप अपनी जीवन नैया को कैसे झिंझोड़ेंगे अर्थात् जो चीजें आप छोड़ देंगे;

वे कदम जो आप किसी ग्यारण्टी अथवा अनुमोदन की अपेक्षा किये बिना उठाने वाले हैं; और वे निर्णय जो आप सफलता के शीर्ष पर लेने वाले हैं।

क्रमांक	आप जीवन नैया को कैसे झिंझोड़ेंगे?	समय सीमा

इस अध्याय के अन्त में स्वयं से किया वायदा।

अपने जीवन को जीवनपर्यन्त सार्थक व उन्नयनित बनाये रखने के लिये आपको यह आज्ञा निर्देश, आदेश, प्रभु का नियम, यह कमांडमेंट अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघण्टे, प्रति मिनट स्वयं को देना होगा।

कमांडमेंट
4

स्वायत्त बनें आज ही अपना संविधान घोषित करें

जो मनुष्य स्वायत्त हैं, वे ही साहस कर पाते हैं;
साहसिक होना जीवन-उन्नयन के लिये ज़रूरी है।

---

26 जनवरी 1950 को भारत की स्वतन्त्रता के तीन वर्ष बाद भारतीय संविधान की मसौदा समिति ने डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की अध्यक्षता में भारत का संविधान तैयार किया व इसके द्वारा ऐसे बुनियादी नियम तय किये जिनसे भारत एक लोकतान्त्रिक गणराज्य के रूप में काम कर सके; जैसे कि एक प्रधानमंत्री की नियुक्ति, संसद की स्थापना, चुनाव, लोकतान्त्रिक संस्थाओं के अन्तर्गत कार्य करना व एक स्वतन्त्र राष्ट्र का समस्त शासन चलाना।

प्रत्येक संविधान का मुख्य कार्य व विशेषता यह है कि वह आपको एक तैयार ढांचा दे देता है जिसके अन्तर्गत आप कार्य कर सकें, यह आपके जीवन को दिशा देता है और आपको गिरावट व विनाश से बचाता है। डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ने एक ऐसा ही ढांचा हमारे देश के लिये तैयार किया। धीरुभाई अम्बानी (भारत के सर्वाधिक सम्मानित उद्योगपतियों में से एक) ने एक संविधान स्वयं के लिये बनाया। आपको भी अपने लिये एक संविधान बनाना होगा यदि आप जीवन को उन्नयनित करना चाहते हैं।

आपको जन्म लिये कितने वर्ष बीत चुके हैं और आप अभी तक अपने संविधान की घोषणा किये बिना ही जी रहे हैं?

जीवन उन्नयनित करने हेतु स्वायत्त बनें
अपने संविधान की घोषणा करें –आज ही।

मुझे सदा ही 'भय' के दर्शन में विश्वास रहा है। संसार को आपसे डरना चाहिए। मेरा तात्पर्य है, सम्मानपूर्ण भय। शायद इसने आपको परेशान कर दिया? सम्मानपूर्ण भय आतंकित भय का उलटा है। किसी डाकू या गुण्डे या ठग का आपकी गर्दन पर चाकू रख देना है, या आपके सिर पर बंदूक तान देना; आतंकित भय को जन्म देता है – आपको बलपूर्वक डराता है। इस प्रकार का भय, पदों द्वारा, चिल्लाकर, क्रोध द्वारा या अपने से नीची स्थिति या निम्न पदवाले लोगों पर दादागिरी या बदमाशी से भी पैदा किया जा सकता है।

सम्मानपूर्ण भय व्यक्तिगत होता है, यह प्रशंसायुक्त सम्मान है, यह एक व्यक्तिगत प्रशंसा व आदर है। वह स्वयं को शीर्ष पर रखने का तरीका है; इससे आप संसार के विघ्नों से स्वयं को बचाए रखते हैं उन्हें आपके जीवन में उथल-पुथल करने व आपको परेशान करने की अनुमति नहीं देते हैं। यह आपके व संसार के बीच एक दूरी बनाये रखता है। सम्मानपूर्ण भय स्वायत्तता से उपजता है और जीवन यापन के लिये यह अनिवार्य, आवश्यक, बाध्यकर व आदेशित भी है।

स्वायत्त को अंग्रेजी शब्द Autonomous दो शब्दों के मेल से बना है।

Auto ऑटो अर्थात् Self एवं

Nomous नॉमस अर्थात् Laws नियम

जीवन एक अप्रत्याशित खेल है। हर एक के अनुभव भिन्न हैं और इस गतिशील संसार में किसी अन्य के बनाये गये नियमों व कानूनों के साथ चलना या उन्हें अपने जीवन में चलाना असंभव है। आप किसी अन्य के दृष्टिकोण या विचारों की बलि नहीं चढ़ सकते। अपनी क्षमताओं को उन्नत करने के लिये आपका स्वरचित, स्वसंविधानित व स्वनिर्मित होना आवश्यक है; आपको एक ऐसी स्थिति में होना चाहिए जहाँ आप स्वयं में स्वतन्त्रता व विश्वास का अनुभव करें। आप के नियम स्वयं आप ही के बनाये हों – आप स्वायत्त हों।

उन्नयनित–जीवन वाले मनुष्य स्वायत्त होते हैं। वे न तो अन्यों के अधीन होते है और ना ही बाह्य ताकतों से नियन्त्रित; इसके बजाय वे स्वनिर्देशित, स्वशासित व स्वतन्त्र लोग होते हैं, जो अपनी शर्तों पर जीवन जीते हैं।

उनके पास प्रत्येक वस्तु के लिये नियम होते हैं और वे नियमों को लेकर कभी समझौता नहीं करते; वे केवल खुद के बनाये मापदण्डों के अनुरूप चलते हैं; उनका एक संविधान होता है, जो इन सभी नियमों को परिभाषित करता रहता है और फिर वे समय–समय पर प्रगतिशील संशोधन कर संसार में उनकी घोषणा करते हैं।

उदाहरण के लिये मेरे सभी ग्राहक, सहकर्मी और मित्र जानते है कि मैं केवल पेशगी–मेहनताना मिलने पर ही काम करता हूँ, इसका अर्थ है कि यदि ऐसा कोई व्यक्ति जो पूरा पैसा पेशगी देने में हिचकिचा रहा है वह मेरी या मेरी कम्पनी की सेवाएं नहीं ले सकता। मैंने स्वयं को, मेरी कम्पनी को इतना सख्त जिम्मेदार व योग्य बनाया है कि अपने ग्राहकों के निवेश के बदले उन्हें दुगने व अद्वितीय परिणाम दे पायें और फिर पूरे संसार को इसके पालन में प्रवृत्त कर सकें। (यह मेरा स्व–नियम है; मैंने इसे अपने जीवन के संविधान में लिखा है, इसे संप्रेशित किया है, विज्ञापित किया है, घोषित किया है ताकि संसार इसका पालन कर सके।

दुनिया जानती है कि मैं समय के पालन में हठधर्मी हूँ और मैं देर से आने वाले किसी भी व्यक्ति की प्रतिक्षा नहीं करता। जिन दिनों मैं यूरेका फोर्ब्स में ब्रांच मैनेजर था, मैं अपनी ब्रांच के सेल्स की टीम के साथ प्रत्येक शनिवार को एक बैठक रखता था। हमारे उस समय के मैनेजिंग डायरेक्टर मेरी एक बैठक में भाग लेना चाहते थे। मेरी इन बैठकों को लोग उग्र, कठोर, व किसी दूसरी दुनिया की रचना मानते थे; ये बैठकें पागलपन, जूनून और और प्रेरणा से भरपूर होती थी। कम्पनी का एमडी होने के नाते वे मेरी इन बैठकों के बारे में जानते थे

और उनके असर से विस्मित भी थे; यही करण था कि वे एक बैठक का अनुभव लेना चाहते थे।

मेरे जीवन का एक स्वायत्त नियम था– एक स्व–निर्मित नियम कि मेरी बैठकें सही समय पर आरम्भ हो जायेंगी और इस बैठक का समय दोपहर 01:30 बजे था। मैंने उन्हें अपनी बैठक के समय की सूचना दे दी थी और प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि एक बार बैठक आरम्भ होने के बाद भगवान भी उस कमरे में नहीं आ सकता था। उन्होंने समय से पहले पहुंच जाने का वायदा किया; वे एक सिद्धांतो वाले व्यक्ति थे और अपनी हर वचनबद्धता के लिये हमेशा समय पर पहुंचते थे। उस शनिवार पूरी ब्रांच–अकाउण्टेंट्स, सेल्स के लोग, ग्राहक सेवा–दल और सुरक्षाकर्मी सभी विशेष सावधान थे; क्योंकि वे कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे। वे कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर थे।

हम सभी कमरे में पहुँच गये– मेरे सेल्स वाले 29 लड़के और उनके लीडर; 1:30 बजने ही वाले थे ठीक डेढ़ बजे मैंने दरवाजा बंद कर दिया व अपनी बैठक आरम्भ कर दी। वे 1 बजकर 34 मिनट पर पहुँचे और देखा दरवाजा बंद था, उन्हें दुःख हुआ कि वे बैठक में भाग नहीं ले पाये, व्यक्तिगत तौर पर उन्होंने मेरे संकल्प की प्रशंसा की।

यहाँ मैं एक भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी की चर्चा करना चाहूँगा जिन्होंने अपनी सेवाकाल की पूरी अवधि में स्वनियमों का पालन किया व स्वयं को स्वायत्तता का पर्याप्त सिद्ध किया– जी हाँ –किरण बेदी। वे सन् 1972 में आयपीएस में आयीं व सन् 2007 में सेवानिवृत्त हुईं। उन शानदार 35 वर्षों के दौरान वे पहली महिला पुलिस अधिकारी रहीं जिसने पुलिस सेवा में उच्चतम पद पर कार्य किया। उन्होंने अपनी अभिनव किन्तु प्रभावकारी कार्यशैली का प्रयोग कर लोगों से सफलतापूर्वक कानून का पालन करवाया। इसकी वजह से जहाँ एक ओर तो उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी आशातीत सफलता मिली, वहीं दूसरी ओर उन्हें इसी कारण एक विभाग से दूसरे में कई बार त्वरित स्थानान्तरण भी मिला।

उन्होंने जिला पुलिस, यातायात पुलिस, नारकोटिक्स नियन्त्रण ब्यूरो, होमगार्ड, सिविल डिफेंस, संयुक्त राष्ट्र नागरिक पुलिस सलाहकार, आदि विभिन्न विभागों में काम किया। इनमें से प्रत्येक जगह उन्होंने अपने साहसी व हिम्मतपूर्ण कार्यों से लोगों को अचंभित किया, इन कार्यों में भारत के प्रधानमंत्री की, नो पार्किंग क्षेत्र में खड़ी कार को पकड़ना भी शामिल है। उनको मिली प्रशंसा व वाहवाही उनके स्व–नियमों को उजागर करती है, जिन्होंने सदा उन्हें साधारण आयपीएस अधिकारियों से उंचे पायदान पर रखा। वे मात्र एक आयपीएस अधिकारी ही नहीं रहीं, अपितु एक स्वायत्त, जीवन उन्नयनकर्ता थीं।

उनके एक कार्यकाल के दौरान जब वे इंस्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिज़न थीं, किरण बेदी ने जेल की सजा के सिद्धान्त में ही क्रान्ति ला दी। उन्होंने तिहाड़ जेल के जो कि अपने खतरनाक व बदनाम कैदियों के लिए प्रसिद्ध है कैदियों में बदलाव लाने का बीड़ा उठाया। उनका विश्वास था कि इन अपराधियों व हत्यारों को – जिनके बारे में माना जाता था कि इनमें कोई मानवीयता व स्वस्थ मानसिकता नहीं बची है – सही राह पर लाया जा सकता है। उन्होंने जेल में ही एक से दस दिन का विपश्यना का कार्यक्रम (ध्यान व मौन) चलाया – यह एक ऐसा काम था जो उनके विश्वास, हिम्मत और महानता की ओर इशारा करता है।

यह कार्यक्रम कहाँ चलाया जाएगा, इस दौरान कैदियों के होते सुरक्षा व नियंत्रण की क्या व्यवस्था होगी, यदि इस बीच इनमें से किसी ने अनियंत्रित हो भागने का प्रयत्न किया और उससे जेल में दंगे हो गये तो; बुनियादी ढाँचा व अन्य सुविधाएँ, भोजन, स्थान और सैकड़ों अन्य चीजों की योजना व रुपरेखा तैयार करने की आवश्यकता थी।

इस कार्य के लिए पहले से कोई ढाँचा तैयार नहीं था। कोई उदाहरण नहीं थे। जैसा कि सही कहा गया है, कोई भी महान सफलता पारम्परिक प्रतिरूपों का अनुसरण करने से नहीं मिली है। किसी भी विश्वव्यापी समूह का निर्माण साधारण क्रियाकलापों से नहीं हुआ है, कोई भी युद्ध जान–माल की रक्षा करने वाले उपायों से नहीं जीता गया है और किरण बेदी स्व–नियमों से निर्मित महिला थीं। उन्हें अपारम्परिक कार्यों में विश्वास था और उन्होंने यह क्रांति लाने के लिए स्वयं को निर्देशित किया था। उन्होंने अपने ढाँचे स्वयं बनाये। उन्होंनें अपने उदाहरण स्वयं रचे और ऐसे चमत्कार किये कि आने वाली पीढ़ियाँ उनका अनुसरण करना चाहती हैं।

ऐसे ही एक ओर व्यक्ति थे, धीरुभाई अम्बानी, जिनका जीवन स्वायत्ता और स्वनियमों पर आधारित था।

एक मध्यवर्गीय गुजराती परिवार से संबंध रखने वाले धीरुभाई एक शिक्षक के पुत्र थे। उनके पिता गांव के स्कूल में पढ़ाते थे और स्वयं उन्होंने अपना जीवन आरम्भ किया सन् 1950 में, अदन के एक अरबी व्यापारी के यहाँ एक छोटी नौकरी करते हुए। उन्होंने इस अदना सी शुरुआत के बावजूद भारत के निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी कम्पनी खड़ी की– रिलायंस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड। उनके संघर्ष को एक ही नियम ने नियंत्रित किया, वह था “मैं जो भी करूंगा वह विशाल होगा, विश्वस्तरीय होगा और अपने आप में अनूठा होगा”; और अपने रचे इस संविधान के प्रति पूरी निष्ठा रखते हुए उन्होंने जो भी किया वह अतुल्य था। चाहे वह आम भारतीय को शेयर बाजार का रास्ता दिखाना हो, या जामनगर में विश्व की सबसे बड़ी तेल रिफाइनरी की स्थापना कर उस शहर की पहचान को “पीतल के शहर” से “भारत का तेल का शहर” में परिवर्तित कर, जामनगर जैसे

छोटे शहर को राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धी दिलाना हो, या लगभग 25 करोड़ रूपये खर्च कर रिलायंस कम्पनी में आप्टिक फाईबर लाना हो या देश के इतिहास में कम्पनियों का अब तक का सबसे बड़ा समूह बनाना हो, इनमें से प्रत्येक प्रयत्न विश्वस्तरीय था, अपनी तरह का पहला था और जीवन से कहीं बड़ा था। उनका प्रत्येक कार्य गति, उत्कृष्टता और असंभव के क्रियान्वयन का प्रतीक हैं– धीरुभाई के जीवन को निर्देशित करने वाले ये सिद्धांत आज रिलायंस के संविधान हैं।

अनूठे कार्य जो अब तक किसी ने न किये हों, करने के लिये, आवश्यक है कि मनुष्य के पास साहस, आत्मविश्वास व विचारों व कर्मों की स्वतन्त्रता हो। आपका स्वायत्त व्यवहार आपके आसपास के संसार के.उन्नयन में सहायता करता है। सम्मानपूर्ण भय जो कि स्वायत्तता की ही देन है, आपके व आपके चारों ओर मौजूद कौशल व योग्यता के उपयोग के दरवाजे खोल देता है – यहीं से लोगों को वह सब कुछ कर डालने की प्रेरणा मिलती है जिसे वे असम्भव मानते थे।

आप अन्य लोगों की उन्नति व विकास का कारण बन जाते हैं। आप लोगों को ऐसे काम करने के लिये प्रेरित करते हैं जो उन्हें अचंभित व हतप्रभ कर देते हैं; वे स्वयं को उन्नयनित करते हैं क्योकि आप 'स्वायत्त' थे और हैं।

अपने स्वनियम लिखें,

स्व–नियम क्यों आवश्यक हैं?

स्व–नियम लोगों को नियमों व अधिनियमों का एक ऐसा तन्त्र देते हैं जो उन्हें ईमानदार व न्यायसंगत जीवन जीने की ओर निर्देशित करता है। इस तंत्र की अनुपस्थिति में लोग अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिये अनुचित तरीकों का चयन कर लेते हैं; जैसे रिश्वतखोरी, धोखा, भ्रष्टाचार आदि। वे ऐसे छोटे रास्ते अपना लेते हैं, जो उन्हें एक लम्बे समय बाद प्रतिकूल परिणाम दे सकते हैं। कुछ ऐसे लोग हैं जिनके सार्थक व उन्नयनित जीवन जीने की प्रबल सम्भावना थी व जिन्होंने जीवन में अवश्य सफलता पाई होती यदि वे स्वयं के ही अवांछित व नकरात्मक व्यवहार का शिकार न हो गये होते। उदाहरण के लिये वे प्रतिभावान क्रिकेट खिलाड़ी जिन्होंने मैच–फिक्सिंग जैसे शर्मनाक कार्यों में भाग लेकर अपना करियर चौपट कर लिया या वे खिलाड़ी जिन्होंने किसी अपमानजनक व निदंनीय कृत्य से स्वयं को जोड़ लिया। स्वनियमों की अनुपस्थिति ने उनके उन्नयन का गला घोंट दिया।

चाहे भ्रष्टाचार, कर–चोरी जैसे बड़े नैतिक मुद्दे हो या फिर छोटे दिखने वाले अपराध, जैसे शराब के नशे में गाड़ी चलाना, यातयात नियमों का पालन न करना आदि। यदि व्यक्ति स्वयं के संविधान की घोषणा कर देता है व उसके अनुरूप जीने लगता है तो उसका जीवन सही राह पर बढ़ चलता है।

अपने जीवन को जीवनपर्यन्त सार्थक व उन्नयनित बनाये रखने के लिये स्वयं को यह आज्ञा, निदेश, आदेश, प्रभु का नियम, यह कमांडमेंट अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिमिनट देना होगा–

स्वायत्त बनें, आज ही अपना संविधान घोषित करें।

कमांडमेंट
5

घोषित करें: मेरे चारों ओर का प्रत्येक संसाधन उन्नयनित होगा।

जीवन उन्नयन की विशेषता है कि यह आपको अपने आसपास के सभी मनुष्यों के अब तक के अनछुए, भीतरी–स्व को खोजने में मदद करता है।

हम एक प्रौद्योगिकीय संसार में रहते हैं; एक ऐसा संसार जहाँ निरन्तर नयी खोजें हो रही हैं। किन्तु प्रत्येक नयी खोज व प्रत्येक नया रास्ता, मनुष्य के आत्मविश्वास व उनके भविष्य, अस्तित्व व जीवन की निरंतरता के बोध को क्षीण कर देता है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन और अधिक अप्रत्याशित होता जा रहा है। हमारे चारों ओर अशांति व उथल-पुथल का साम्राज्य है। जीवन में किसी भी क्षेत्र में स्थायित्व नहीं है; चाहे वह आमदनी हो या रोजगार, रहन-सहन का स्तर हो या विचार, लोग व उनकी निष्ठा, या फिर जीवन। पूरे संसार में सरकारें मानव समस्याओं के समाधान ढूंढने में लगी हैं; किन्तु उनके पास प्रौद्योगिकी द्वारा रचित इस संकट का कोई रचनात्मक हल नहीं है।

मनुष्यों को उनके व्यक्तित्व को अनदेखा कर एक वस्तु के रूप में देखा जाता है और लोगों की अपनी संवेदनशीलता कम होती जा रही है, व दूसरों के प्रति प्रेम, चिन्ता व अनुराग तो जाने कहां खो गया है। प्रौद्योगिक उपकरणों प्रक्रियाओं, मैन्युअल्स, प्रोसिजर्स व साफ्टवेयर आदि का मूल्य मनुष्यों से कहीं अधिक है। उस मानवीय स्पर्श का नितान्त अभाव है और यहीं आकर विकास, रचनात्मकता व परिवर्तन की संभावना समाप्त हो जाती है।

तो क्या इस सब के लिये टेक्नालॉजी ही दोषी है? क्या प्रौद्योगिकी ही हमें असंवेदनशील बना रही है? क्या हमारा मनुष्यों पर विश्वास कम होता जा रहा है, क्योंकि हम पीड़ित हैं- प्रौद्योगिक अन्धत्व से? एक रोग जो हमें मानवीय संबंधों का रस नहीं लेने देता। क्या अपने निकट के लोगों में हमारी रुचि, उनसे हमारा सम्पर्क व उनके प्रति हमारी संवेदना समाप्त होती जा रही है? हमें किस संस्कृति को अपनाना चाहिए, भारतीय, अमेरिकी, ब्रिटिश, तमिल या फिर गुजराती? और हम इससे परेशान क्यों है?

एक गुजराती लड़का एक चीनी मुसलमान लड़की से विवाह करता है, अमेरिका चला जाता है; वहां पांच वर्ष काम करता है और फिर पेरिस में बस जाता है। उसे कौनसी संस्कृति अपनानी चाहिए - गुजराती या बहुलता व विविधता से पूर्ण भारतीय संस्कृति? क्या उसे चीनी संस्कृति अपनानी चाहिए या फिर मुसलमानी और वह भी जैसी चीन में मानी जाती है? क्या उसे अमरीकी संस्कृति अपना लेनी चाहिए? या गुजराती-अमरीकी, चीनी-मुसलमानी संस्कृति, गुजराती- अमरीकी-चीनी-मुसलमानी-फ्रेंच-पेरिस संस्कृति पूरे संसार के लोग इसी तरह की दुविधाओं से घिरे हैं।

हम एक ऐसे नये संसार में रह रहे हैं जहां प्रतिदिन, प्रतिघंटे, काम करने, व्यापार करने, बातचीत करने, संप्रेशन के और जीने के नियमों को चुनौती दी जा रही है; और नये नियम रचे जा रहे हैं। अपने जीवन व भविष्य पर हमारी पकड़ कमजोर होती जा रही है। किसी समय, संयुक्त परिवार, समुदाय-धर्म व

राजनीतिक संस्थाऐं हमें अपनी क्षमताओं को खोजने का संबल देती थीं; किन्तु आज ये सभी संस्थाऐं पूरी तरह से विघटित हो चुकी हैं। आज काम पाना एक संघर्ष है, लेकिन क्या लोग एक जगह पर जम पा रहे हैं? दीर्घकालिक सम्बन्ध दुष्प्राय हैं, राष्ट्र बिखर रहे हैं, सीमांऐं भंग हो रही हैं, हमारे चारों ओर प्रत्येक चीज विघटित हो रही है, आज सभी कुछ संगत व अप्रासंगिक लगता है।

जी हां यही वास्तविकता है कि हम कभी इतने निराशवादी नहीं रहे। हम अपने आसपास की प्रत्येक वस्तु को ले कर निरन्तर बैचेन रहते हैं, निरन्तर परेशान रहते हैं हम एक आवेगपूर्ण हड़बड़ी में रहते हैं और तेजी से सभी कुछ पा लेना चाहते हैं, हमारी प्रतिक्रियाओं में तेजी है और कार्यों में भी; और यदि यही वास्तविकता है तो इससे जुड़ा एक और यथार्थ भी है कि इन सारी परेशनियों, दुविधाओं व अनिश्चितताओं के बीच ही हमारा जीवन है, और हमें इस जीवन को उन्नयन्ति करना है; हमारे कुछ लक्ष्य हैं, जिन्हें पाना है; कुछ गन्तव्य हैं, जहां पहुचना है; कुछ अपेक्षाऐं हैं, जो पूरी करनी हैं; एक भविष्य है, जिसे प्राप्त करना है। हमारे चारों ओर मानव हैं जिन्हें उन्नयनित करना है।

"स्वयं में लिपटा हुआ मनुष्य एक छोटे पुलिंदे से अधिक नहीं"

–बेंजामिन फ्रैंकलिन

जैसा कि कहा जाता है अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, एक अकेला पत्ता किसी को छाया नहीं दे पाता, सीटी बजाकर एक धुन तैयार की जा सकती है, लेकिन उसे बजाने के लिये पूरे वाद्यवृन्द की आवश्यकता पड़ती है।

आप एक अच्छे व्यवसायी हो सकते है, किन्तु आप अकेले इस संगठन का निर्माण नहीं कर सकते हैं। आप एक योग्य व मेधावी चिकित्सक हो सकते हैं किन्तु अकेले ही एक अस्पताल नहीं बना सकते। आप एक प्रतिभावान वास्तुकार हो सकते हैं किन्तु अकेले ही मकान नहीं बना सकते, आप एक अतिउत्साही सामाजिक कार्यकर्ता हो सकते है किन्तु गरीबी से अकेले नहीं लड़ सकते। आप एक प्रतिबद्ध राजनेता हो सकते हैं किन्तु एक राष्ट्र का निर्माण व रुपान्तर आप अकेले नहीं कर सकते।

एक विशाल संगठन, अस्पताल, व भवन का निर्माण या गरीबी से युद्ध, स्वतन्त्रता प्राप्ति व एक राष्ट्र के निर्माण हेतु आपको समर्थकों और अनुयायियों की आवश्यकता होती है। साथ ही उनकी प्रतिभा, क्षमता, महत्त्वाकांक्षा, लक्ष्य, ऊर्जा, जोश, निष्ठा व प्रतिबद्धता के उन्नयन हेतु संसाधनों की भी जरूरत होती है। लोगों को उन्नयनित जीवन की चाह हो भी सकती है और नहीं भी। उनमें उत्साह का संचार करना होता है, उन्हें सफल होने के लिये मजबूर करना पड़ता है, बाध्यताओं को चुनौती देनी पड़ती है, और फिर उनका रूपान्तरण एक साधारण

मनुष्य से एक असाधारण हठधर्मी, एक संतोषी व्यक्ति से एक महात्त्वाकांक्षी व उद्यमी मनुष्य, एक सामान्य व्यक्ति से असमान्य आत्मा, व एक आम आदमी से एक उन्नयनित जीवन जीने वालों में करना होता है।

लेकिन हम यह करें तो कैसे? उसका उत्तर देने के लिये यहां प्रस्तुत इलेवन कमांडमेंट्स में से सर्वाधिक शक्तिशाली प्रगतिशील व महत्वपूर्ण कमांडमेंट।

घोषित करे कि मेरे चारों ओर का प्रत्येक संसाधन उन्नयनित होगा।

मैंने 29 वर्ष पूर्व, स्वयं को यह कमांडमेंट दिया था कि मैं अपने आसपास के प्रत्येक संसाधन को उन्नयनित करूँगा। चाहे वे मेरे अधीनस्थ हों, सहकर्मी हों, मालिक हों, ग्राहक हों। स्मार्ट के कर्मचारी हों, उसके उच्च अधिकारी हों, प्रथम पंक्ति के सेल्स–मैन हों, मेरे एमडी, वीपी, सीईओ, ड्रायवर, चौकीदार था वे लड़के व लड़कियां जो छोटे–मोटे काम कर देते हैं।

मैंने यह निर्णय लिया था कि मेरे चारों ओर की प्रत्येक जीवित वस्तु को उन्नयनित किया जायेगा।

इस प्रक्रिया के दौरान मैंने अनुभव किया कि यह उनके बस की बात नहीं है जो सौम्य हैं; विनम्र हैं; धीमा बोलते हैं, व शिष्ट, विनीत, संवेदनशील और आदरकारी हैं। क्योंकि लोग जैसे हैं वैसे ही खुश हैं – वे न तो अधिक मेहनत करना चाहते हैं, न चुनौतियों का सामना करना, न आगे बढ़ना और न ही किसी तरह का बदलाव लाना। ये भी संभव है कि वे यह सब करना चाहते हो किन्तु वे इसका मार्ग नहीं जानते या वे इसका मूल्य नहीं चुकाना चाहते। यदि उनका उन्नयन करना है तो उन्हें वास्तविकता से अवगत कराना होगा। वे जीवन में कोई मुकाम कैसे हासिल कर सकते हैं; अपनी कल्पनाओं के परे कैसे जा सकते हैं; अपने आसपास की हर वस्तु पर प्रश्न कैसे उठा सकते हैं? यह सब करने के लिये उन्हें ठोकरें मारना व कठिन सबक देना आवश्यक है, और इसके लिये आपको निष्ठुर व डिमांडिंग होना होगा। किसी भी व्यक्ति की वास्तविक शक्ति तभी सामने आती है जब उस पर दबाव डालकर उसकी सीमा तक धकेला जायेगा।

यहां मुझे विंस्टन चर्चिल का ध्यान हो आया जिन्होंने विश्व युद्ध के समय कहा था कि "मेरे पास देने के लिये कुछ भी नहीं है, सिवाय खून, कठिन श्रम, आंसुओं और पसीने के, मेरा विश्वास है कि मैं सबसे लम्बे समय से युद्ध में हूँ– एक ऐसा युद्ध जो मैंने स्वयं को अगले स्तर तक ले जाने व लोगों को अपने साथ नई ऊँचाईयाँ पाने के लिये घोषित किया है।" और विंस्टन चर्चिल की ही तरह मेरे पास भी देने के लिये प्रेम, संरक्षण व सहानुभूति के दो शब्द भी नहीं हैं; है तो केवल चुनौतियां, परिश्रम और जुनून। जब आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं तो या तो लोग आपकी अपेक्षाओं को पार कर जाते हैं या दूर जाते हैं........ और

कोई तीसरा रास्ता नहीं होता। जो आपके उत्कृष्टता के मानदण्डों को स्वीकार कर लेते हैं वे आपके साथ आगे बढ़ने लगते हैं; शेष वे रह जाते हैं, जो उन्नयन के लिये नहीं बने थे।

तो 21 वर्ष पूर्व विंस्टन चर्चिल के शब्दों से प्रभावित हो मैं एक चुनौतीपूर्ण, सख्त, ऊँची अपेक्षाओं वाला व लोगों को उन्नयनित करने वाला व्यक्ति बन गया। मैंने इसे अपना दत्तकर्म बना लिया और लोगों के जीवन को रूपांतरित करना अपना जूनुन। संसाधनों का उन्नयन मेरा प्रिय शगल बन गया। प्रत्येक सेल्समैन में मुझे सिर्फ एक सेल्समैन ही नजर नहीं आता था; प्रत्येक आफिस असिस्टेंट जिसे मैंने नौकरी पर रखा आगे चलकर ब्रांच मैनेजर बना; प्रत्येक एग्ज़ीक्यूटिव असिस्टेंट मैंने जिसके साथ काम किया उसे एक सीईओ बनने के लिये तैयार किया; प्रत्येक वीपी, सीईओ, एमडी को अधिक महान व बेहतर करने के लिये रूपांतरित किया; प्रत्येक ग्राहक को उसकी पूरी क्षमता तक उन्नयनित किया – मैंने यह किया। मैं यह करता रहता हूँ और जीवन की अंतिम सांस तक करता रहूँगा। मैंने इसकी घोषणा कर दी है, और अब पीछे हटने का प्रश्न ही नहीं है।

जब आप इसे पढ़ रहे होते हैं; तो आपके मन में जिस व्यक्ति की छवि उभर कर आती है, वह एक ऐसा असंवेदनशील मनुष्य है जिसके पास, प्रेम, भावनाएं व लोगों के प्रति कोई सम्मान नहीं है। वह केवल एक आततायी एक उत्पीड़क एक तानाशाह है। एक ऐसा व्यक्ति जो अमानवीय क्रूर और निर्दयी है; लेकिन क्या मैं ऐसा हूँ या जीवन उन्नयनित करने वाले ऐसे ही होते हैं? क्या जीवन उन्नयन के लिये केवल सख्ती व असंवदेनशीलता ही चाहिए?

उन्नयनित जीवन वाले लोगों का अपने आसपास के लोगों के प्रति व्यवहार कुछ अविवेकी रहता है और उन्हें इस असामान्य से लगने वाले व्यवहार की शक्ति लोगों के प्रति अपने प्रेम से ही मिलती है। उन्नयनित व सार्थक जीवन जीने वाले लोग मनुष्य मात्र से प्रेम करते हैं, उन्हें लोगों को रूपान्तरित कर जीवन को नयी ऊँचाईयों पर पहुंचाने का नशा होता है। उन्हें विश्वास होता है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास चाहे वह माने या न माने, चाहे या न चाहे – आज वह जो भी कर रहा है अथवा रही है, उससे हजारों गुना, अधिक करने की क्षमता व योग्यता है और वे स्वयं लोगों को उन्नयन के उस स्तर तक पहुंचाने की जिम्मेदारी ले लेते हैं।

उन्हें पता होता है कि वे जिन लोगों की सहायता कर रहे हैं वे ही उनका विरोध करने वाले हैं। उनके आशय पर प्रश्न उठेंगे, प्रयत्न नकार दिये जायेंगे और उनके कार्यों को हास्यास्पद समझा जायेगा, हो सकता है उनके मुंह पर लात मार दी जाए, उन पर गुप्त प्रयोजनों का आरोप लगाया जाए, उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए, धोखा दे दिया जाए या फिर उन पर कोई ध्यान ही न दिया जाए। लेकिन

फिर भी ये लोग प्रयत्न छोड़ देने, स्वर मंद कर लेने, संवेदनशीलता, मनुष्यता व सौम्यता जिसकी उनसे अपेक्षा की जाती है उसका प्रदर्शन करने को तैयार नहीं होते।

इस पूरे पथ पर लोग आपके विश्वास को कमजोर करने का प्रयास करते हैं किन्तु आप केन्ट कीथ द्वारा 1968 में प्रस्तुत किये गये "दस पैराडॉक्सिकल (विरोधाभासी) कमांडमेंट्स" से शक्ति पा सकते हैं। मैं इन कमांडमेंट्स का उत्कट अनुयायी रहा हूँ और भाग्यशाली भी; क्योंकि मुझे इन कमांडमेंट्स को जानने का अवसर जीवन में बहुत पहले मिल गया।

ये दस विरोधाभासी कमांडमेंट्स जिन्हें प्रेम से 'दुनियाभर में कैसे भी' (एनीवे अराउंड द वर्ल्ड) कहा जाता है, जीवन उन्नयन के पांचवे कमांडमेंट का महत्वपूर्ण भाग है।

★ लोग विसंगतिपूर्ण हैं, अनुचित हैं, आत्म केन्द्रित हैं, पर उन्हें प्रेम करें, कैसे भी।

★ यदि आप भला करें, पर लोग आपको स्वार्थी, बुरी नियत वाला कहें; पर आप भला करते रहें, कैसे भी।

★ यदि आप अपने निकटस्थ मित्रों से अधिक सफल हैं; तो आपको कई झूठे मित्र व सच्चे दुश्मन मिलेंगे पर बुरा न मानें; और सफल हों, कैसे भी।

★ आज की भलाई, कल भुला दी जायेगी; पर भला करते रहें, कैसे भी।

★ हो सकता है ईमानदारी और सादगी आपको जख्म दें; पर आप ईमानदार रहें, कैसे भी।

★ महान व्यक्ति व महानतम विचार को काट सकता है एक छोटे मन का छोटा आदमी; पर आप महान सोचें, कैसे भी।

★ लोग दलितों को संबल देते है, पर सबल के साथ चलते है; लेकिन आप कुछ दलितों के लिये लड़ें, कैसे भी।

★ आपने जिसे बनाने में वर्षों लगाये; वह बिखर सकता है, चंद मिनटों में ही; उसे फिर बनायें, कैसे भी।

★ लोगों को सहायता की आवश्यकता है; लेकिन वे आप पर वार कर सकते हैं, जब आप उन्हें सहायता दें; फिर भी उन्हें सहायता दे, कैसे भी।

★ संसार को अपना सर्वश्रेष्ठ दें और वे आपके दांत तोड़ दे; फिर भी अपना सर्वश्रेष्ठ ही दें, कैसे भी।

मैंने लोगो के बारे में यही सीखा–जाना है।

आपका सर्वश्रेष्ठ समय व सर्वश्रेष्ठ यादें लोगों से संबंधित ही रहने वाली है। सबसे कठिन, निराशापूर्ण, दुःखद व चोट पहुँचाने वाला समय भी वही है जो आपको लोगों के साथ बिताते है। ये वही लोग हो सकते हैं और अलग भी; याद रहे, इन निराशाओं व कठिनाईयों के बावजूद जब आप लोगों के साथ काम करते हैं तब उनसे संबंध बनाइयें व उन्हें अपनी दुनिया में ले जाइए। लोग आपके साथ कैसा भी व्यवहार करें, किन्तु आप अच्छा और लोगों के भले का काम करते रहिए, क्योंकि किसी न किसी दिन अच्छे कामों के इस बीज को उपजाऊ जमीन मिलेगी और यह एक विशाल वृक्ष को जन्म देगा; तब वे ही लोग आशीर्वाद स्वरुप आपकी आर्थिक व व्यवसायिक उन्नति में सहयोग करेंगे व आपके जीवन में बदलाव लायेंगे।

यदि आपको मनुष्यों पर कार्य करना है तो आपको उन्हें प्रेम करना होगा; यह मैंने अपोरेश आचार्य के एमआईएलटी कार्यक्रम में भाग लेकर व उन्हें सैकड़ो लोगों में परिवर्तन लाते देख कर जाना। मैंने 3ए का प्रयोग कर लोगों से प्रेम करने की कला सीखी।

A एक्सेप्ट : स्वीकार

A एडजस्ट : समायोजन

A एप्रीशिएट : प्रशंसा

हां, यदि आप लोगों को बदलना व उन्नयनित करना चाहते हैं, तो आपको तीन कार्य करने होंगे : –

1. लोगों को उनके मूलस्वरूप में स्वीकार करना।
2. उनकी विशेषताओं व सनकों के साथ समायोजन करना।
3. उनकी हर अच्छाई की प्रशंसा करना।

स्वीकार

मैंने हमेशा कहा है कि जीवन एक पैकेज डील है और हमारे आसपास के लोग हमें इसी पैकेज में मिले हैं। उनमें कुछ गुण अति विशिष्ट हैं, कुछ अत्यधिक

परेशान करने वाले। वे ईमानदार, विशुद्ध, हास्यास्पद व सनकी एक साथ हो सकते हैं।

आप उनकी ईमानदारी को पसंद कर उनकी सनक को नापसंद कर उन्हें अपने दिमाग में अपनी पसंद, नापसंद के अनुरूप अच्छे बुरे या बदसूरत की श्रेणियों में नहीं बांट सकते, क्योंकि यदि आपने ऐसा किया तो आप उन्हें प्रेम नहीं कर पायेंगे और यदि आपने उन्हें प्रेम नहीं किया तो आप उन्हें कभी भी उन्नयनित नहीं कर पायेंगे।

यदि आप लोगों के बारे में राय बनाने लगते है तो आपके पास उन्हें प्रेम करने का समय नहीं होता।

–मदर टैरेसा

समायोजन

समायोजन प्रत्येक रिश्ते की नींव है। आपको इनकी कमियों से परेशान हुए बिना उनकी सनकों, स्वभावगत विशेषताओं को नापसंद लक्षणों व उनके उत्कृष्ट से कमतर गुणो से समायोजन स्थापित करना होगा। अपने व्यवहार को उनके साथ कार्य करने लायक बनाना होगा और फिर उनके जीवन का उन्नयन करना होगा।

प्रशंसा

यह सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। आप किसी भी व्यक्ति के वास्तविक सौंदर्य व विशेषताओं को नहीं समझ सकेंगे जब तक उनकी सराहना न करें। लोगों के सद्‌गुणो की प्रशंसा व कद्र करना अतिआवश्यक है और जब आप उन्हें स्वीकार कर उनके साथ समायोजित होंगे तभी आप उनकी प्रशंसा भी कर पायेंगे।

स्व उन्नयन

जब हम अपने आसपास मौजूद संसाधनों के उन्नयन की चर्चा करते हैं, याद रखें सबसे बड़ा संसाधन आप स्वयं हैं और अन्यों के साथ आपको अपना उन्नयन भी करना होगा। इसका एक तरीका है – आपके आसपास के लोगों के अच्छे गुणों को समझना, उनका आनन्द लेना और उनसे प्रेरणा ले कर जीवन में बड़े काम करना।

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अच्छे गुण होते है – कुछ ऐसा मूल्यवान जो वह संसार को दे सकें। यह कुछ ऐसा हो सकता है जिसने हमेशा आपका ध्यान खींचा हो, जिसे आपने हमेशा सराहा हो और ईर्ष्या भी की हो, कुछ ऐसा जो

आपके पास नहीं है, लेकिन पाने की लालसा है। कुछ ऐसा जो उस व्यक्ति को विशिष्ट बनाता हो, आप इन विशिष्ट गुणों से ईर्ष्यालु हों, सदा के लिये अवसाद में जाकर सोचते हों कि आप इस गुण से वंचित क्यों हैं, किन्तु ये सारे व्यवहार व क्रियाएं आपके वह गुण पाने में सहायक नहीं होगी। अपितु जो गुण आप में नहीं है, आप दूसरो में उसका आनन्द ले सकते हैं और जिस क्षण आप उसकी सराहना करने लगते हैं, वह गुण आप में खिलना शुरु हो जाता है और आपका जीवन कल्पनातीत उन्नयनित होता है।

मैंने हमेशा मेरे आसपास मौजूद लोगों की प्रतिभाओं का आनन्द लिया है, उनसे सीख व प्रेरणा ली है उनका निकट से अध्ययन किया है और उनकी मनोदृष्टि को स्वयं में उतारा है ताकि मैं अपने जीवन को उन्नयनित कर सकूँ।

अपने 29 वर्षों के करियर में मैं लाखों लोगों से मिला हूँ, परन्तु ऐसे थोड़े ही लोग हैं जिनकी महान क्षमताओं /गुणों/ विशिष्टताओं ने मुझ पर स्थायी प्रभाव छोड़ा है; मैंने उन्हें बहुत ध्यान से देखा और उनके गुणों को आत्मसात किया ताकि मैं एक बेहतर इंसान बन सकूं। यहां मैं उन अविस्मरणीय लोगों के बारे में बात कर रहा हूँ जिन्होंने मेरे विकास में योगदान दिया।

मेरे पिता के पास कहीं भी समय पर पहुंचने की महान क्षमता थी। मुझे याद नहीं वे कभी किसी मुलाकत के लिये देर से पहुंचे हों। जब मैं एक बालक था तभी से मैंने इस आदत का आनन्द लेना आरंभ कर दिया था, क्योंकि इससे मुझे अपने पिता के निकट रहकर उनके द्वारा समय पर पंहुचने के लिये की गई तैयारियों को देखने का मौका मिल जाता था। इस दौरान मैंने वे शब्द भी सीखे जिनका प्रयोग कर वे दूसरों को समय पर पहुंचने के लिये प्रेरित करते थे। इस आदत को आत्मसात कर मैंने स्वयं को अधिक शक्तिशाली व प्रभावशाली मनुष्य बनाया।

राजेश मल्होत्रा मुझे अब तक जितने भी बेहतरीन मैनेजर्स के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उनमें से एक थे; उनमें असंख्य योग्यताएं थीं, जो मैंने अपने आरम्भिक जीवन में ही पकड़ लीं थीं। एक ऐसा गुण जिसने मुझे सर्वाधिक प्रसन्नता दी वह था नेतृत्व तैयार करना। वे लोगों को सशक्त बनाने में देर नहीं करते थे और उनकी असफलताओं से घबराते भी नहीं थे। वास्तव में वे उन्हें, उनकी आयु व अनुभव के कहीं अधिक चुनौती पूर्ण दायित्व लेने के लिये प्रोत्साहित करते थे। उन्हें गलतियां करने देते थे और फिर उनमें से उबरने में भी सहायता करते थे। उनके प्रिय शब्द थे, "कुछ नहीं होता है.........मैं बैठा हूँ ना" इन्हीं कुछ शब्दों से वे व्यक्ति को प्रेरित कर उसमें इतना आत्म विश्वास और हिम्मत भर देते थे कि वह दुनिया की महानतम चुनौती को स्वीकार कर ले

और विजयी बन कर उभरें। यदि कोई उनके पास अपनी समस्या लेकर आता

तो वे सिर्फ उससे बात करते, प्रेरित करते और वह व्यक्ति वापस लौट कर स्वयं ही अपनी समस्या का समाधान ढूंढ लेता मुझे उनकी इस विशिष्ट योग्यता को पहचानने में ज्यादा समय नहीं लगा था; और “कुछ नहीं होता है.........मैं बैठा हूँ ना” मेरा भी प्रमुख वाक्य बन गया, जिसका प्रयोग मैने लोगों को उन्नयनित करने के लिये किया।

ए. डबल्यू. जॉर्ज– टीम प्रॉडक्टीविटी के ज्वाइंट एमडी और मेरे बॉस भी। उनका सबसे बड़ा गुण था, शांत रहना– चाहे उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान चुनौती दी हो या किसी सार्वजनिक मंच पर। वे बड़ी शालीनता व विनम्रता से स्थिति को सम्भालते थे और यही एक प्रशिक्षक, प्रेरक वक्ता व सार्वजानिक व्यक्ति के रूप में मेरी सबसे बड़ी शिक्षा रही।

मनीष कौल– एक और शानदार बॉस, मैंने जिनके अधीन रीअल वैल्यू अप्लाएंसेस, जहाँ मैं अग्निशामक यंत्र बेचता था, में काम किया। उन्हें अच्छे कपड़े पहनने का बहुत शौक था। मैंने विरले ही उन्हें कोई भी कोट एक से अधिक बार पहने देखा होगा। वे हर मुलाकात के लिये बढ़िया कपड़े और उसके साथ ही मिलते–जुलते मोजे, जूते व टाई भी, पहनते थे। उनकी चमक–दमक, प्रर्दशन व कपड़े पहनने के तरीके ने मुझे अपने प्रिय काले व नीले, कपड़ों से बाहर निकलने की प्रेरणा दी और आज मेरी अलमारी में कपड़ों की विस्तृत श्रृंखला है।

जिग जिगलर– दुनिया के जाने माने मोटीवेशनल वक्ता व सेल्स विशेषज्ञ जिनकी सैकड़ों पुस्तकें, ऑडियो व वीडियो भी उपलब्ध हैं, मैं पूरे जीवन उनका एक उत्कट पाठक व अनुयायी रहा हूँ। उन्होंने पूरी दुनिया में लाखों करोड़ों लोगों को रूपांतरित किया। मैंने उनके सेल्स व मोटीवेशनल भाषणों का न केवल आनंद लिया अप्रितु उनसे प्रेरित हो जगह**–जगह जा कर लोगों को रूपांतरित करने का बीड़ा उठाया, अपने हजारों** ऑडियो व वीडियो लोगों को उपलब्ध कराये व स्वयं को एक सेल्स गुरु व मोटिवेशनल वक्ता के रूप में उन्नयनित किया।

नारायण मूर्ति (इन्फोसिस) व अजीम प्रेमजी (विप्रो) दोनों ही भारत के महानतम उद्योगपतियों में शामिल हैं। इन दोनों ने ही अपनी सादगी, मितव्ययता और विनम्रता से मुझे प्रभावित किया है। इन्फोसिस व विप्रो जैसी बड़ी कम्पनियाँ चलाने के बावजूद व करोड़पति होते हुए भी मैंने कभी इन्हें निरर्थक वस्तुओं पर पैसा लुटाते नहीं देखा। ये दोनों ही अधिकतर इकॉनमी क्लास में आम व्यक्तियों की तरह सफर करते हैं। सामान्य कारें चलाते हैं सीधे–साधे

कपड़े पहनते हैं और महंगी घड़ियों व बहुमूल्य रत्नों से दूर ही रहते हैं। सफलता व समृद्धि के शिखर पर होते हुए भी इन्होंने कभी भी सफलता को अपने सिर पर नहीं बैठाया और इस सीख ने मुझे अब तक मिले नाम, सम्मान व लोकप्रियता के बावजूद हमेशा जमीन से जोड़े रखा।

सुरेन्द्र शर्मा– सुप्रसिद्ध हिन्दी हास्य कवि, जिन्हें अपनी सहजता, वाक्पटुता व विशिष्ट शैली के लिये जाना जाता है, उन्होंने मुझे उस असामान्य ऊर्जा, गतिशीलता व हास्य के प्रयोग के लिये प्रेरित किया जो आज मेरे कार्यक्रमों की विशेषता मानी जाती है।

अखिल भरकतिया – यूरेका फोर्ब्स के भूतपूर्व एम.डी. जिन्हें सेल्स व सेल्स में काम करने वाले लोगों से आंतरिक लगाव था व अनिल कुमार गुप्ता (मेरे पहले बॉस व मेरे आरम्भिक व्यावसायिक जीवन में सर्वाधिक योगदान देने वाले) जिन्हें सेल्स की शिक्षा देने व लोगों को उनकी लक्ष्य प्रप्ति में, सहायता करने में मजा आता था; इन दोनों ने ही मुझे सेल्स समुदाय के प्रेम में डाला और उनकी सहायता कर उन्हें आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी और आज इसी को मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी ताकत मानता हूँ।

नौषीन मेरी एग्ज़ीक्यूटिव असिस्टेंट,– एक 23 वर्षीय हसमुख लड़की जिसकी अपने काम के प्रति प्रतिबद्धता व समर्पण– एक ऐसा गुण है जो मुझे आनंदित करता है। मुझे उसकी सुबह पांच बजे ....तो कभी रात 2 बजे भेजी हुई ई–मेल मिलती रहती है.........उसका परिश्रम, कई कार्य एक साथ करने की क्षमता, कई चुनौतियों का एक साथ सामना, बिना किसी शर्त का प्रेम व निष्ठा, मेरे जीवन के हर प्रयास में मेरी सहायता करने की उसकी इच्छा व जुनून–ये सभी मुझ में फिर से यौवन व फूर्ति का संचार कर फिर से 23 वर्ष का युवक बना अपने कार्य को क्षमताओं के अनुरूप सर्वोत्तम तरीके से करने को प्रेरित करता है।

डेन सुलिवान– एक जाने माने उद्यमी प्रशिक्षक व जीवन में मेरे गुरु हैं। विभिन्न मानव विषयों पर उनके तैयार किये हुए ऑडियो–वीडियो व सैकड़ों पुस्तकों ने मुझे अनजान को जानने, अबूझे प्रश्नों को बूझने व अनछुए क्षेत्रों में प्रवेश करने में सहायता दी। उद्यमिता पर उनकी पकड़ ने मुझे भी इस विषय को समझने में मदद की व मैं एक उद्यमिता–प्रशिक्षक बन गया। यदि मैंने उनकी रचनात्माकता व विशिष्ट योग्यता को नहीं सराहा होता व पाने की इच्छा न की होती तो मैं वह न बना होता जो मै आज हूँ।

जोल बारकर– एक प्रसिद्ध अमेरिकी चेंज गुरु जिन्होंने नेतृत्व, विचार प्रक्रियाओं (पेरॉडाइम) व बदलाव पर बहुत ही रचनात्मक तरीके से अपने विचार, दृष्टिकोण व दर्शन को प्रकट किया। ये आज भी मेरे लिये प्रेरणा का स्त्रोत है और मुझे अपने कार्यक्रमों के लिये नये विषय खोजने व उनमें ताजगी व मौलिकता बनाए रखने को उत्साहित करते हैं।

वर्गीस कुरियन व उनके द्वारा भारत के डेरी विकास क्षेत्र में किये गये कार्य ने मुझे गहरे तक प्रभावित किया। वर्गीस कुरियन के पास क्या था जब उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ कर सहकारी खेड़ा जिला दुग्ध उत्पाद संघ लि. के संस्थापक श्री त्रिभुवनदास पटेल को एक दुग्ध प्रसंस्करण संयत्र स्थापित करने की पेशकश की थी। क्या वे जानते थे कि उनका यह कदम अमूल को जन्म देगा – 12.5 बिलियन डॉलर सहकारी डेयरी का भारतीय ब्रांड? क्या वे जानते थे कि जब 1965 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री. लालबहादुर शास्त्री ने उन्हें राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की स्थापना हेतु नियुक्त किया व अमूल की सफलता को भारत भर में दोहराने को कहा तो वे एक दिन दुग्ध क्रांति तथा श्वेत क्रांति के जनक कहलायेगें दुग्ध उत्पादों की बिक्री के लिये 1973 में जब उन्होंने गुजरात मिल्क मार्केटिंग फेडेरेशन की स्थापना की तब क्या वे जानते थे कि वे भारत को विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बना रहे है और स्वयं को देश का ग्वाला?

ली आयाकोका– और उन्होंने जो चुनौतियाँ क्रायस्लार को पुर्नजीवन देने में उठाईं – अमेरिका की तीसरी सबसे बड़ी कार कम्पनी बनाना और वह भी उसे दिवालियेपन की स्थिति से उठा कर और वह भी फोर्ड मोटर्स के हेनरी फोर्ड–2 द्वारा अपमानित कर काम से निकाले जाने के तुरंत बाद; वे हमेशा मुझे चुनौतियों को स्वीकार कर एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी तक बढ़ जाने को प्रेरित करते हैं।

मार्टिन लूथर किंग– महान अमेरिकी कार्यकर्ता के पास करोड़ों अश्वेत अमेरिकियों के जीवन में परिवर्तन लाने वाला एक विचार था। उन्होंने तब तक संघर्ष किया जब तक उन्होंने अश्वेत अमेरिकियों के लिये समान नागरिक स्वतंत्राएँ व समानताएँ नहीं जीत लीं। क्या मैं रूपांतरण से संबंधित कुछ चीजें मार्टिन लूथर किंग से सीख सकता हूँ; क्या मैं उनकी रूपांतरण करने की योग्यता का आनंद लेकर स्वयं व विश्व को रूपांतरित कर अपने सैकड़ों लक्ष्य पा सकता हूँ? क्या मैं उनके समान संप्रेशन की तीव्रता का प्रयोग कर एक अधिक प्रबल मनुष्य बन सकता हूँ? उत्तर है, हाँ।

मेरी माँ इंदिरा नायर व पत्नी सिंधु नायर, दोनों ही का विशिष्ट गुण है– सदा प्रसन्न रहना। अपनी पत्नी सिंधु को मैंने सदा मुस्कुराते हुए जीवन का आनंद लेते

हुए और सभी परिस्थितियों में संतुष्ट ही देखा है। वे अपने आस-पास की प्रत्येक चीज से खुश रहती हैं। वे हमेशा प्रसन्नचित रहती हैं। इन दोनों महिलाओं के इस गुण ने सदा यह सुनिश्चित किया कि वे दोनों कठिनतम, सर्वाधिक त्रासदायी व पथभ्रष्ट करनेवाली परिस्थितियों में भी संयमित व प्रसन्न रहें। वे मुझे वस्तुओं के उजले भाग पर ध्यान देने व जीवन का आनंद लेने को प्रेरित करतीं हैं। सही भी है, मैं स्वयं प्रसन्न रह कर ही जीवन को उन्नयनित कर सकता हूँ। यह सूची अभी और आगे बढ़ाई जा सकती है। मैंने इन सभी प्रभावशाली नेताओं और अपने बहुत से अधिकारियों, अधीनस्तों व सहकर्मियों के लक्षणों, योग्यताओं व गुणों का आनंद लिया है। मैंने उनकी योग्यताओं का आनंद लिया और उनकी कमजोरियों से अप्रसन्न न होते हुए, मैंने अपने व संसार के लिये जीवन को उन्नयनित किया। हम सभी को ऐसे लोग मिलते हैं, जिनसे हम जीवन में कुछ सीख सकते हैं। यह व्यक्ति का कोई भी गुण हो सकता है; निष्ठा, इमानदारी, रचनात्मकता, प्रतिबद्धता, बुद्धि, इच्छाशक्ति, स्वाभाविकता, बिना शर्त प्रेम करने का गुण, देखभाल करना, मुफ्त में ज्ञान देना व जो उन्हें ठीक लगें उसके लिये आवाज़ उठाना व उस पर दृढ़ रहना। संभव है, किसी ने किसी भाषा पर अधिकार बनाया हो, कोई हास्य-व्यंग में पारंगत हो, किसी में विभिन्न पृष्ठभूमियों वाले लोगों से जुड़ने की क्षमता हो, जबकि कुछ अन्य किसी मुद्दे अथवा कारण के लिये लड़ने को दृढ़प्रतिज्ञा हों, या फिर समाज सेवा व परोपकार जैसे कार्यों से जुड़े हों। एक उन्नयनित जीवन की इच्छा रखने वाला व्यक्ति, लोगों के गुणों को सावधान व पैनी नजर से परख कर व उनके व्यवहार के ढांचों को पहचान कर अपने अवचेतन में अंकित कर लेता है। अवचेतन यें प्रवेश करते ही ये गुण आप का एक भाग हो जाते हैं, और फिर एक दिन आप अनुभव करते हैं कि आप बदल गये हैं, आप वही बन गये हैं जो आप हमेशा से बनना चाहते थे।

अत: अब आप जब कभी भी किसी सुयोग्य अथवा सद्‌गुणों वाले व्यक्ति को देखें तो ईर्ष्या न करें, उन्हें सराहें, उनसे सीखने का आनंद लें और फिर इन गुणों व योग्यताओं को अपना हिस्सा बनने दें।

अगले पृष्ठ पर दी गई जगह में ऐसे दस लोगों की सूची बनायें जिन्होंने आपके जीवन को प्रभावित किया हैं उन गुणों व योग्यताओं को भी सूचीबद्ध करें जिनका आपने उनमें आनंद लिया, और फिर इन गुणों को अपनाने हेतु एक रूपरेखा तैयार करें। यह कार्य आप किसी भी प्रकार सकते हैं - पुस्तकें पढ़कर, ऑडियो-वीडियो द्वारा तीक्ष्ण प्रेक्षण द्वारा, किसी कोच अथवा मार्गदर्षक की सहायता से या फिर किसी प्रषिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर।

यदि आप जीवन पर्यंत एक उन्नयनित जीवन जीना चाहते है तो अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे व प्रतिक्षण इस आज्ञा, इस अनुदेश, इस निदेश, इस आदेश, प्रभु के इस विधान, इस कमांडमेंट के प्रति सजग रहें।

घोषित करें: आपके चारों ओर मौजूद प्रत्येक संसाधन का उन्नयन होगा।

नम्बर	आपको प्रभावित करने वाले व्यक्ति का नाम	योग्यताएँ गुणा लक्षण जिन्होंने आपको आनंद दिया	आप इसे अपने व्यक्तित्व में कैसे उतारेंगे?
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			

कमांडमेंट 6

अपने विचारों, शब्दों व क्रियाओं को घोषित करें।

**लोगों को अधिकांश कार्य परिस्थितिजन्य होते हैं;
सावधान रहें।**

मेरे करियर के आरम्भ में, जब मैं भारत की महानतम डायरेक्ट सेल्स कम्पनी यूरेकाफोर्ब्स में कार्य कर रहा था, मुझे उपहार में एक घड़ी दी गयी जिस पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं 60 वर्षों (1932 – 1992) तक टाटा ग्रुप के चेयरमैन रहे, जे. आर. डी. टाटा के हस्ताक्षर थे। घड़ी पर तीन शब्द भी अंकित थे "हमता हुख्ता हुवर्शता" चूंकि घड़ी पर श्री. टाटा के हस्ताक्षर थे मुझे लगा इन शब्दों का भी कोई गूढ़ अर्थ होगा; अत: मैनें अपने वरिष्ठ अधिकारियों से उनका अर्थ पूछा। मुझे बताया गया कि उनका मतलब है 'सुविचार, सुशब्द, सुकर्म'।

जे. आर. डी टाटा ने भारत के सर्वाधिक प्रसिद्ध, विश्वसनीय और सबसे अच्छे प्रबन्धन वाले औद्योगिक घराने का निर्माण किया और यह आज भी विश्व की अग्रणी कम्पनियों में से एक है। उन्होनें जीवन उन्नयनित किया था। मैं जानता हूँ क्यों। इसका उत्तर इन तीन शब्दों में छुपा है 'सुविचार, सुशब्द, सुकर्म'। उस कच्ची उम्र में इस महान व्यक्ति के दर्शन से प्रेरित हो मैंने घोषणा की, कि मैं अपना पूरा जीवन इसी दर्शन के अनुरूप बिताऊँगा।

लोगों के जीवन में कई महत्वाकांक्षाऐं व सपने होते हैं। वे जीवन की सबसे अच्छी सुख–सुविधाऐं भोगना चाहते है, ऊँचे पद पाना चाहते हैं, पूरी दुनिया में घूमना चाहते हैं, अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते हैं, नये बाजारों में उतरना चाहते हैं और अपनी पेशेवर महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति चाहते हैं। उनके सपने, अपने परिवार के लिए भी हो सकते हैं। अपने बच्चों को सबसे अच्छी शिक्षा देना, अपने माता–पिता को जीवन का हर सुख देना वगैरह। लेकिन जीवन अप्रत्याशित है, निरंतर विकसित होने वाला, आश्चर्यों से भरपूर, आप जो दे सकते हैं, हमेशा उससे अधिक की अपेक्षा रखने वाला। यह कभी भी सीधा, सरल और सहज नहीं होता।

आप का निश्चय छ: महीने का काम, तीन में पूरा कर घर लौटने का हो सकता है; किन्तु जब आप अपने काम का अंतिम चरण पूरा कर रहे होते हैं, आपका एक्सीडेंट हो जाता है और डॉक्टर आपको चार महीनों के लिए बिस्तर पर ही आराम करने की सलाह देते हैं।

आपने एक विशेष काम पाने के लिये जी–तोड़ मेहनत की और जब वह आपको मिलने ही वाला था, आपके बॉस के भतीजे ने प्रवेश किया और वह काम उसकी झोली में चला गया।

आप अपने परिवार के साथ एक लम्बी छुट्टी बिताने के लिये पूरी तरह से तैयार हैं, जिसकी रूपरेखा आप अपनी पत्नी व बच्चों के साथ पिछले दस वर्षो से बना रहे हैं और जिस दिन आप छुट्टी के लिए निकलते हैं, आपको एक

अप्रत्याशित आपातकाल का मुकाबला करने के लिए काम पर बुला लिया जाता है।

आपने अपने प्रिय प्रोजेक्ट को पाने का महीनों इंतजार किया और जिस दिन वह आपको मिला, उसी दिन आपकी 12 वर्षीय बेटी को कैंसर होने का पता चला।

आज व्यवसायों के बंद होने की गति नये व्यवसायों के आरम्भ होने से कहीं अधिक है। हर घंटे लोग नौकरियाँ खो रहे है, बात-बात पर त्यागपत्र दे दिये जाते हैं, व्यापारिक सौदे टूट रहे हैं, पदोन्नतियाँ घट गईं हैं, रिश्ते बिजली की गति से टूट रहे हैं और लोगों पर दबाव तेजी से बढ़ रहा है।

इस चुनौतीपूर्ण समय में लोग अपना बोध व समझदारी खोकर अपनी परिस्थितियों को सनसनीखेज बनाने लगते हैं, वे निष्पक्ष भाव से नहीं सोच पाते, उनके वार्तालाप का तरीका एक अशांत अवसाद ग्रस्त, हारे हुए व्यक्ति का होता है और उनकी क्रियाओं से लगता है कि उनके जीवन से प्रेम, उत्साह व रस चला गया है। उन्हें अपने लक्ष्य याद नहीं होते, मौजूदा परिस्थितियाँ व कठिनाईयाँ उन्हें पंगु बना देती हैं और वे ऐसे विचारों, शब्दों व क्रियाओं का विकास कर लेते हैं जो उन्हें आत्म-हार के समुद्र में डुबो देते हैं।

अधिकतर ये विचार, शब्द व क्रियाऐं व्यक्ति की परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। जब तक सब कुछ सीधा सरल चल रहा होता है, व्यक्ति सकारात्मक रहता है और चुनौतियाँ उठाने को तैयार रहता है, किन्तु यदि कोई उलट फेर हो जाये तो उनकी सकारात्मकता तुरंत ही नकारात्मकता में परिवर्तित हो जाती है। जीवन के प्रति उनका प्रेम व उत्साह समाप्त हो जाता है, उनकी दृढ़ता व प्रेरणा खोने लगती है और वे अपने ही खोल में छुप जाते हैं। वे नया रचने के स्थान पर शिकायत करने लगते हैं, प्रश्न करने के बदले स्वीकार करने लगते हैं और मुकाबला करने की जगह हार मान लेते हैं। वे बिना सोचे समझे कार्य करते हैं और सम्भव है कि बाद में उन्हें पछतावा हो।

स्मार्ट में स्मिता नाम की, मेरी एक महिला सहयोगी थी, जो पहले मुम्बई में एक प्ले-स्कूल चलाती थी। सन् 1998 में प्ले-स्कूल कोई प्रचलित व्यवसाय नहीं था, जैसा कि आज है। उनके पास एक जमी हुई व्यवस्था थी - दो क्लासरुम, 34 विद्यार्थी और चार अध्यापक। वे सात वर्षों से यह व्यवसाय सफलतापूर्वक चला रही थीं। इस क्षेत्र के एक बड़े खिलाड़ी कंगारू किड्स ने उन्हें फ्रैंचाइस देने की पेशकश की थी और वे इससे बहुत प्रसन्न व उत्साहित थी क्योंकि उन्हें अपने व्यवसाय को छोटे से घर व आस-पास की जगह से आगे बढ़ाने का स्वप्न पूरा होता नजर आ रहा था।

व्यवसाय के सातवें वर्ष में उनकी सास का निधन हो गया और घर सम्भालने, अपने ससुर की देखभाल करने व अपने 3 साल के बेटे को

पालने की जिम्मेदारी अब उनके कंधो पर थी। उनका विश्वास था कि अब उनकी प्राथमिकता, उनका घर, उनके ससुर व उनका बच्चा थे। जीवन में कुछ और इससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं था। जैसा मैने कहा, अधिकतर कार्य परिस्थितिजन्य होते हैं, उन्होंने वास्तविकताओं को अनदेखा कर अपनी स्थिति को अत्यधिक सनसनीपूर्ण बना लिया, और फिर क्षणभर की भी देर किये बिना, निर्णय लिया कि वे अपना व्यवसाय समेट लेंगी और काम छोड़कर घर पर ध्यान देगी, घर की जिम्मेदारियाँ ही उनकी प्राथमिकता हैं।

कुछ ही महिनों में उनके ससुर अपने कामें में व्यस्त हो गये, उनका बच्चा प्री–स्कूल जाने लगा और उनके पास अपने करियर पर ध्यान देने का मौका फिर से था। उन्होंने एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी कर ली और जीवन आगे बढ़ गया, लेकिन आज तक उन्हें अपने जल्दबाजी में लिये स्कूल बंद करने के निर्णय पर पछतावा है।

उस व्यापार में आज के कंगारू किड्स, ट्री हाउस और यूरो किड्स (भारत के कुछ प्रसिद्ध प्ले स्कूल) बनने की सम्भावना थी। किन्तु वे अपनी परिस्थितियों और उनसे पैदा हुई भावनात्मक अशांति का शिकार हो गईं और अपने सपनों का बलिदान दे दिया। मानव की अनभिज्ञता इतनी बड़ी है कि तब तक उन्हें यह समझ भी नहीं आया था। फिर एक दिन मेरी उनसे इस बारे में बातचीत हुई और वे सारी कड़ियाँ जोड़ पाईं; तब उन्हें उस खेल का बोध हुआ जो परिस्थितियाँ हमारे विचारों, शब्दों व क्रियाओं से खेलती हैं।

लोग अपनी परिस्थितियों के कारण भावनात्मक रूप से शक्तिहीन होकर उन्हीं कमजोर भावनाओं को अपने कार्यों को निर्देशित करने देते हैं; जरा सोचिये 99 प्रतिशत जनसंख्या परिस्थितियों के आधार पर अपनी भावनाओं से निर्णय लेती हैं। यदि आपको इस पर शंका हो तो पिछले महीने में आपके आसपास के लोगों ने जो निर्णय लिये हैं, उन पर नजर डालें और आपको विश्वास हो जायेगा।

लोग नौकरी छोड़ देते हैं क्योंकि उन्हें प्रमोशन नहीं मिला, वे व्यापार बंद कर देते हैं क्योंकि एक माह या तिमाही अच्छी नहीं रही, अवसादग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि एक सम्बन्ध टूट गया, परिवार में शोकपूर्ण घटना के कारण आत्महत्या कर लेते हैं, आदि। मानसिक, भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक लाचारी में लिया गया निर्णय, अविवेकी, अदूरदर्शी, विनाशकारी और जीवन उन्नयन के लिये घातक होता है।

जैसा कि एपिकटेट्स ने कहा है, “इस संसार में हमें स्थितियाँ दुःख नहीं देती अपितु उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण हमें दुःख देता है।” मैंने सैकड़ों हजारों लोगों को जीवन में हारते देखा है और उनकी हार के कारण रहे हैं परिस्थितिजन्य विचार, शब्द व कार्य; वे भावनात्मक निर्णय जो उन्हें तब लेने पड़े और जो उन्हें, उनके लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं से कहीं दूर ले गये।

और जब मैं लोगों को इसी कारण जीवन में हारते देखता हूँ तो मुझे अनुभव होता है कि ये वे लोग हैं जो यह नहीं समझे कि जीवन हमेशा आपके साथ खेल खेलता है और ऐसे समय में हार मान लेने में आपको कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता है – इसके लिये आपको कोई विशिष्ट कष्ट नहीं उठाने पड़ते हैं किन्तु इस सारी उथल–पुथल व ऊँच–नीच के बीच स्वयं को अपने लक्ष्यों के साथ जोड़े रखना जीवन की अप्रत्यक्षता को अपने उद्देश्य पर हावी न होने देना; एक सच्चे उन्नयनित–जीवन की निशानी है। आपकी लक्ष्य प्राप्ति में विलंब हो सकता है, किन्तु आपको उनका पीछा करते रहना है और इसके लिये आत्म–विश्वास की आवश्यकता होती है। मेरे अनुसार आत्मविश्वास की परिभाषा है:

"चारों ओर से घेरे हुए भय व असुरक्षा का सामना करते हुए संयत, चौकन्ना और अपने विचारों, शब्दों एवं क्रियाओं के प्रति निर्दिष्ट रहने का शाश्वत (आजीवन) गुण ही आत्म विश्वास है।"

(आगे बढ़ने से पहले इस परिभाषा को कई बार पढ़े)

ऐसा नहीं है कि उन्नयनित जीवनों में ऐसी घटनाए नहीं घटती, वे भी बिजनेस खोते हैं। उन्हें भी त्यागपत्रों से निबटना पड़ता है, टूटे रिश्तों का दुःख भोगना पड़ता है, परिवार में मृत्यु का सामना करना पड़ता है और जीवन के दूसरे दुःख भी; किन्तु उन्होंने स्वयं को अनुदेशित किया होता है–

आदेश दिया होता है, आज्ञा दी होती है, अपेक्षा की होती है कि – वे अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में सभी परिस्थितियों में चौकन्ने रहेंगे।

महानतम मोटीवेशनल वक्ता जिग जिगलर ने एक बार कहा था, "आपकी भाषा आपके शब्द आपके कार्य बन जायेंगे", सच है! अधिकतर लोग अपने विचारों शब्दों व कार्यों को सही रख पाने में असमर्थ होते हैं। कई दूसरों के विचारों शब्दों व कार्यों से निर्देशित होते हैं; समस्या उनकी भाषा में है।

मैंने अनुभव किया कि प्रत्येक पार्टी, सामाजिक आयोजन या कम्पनियों के सम्मेलन, जिसमें मैं उपस्थित होता था, उसमें मेरे प्रशंसकों का दल भी होता था। मैं जहाँ कहीं भी जाता एक स्टार होता। लोग मुझसे मिलना चाहते थे, कुछ शब्द बोलना चाहते थे, कुछ प्रश्न भी पूछना चाहते थे जैसे कि मेरे पास उनकी हर समस्या का समाधान हो। मैंने समझा कि ऐसा क्यों है। मेरी भाषा में उत्साह, एक योद्धा की आत्मा, यथास्थिति पर प्रश्न उठाने की ताकत, हिम्मत व अनजान को रोकने की सम्भावना होने के साथ ही न तो कोई शिकायत होती थी न दुःख और नही पछतावा; उसमें कुछ प्रेरणा, आशा, साहस और विकास था .... किन्तु कोई प्रतिगमन या अवनति नहीं थी।

कई वर्षों पूर्व मैंने ऑक्सफोर्ड शब्दकोष में "प्रगति" शब्द का अर्थ ढूंढा था और जब मैंने इसका अर्थ समझा, मैंने उसे अपने मानस में उतार लिया।

"प्रगति : किसी लक्ष्य या अधिक उन्नत स्थिति की ओर क्रमशः बढ़ना या विकास करना। एक के बाद एक कई वस्तुओं का आना।"

दोनों परिभाषाओं को देखने के बाद मैंने उनमें अपने अनुरूप फेर बदल कर लिया – यही उन्नयनित जीवनों की विशेषता है। वह एक अवसरवादी होता है। वह अपनी आवश्यकता अनुरूप कहीं से भी कुछ भी उठाकर उन्नयनित रहता है।

मेरे लिये परिभाषा के दूसरे भाग "एक के बाद एक कई वस्तुओं का आना" का अर्थ था– एक के बाद एक कई त्याग पत्र; एक के बाद एक कई व्यवधान; एक के बाद एक पराजय; और कई व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक समस्याओं का एक के बाद एक आना।

उदाहरण के लिये :

- ★ **आज आपकी पत्नी का गर्भपात हो गया।**
- ★ **कल आपकी नौकरी चली गई।**
- ★ **आपके साझीदार ने एक मिलता–जुलता व्यापार आरम्भ कर लिया, आपकी अनुमति के बिना और आपके व्यवसाय में से पैसे भी निकाल लिये।**
- ★ **किसी प्रियजन की मृत्यु।**
- ★ **कोई गम्भीर बीमारी ।**
- ★ **आपके पिता का कहना कि आपको नौकरी से शाम 7 बजे से पहले घर पहुंच जाना चाहिये; यद्यपि आप 23 वर्ष के है और अधिकतर आपका काम रात 10 बजे तक समाप्त हो जाने की सम्भावना होती है।**
- ★ **आपके पति का आपको नौकरी छोड़ देने को कहना, क्योंकि उन्हें कंपनी में आपकी प्रसिद्धि पसंद नहीं।**
- ★ **आपके प्रियजन के साथ बलात्कार।**
- ★ **आपके कर्मचारियों द्वारा एक संघ बना लिया जाना।**
- ★ **एक फैक्ट्री को बंद करने के लिये मजबूर किया जाना।**

★ **आपकी कंपनी में एक जालसाजी होना।**

★ **आप पर झूठा मुकदमा दायर किया जाना।**

★ **सबसे अच्छे होने के बावजूद आपको पदोन्नति न मिलना।**

★ **आपके चार सबसे अच्छे कर्मचारियों का एक साथ त्याग पत्र देना और वह भी नोटिस की अवधि पूरी किये बिना।**

★ **एक अलग तरह से विशिष्ट बच्चे को जन्म देना।**

★ **आपके बच्चे का जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण परीक्षा में असफल हो जाना।**

लोग आपको अस्वीकृत कर सकते है, वचन तोड़े जा सकते है, प्रतिबद्धताऐं भूली जा सकती है ....प्रिय मित्रों, आपके व्यवसाय, नौकरी या जीवन में कुछ भी हो सकता है।

आपका ऐसी समस्याओं पर कोई नियंत्रण नहीं होता है और आप उनके लिये उत्तरदायी भी नहीं होते, किन्तु जब वे आती हैं तो किसी भी समय आ सकती हैं।

प्रगति की दूसरी परिभाषा के अनुसार इनमें से कोई एक अथवा ये सभी समस्यायें आपके जीवन में आ सकती हैं। मैंने अथवा मेरे निकट के किसी व्यक्ति ने इनमें से किसी न किसी समस्या का सामना किया है किन्तु कई वर्षों पहले मैंने स्वयं को यह निर्देश दिया था, “संतोष नायर, जब भी आपके जीवन में कुछ ऐसा घटित हो या वह सबकुछ घटित हो जाये जो आपको परेशान कर आपकी गाड़ी पटरी से उतार दे, तो आप अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में सचेत रहेंगे, आप कभी प्रतिगामी या भगोड़े की तरह नहीं सोचेंगे और न ही आपका व्यवहार और न ही आपकी भाषा एक पराजित व्यक्ति की होगी। आपका जीवन समुद्र में बहने वाला लकड़ी का पट्टा नहीं है। आपका जीवन एक जहाज है। जिसमें एक रडर है और आपका रडर आपकी इच्छित दिशा में जहाज को ले जा सकता है। आपके जीवन में इस एक या इन सारी स्थितियों से सामना होगा, किन्तु आपके विचार, शब्द और कार्य प्रगतिशील रहेंगे – जो आपको आगे ले जायेंगे।

यहाँ से मैं प्रगति की पहली परिभाषा पर आता हूँ। मैंने अनुभव किया कि समस्या के होने पर भी मैं क्रमश: आगे बढ़ूंगा, मैं अपने इच्छित लक्ष्य की ओर बढ़ूंगा और अपने विचार, शब्द और कार्य इस तरह संप्रेशित करूंगा कि मैं अपने जीवन के इच्छित गंतव्य पर ही पहुँचूंगा।

इस प्रकार यहाँ आपको स्पष्ट हो गया है कि उन्नयनित–जीवनों के पास जीवन में किसी भी समय पर पाने के लिये स्पष्ट लक्ष्य और उद्देश्य, पहुंचने के

लिये स्पष्ट गंतव्य और सिद्ध करने के लिये एक ध्येय होता है; और वे जानते हैं कि अपने ध्येय की ओर जाते हुए; एक के बाद एक, बहुत कुछ घटेगा जो कि उनकी इच्छा के विरुद्ध और अनुमति के बिना होगा और एकमात्र चीज जो उनकी उन्नति में सहायक होगी वह है उनकी भाषा, उनके शब्द, उनकी मानसिक स्थिति जो उनके विचारों, शब्दों और कार्यों को निर्देशित करेगी।

और इस प्रकार मैंने घोषणा की कि मेरी परिस्थिति व मानसिक स्थिति कुछ भी हो मैं अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ूंगा। मैं नये, भिन्न और बेहतर विचारों का प्रयोग व समर्थन करूंगा। और जीवन में यथास्थिति बनाये रखने के दबाव के आगे नहीं झुकूंगा। मैं खंडित स्थिति में कोई निर्णय नहीं लूंगा जो मुझे पीछे खींच ले। मैं सभी चुनौतियों का सीधे मुकाबला करूंगा। मैं तत्कालिक परिस्थितियों का दुःख और तकलीफ सहूँगा; क्योंकि में जानता हूँ कि यह स्थिति, यह कठिन स्थिति जल्द ही निकल जायेगी। मैं शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दुःख के लिये तैयार हूँ; मैं तैयार हूँ; मैं तैयार हूँ; जीवन के एक लम्बे युद्ध के लिये। मैं लड़ूँगा, मैं सफल होऊँगा; मैं जीतूंगा। हाँ में जानता हूँ मैं कभी भी इस स्थिति में नहीं होऊँगा कि जीवन में आने वाली स्थितियों को नियंत्रित कर सकूं; परन्तु मैं अपने विचारों, शब्दों और कार्यों को नियंत्रित कर सकता हूँ और निश्चित ही करूँगा।

10 मार्च 1981 को, मॉरिस इ. गुडमैन एक सफल अमेरिकी व्यवसायी और शौकिया पायलट – अपने घर से हवाई जहाज की सैर को निकले। उनका जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया किन्तु मौरिस बच गये और उनका बचना चिकित्सा के क्षेत्र की एक अनूठी और ऐतिहासिक घटना है। अस्पताल में उनके परीक्षण के तुरंत बाद चिकित्सकों ने उनकी पत्नी से कहा, श्रीमती गुडमैन मैं चिकित्सा के व्यवसाय में कई वर्षों से हूँ और सच यह है कि आपके पति अभी भी जीवित हैं, यह चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटना है। मेरी जानकारी के अनुसार आज तक कोई भी व्यक्ति गर्दन टूटने के बाद जीवित नहीं रह पाया है। आपके पति की गर्दन दो जगह से टूटी हुई है। उनकी रीढ़ चकनाचूर है। उनकी गर्दन को इतना गम्भीर नुकसान पहुँचा है कि वे कभी भी बोल नहीं पायेंगे। उनकी तंत्रिकाओं को स्थायी नुकसान हुआ है जिसका प्रभाव उनके लीवर, मूत्राशय, गुर्दों और डायफ्राम पर पड़ा है। जिसका अर्थ है कि वे बिना रेस्पीरेटर के कभी भी सांस नहीं ले पायेंगे। उनकी निगलने में सहायता करने वाली मांसपेशियाँ इतनी अधिक क्षतिग्रस्त हो गयी हैं कि वे कभी कुछ खा या पी नहीं सकेंगे। मुझे आपको यह बताते हुए बहुत दुःख हो रहा है किन्तु वास्तव में मुझे नहीं लगता कि वे यह रात निकाल पायेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति ने सोच लिया था कि मॉरिस नहीं बचेंगे; एक के अलावा – स्वयं मॉरिस; वे अपना सिर भी नहीं हिला पा रहे थे, अतः उनसे पलकें बंद

कर प्रश्न का उत्तर देने को कहा गया, कि क्या वे चाहते हैं; कि उनका ऑपरेशन किया जाये, हालांकि यह ऑपरेशन अपने आप में अनूठा और कठिन है तथा इसके सफल होने की संभावना भी 1:1000 है और यदि वे बच गये तो उनके साथ सबसे अच्छा यही होगा कि अब से 20 माह बाद वे जीवन भर व्हीलचेयर पर बैठ पायेंगे और यह भी एक चमत्कार होगा।

मॉरिस ने सिर्फ एक बार आँखें झपका कर न केवल ऑपरेशन के लिये स्वीकृति दी, बल्कि अपने लिये एक लक्ष्य भी निर्धारित कर लिया कि उन्हें आने वाले क्रिसमस से पहले अपने पाँवों से चलकर अस्पताल से बाहर जाना है। उनके विचार, शब्द व कार्य, वास्तव में एक उन्नयनित जीवन वाले व्यक्ति के थे!

उनका ऑपरेशन किया गया और चूंकि ऑपरेशन सफल रहा; डाक्टरों ने घोषणा कर दी कि उनके बचने की उम्मीद बहुत कम है। किन्तु उन्होंने स्पष्ट किया कि मॉरिस फिर भी कभी जीवन में बात नहीं कर पायेंगे, चल नहीं पायेंगे। और अपने आप, बिना रेस्पीरेटर के सांस भी नहीं ले पायेंगे। डॉक्टरों का विचार था कि वे अपना शेष जीवन एक पंगु पौधे की तरह ही बितायेंगे, किन्तु वे मन ही मन अपना कोई अन्य ही चित्र देख रहे थे। उन्हें अपने पूरे मन व बुद्धि से यह विश्वास था कि वे जल्द ही सामान्य हो जायेंगे और जब वे अपनी आँखें बंद करते तो स्वयं को अपना प्रिय हवाई जहाज फिर से उड़ाते देखते।

अपने विचारों, शब्दों एवं क्रियाओं की सकारात्मकता के साथ उन्होंने अपने लिये कुछ अल्प व दीर्घकालिक लक्ष्य तय किये; उसी वर्ष क्रिसमस तक अपने पैरों पर चलकर अस्पताल से बाहर जाना, उनका दीर्घकालिक लक्ष्य था; और अल्पकालिक लक्ष्य थे, बोलना, बिना मशीन सांस लेना, भोजन निगलना और फिर अस्पताल से बाहर निकलना। उन्होंने अस्पताल के कर्मचारियों के साथ वार्तालाप के नये तरीके निकाले जिनमें वे चार्ट व चित्रों की सहायता लेते थे, उनका अगला लक्ष्य था अपने आप सांस लेना हर बार जब वे इसका प्रयत्न करते सिर्फ असफल होते; किन्तु वे हिम्मत हारने वाले नहीं थे और बार-बार प्रयत्न करते रहे। जब उन्हें दूसरे अस्पताल में ले जाया जा रहा था, तब उन्होंने अपने वार्तालाप के पसंदीदा तरीके चार्ट व चित्रों का प्रयोग कर, जिस डॉक्टर ने उनका ऑपरेशन किया था, उनके लिए एक संदेश छोड़ा:

"कृपया डॉ. मैथ्यूज को बता दें कि अगले छ: माह में मैं दोबारा अस्पताल में आऊँगा और मैं जब आऊँगा तब मैं चलकर उनके ऑफिस में जाकर उनसे हाथ मिलाउँगा।"

अस्पताल के कर्मचारियों ने सोचा कि मॉरिस बेवकूफ है; जिसे लगता है कि वह अपना लक्ष्य पा लेगा; और उनके वास्तविक मित्रों ने, जिन्हें उनसे हमदर्दी थी, कहा कि असम्भव स्वप्न देखकर स्वयं को प्रताड़ित करते रहें, इसकी तुलना में यह मान लेना सरल होगा कि यह सम्भव नहीं है। लेकिन मॉरिस जानते थे कि

वे यह कर दिखायेंगे और उनके विश्वासानुसार उस वर्ष क्रिसमस से पहले वे अपने दोनों पाँवों पर चलकर अस्पताल से बाहर आये। उन्हें प्रेरित करने वाले थे; उनके ये विचार शब्द व कार्य:

विचार : उनके विचार एक योद्धा के थे; उन्हें पूर्ण विश्वास था कि वे बच जायेंगे और इस दु:खद घटना से उभरकर फिर से वही सामान्य जीवन जीयेंगे।

शब्द : उनके शब्द पुर्नजीवन के थे। सिर्फ पलकें झपकाकर उन्होंने स्वयं को व डाक्टरों को भी यह संदेश दिया कि वे ठीक हो जायेंगे। वे अपनी पत्नी, बहन, मिलने वाले लोगों व अस्पताल के कर्मचारियों से भी कहते रहे कि वे जल्द ही ठीक हो जायेंगे; और वे सब उन्हें चुस्त और तंदुरुस्त हो, अस्पताल से बाहर जाता देखेंगे।

कार्य : उनके सभी काम एक उत्तरजीवी के थे, वे अपने गले पर एक गेंद रखकर घंटों बोलने का अभ्यास करते, व न तो थकते और न ही हिम्मत छोड़ते। अस्पताल के नियमों का उल्लंघन कर वे बाहर से भोजन मंगवाते व जूस पीने का प्रत्यत्न करते। वे चलने का प्रयास करते, हालांकि इस दौरान कुछ दुर्घटनाएँ भी हुईं। वे जिग जिगलर के प्रेरणात्मक ऑडियो सुनते जो उनमें आशा और सकारात्मकता का संचार करते और उन्हें लक्ष्यों व उन लक्ष्यों की शक्ति की याद दिलाकर उनका यह विश्वास और दृढ़ कर देते कि वे जो चाहते हैं, पा लेंगे।

उन्होंने अस्पताल के अन्य रोगियों में भी, जिन्हें उन्हीं की तरह, विकलांग घोषित कर दिया गया था इस आशा का संचार किया कि यदि वे मौत के द्वार तक पहुंचने वाले एक्सीडेंट से उबरकर फिर से सामान्य होने का साहस कर सकते हैं तो वे भी अपनी शारीरिक विकलांगताओं पर विजय प्राप्त कर एक सामान्य जीवन की आशा कर सकते हैं; चाहे चिकित्सा शास्त्र कुछ भी कहें और इस प्रकार वे कई लोगों के लिये शक्ति व साहस का स्त्रोत बन गये।

उनके आसपास के प्रत्येक व्यक्ति को पता था कि एक दिन वे, वह पा लेंगे जिसका निर्णय उन्होंने स्वयं के लिये लिया है; और वे सभी उनका स्वप्न साकार करने में जुट गये, और इस यात्रा में उनकी हर संभव तरीके से मदद की। मॉरिस अपनी घोषित तिथि पर स्वयं के पैरों पर चलकर अस्पताल से बाहर आये और यही नहीं थोड़े दिनों बाद उन्होंने एक सामान्य जीवन जीना भी आरम्भ कर दिया; इस दौरान मॉरिस से मिलने वाला हर व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना न रह सका। यही कारण है कि आज पूरा विश्व उन्हें प्रेम से “मिरेकल मैन” (चमत्कारी मनुष्य) नाम से बुलाता हैं।

विचारों, शब्दों और क्रियाओं की क्या महत्ता है और वे कैसे हमारे जीवन को संवार या बिगाड़ सकते हैं – आईये इस पर एक और महान् व्यक्ति की चर्चा कर, रोशनी डालें। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लाखों यहूदी, पोल, रूसी व जिप्सियों को पकड़कर जर्मन सेनाओं ने बड़ी निर्ममता से मौत के घाट उतार दिया था, इस समय को "होलोकास्ट" का नाम दिया गया जिसका अर्थ है – नाज़ी शासन द्वारा यूरोपिय यहूदियों और अन्यों का नरसंहार। इस क्रूरता के शिकार हुए लाखों लोगों में एक व्यक्ति थे विक्टर फ्रैंकल। विक्टर एक मनोचिकित्सक थे और मूलत: वियना के रहने वाले थे। वे एक सफल व्यक्ति थे और अच्छा जीवन जी रहे थे, किन्तु वे एक यहूदी थे और इसी कारण उन्हें ऑजविट्स के नाज़ी कॉन्सनस्ट्रेशन कैम्प में डाल दिया गया – मारने के लिये। वहाँ पहुंचकर जब उन्होंने नरसंहार देखा तो विक्टर ने अपने लिये तीन लक्ष्य तय किये–

1. जीवित रहना
2. अपने चिकित्सीय ज्ञान व कौशल का प्रयोग कर वे जिसकी भी सहायता कर सकते हैं, करना।
3. इस नरसंहार के बीच प्रयत्न करना व कुछ सीखना; एक ऐसा लक्ष्य जो केवल सार्थक व उन्नयनित जीवन जीने वाले लोग ही अपने लिये तय कर सकते हैं।

और विक्टर ने वास्तव में तीनों लक्ष्य प्राप्त किये। उन्हें 'होलोकास्ट सर्वाईवर' के नाम से जाना जाने लगा और उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी "मैन्स सर्च फॉर मीनिंग" जो कि बेस्ट सेलर सिद्ध हुई। इस पुस्तक के द्वारा उन्होंने अपने कॉन्सनट्रेशन कैम्प के अनुभव पाठकों के साथ बांटे और उन्होंने इस पृथ्वी के नर्क में जो भी सीखा उससे लोगों को अवगत कराया।

अपनी पुस्तक में फ्रैंकल कहते हैं कि उनके साथ ऑरविट्स पहुंचे अधिकांश कैदियों को वहाँ पहुंचते ही मार दिया गया था; किन्तु उन्होंने तय कर लिया था कि उन्हें जीना है और फिर मात्र अपने विचारों, शब्दों और कार्यों की शक्ति से उन्होंने अपना पहला लक्ष्य पा लिया; वह था तत्काल मृत्यु से बचना – जो कि अन्य लोगों से भिन्न था; और जो लोग उन खतरनाक परिस्थितियों में काम पर भेजे जाते थे, उनमें नाम दर्ज करवाना।

ऑरविट्स में विक्टर ने अपने जीवन का सर्वाधिक कठिन समय बिताया; अपने आशावाद, सकारात्मकता और दृढ़निश्चय के बावजूद, यह स्वाभाविक है कि मनुष्य इतनी भयंकर परिस्थितियों में अपने होशो–हवास खो दे और विक्टर इसके अपवाद नहीं थे। अंधेरे कमरे में अकेले बैठे हुए निरन्तर अगली विचित्र घटना के घटित होने के इंतजार में उनके मन में तुच्छ विचार आने लगते – क्या उन्हें रात का भोजन मिलेगा, क्या वे एक सॉसेज के बदले में एक डबलरोटी

का टुकड़ा पा सकेंगे, क्या उन्हें अपनी सिगरेट के बदले सूप का एक कटोरा ले लेना चाहिए आदि। किन्तु उन्होंने घोषित किया था कि वे हमेशा एक उन्नयनित जीवन जियेंगे और वे अपने विचारों को दूसरे विषय पर ले जाते। अचानक उन्होंने स्वयं को वियना में किसी व्याख्यान कक्ष के स्टेज पर खड़ा देखा; जहाँ भरपूर प्रकाश था और लोग बहुत ध्यान व अचंभे से उनका व्याख्यान सुन रहे थे। वे बहुत प्रसन्न और सभी दुःखों से स्वतंत्र थे और फिर से एक स्वायत्त जीवन जी रहे थे। वे कॉन्सेन्ट्रेशन कैम्प के मनोविज्ञान पर भाषण दे रहे थे। उन्होंने स्वयं से कहा कि वे इस स्वप्न को वास्तविकता में बदलेंगे और वे उसे साकार करने के लिये एक कठिन पथ पर चले पड़े।

उनके विचार, शब्द व क्रियाऐं उस व्यक्ति की थीं जो नर्क से बच निकलने वाला है, उन्हें परिस्थिति से ऊपर उठकर दुःख, कष्ट जीतने में सफलता मिली; इससे उन्हें यह युद्ध लड़ने के लिये हिम्मत, धीरज व दृढ़ता मिली, ताकि वे जीतकर अपने तीनों लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

इन दोनों महान व्यक्तियों से वर्षों पूर्व, मैंने जो सीखा वह है कि यदि गुडमैन और फ्रैंकल जैसे लोग, सिर्फ अपने विचारों, शब्दों और कार्यों की शक्ति से, मौत के मुंह से बचकर आ सकते हैं, तो हम जो मॉरिस की वनस्पतीय स्थिति व फ्रैंकल द्वारा भोगी अमानवीय व लाचारी की स्थिति से बहुत अच्छी स्थिति में हो कर अपने व अपने आसपास के लोगों के लिये कितना कुछ पा सकते हैं; और इस संसार को बेहतर स्थान बना सकते हैं; परन्तु फिर भी हम अपना जीवन छोटी-छोटी बातों की शिकायत करते हुए, भुनभुनाते हुए और नगण्य मुद्दों पर रोकर बिता देते हैं और अंत में एक सामान्य व्यक्ति बने रहते हैं।

मेरे प्रिय मित्रों; विचार, शब्द और कार्य हमें जीवन को किस प्रकार ढालना है, इसमें बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत: मेरी प्रत्येक को विशेष सलाह है कि अपने विचारों, शब्दों और कार्यों पर ध्यान दें और उन्हें आकार दें; जिससे आप सामान्य जीवन पीछे छोड़, उन्नयनित जीवन के लिये प्रयत्नशील हो सकें।

सन् 1989 में जब मैं युरेका फोर्ब्स का लोकेशन हेड था, मेरे जीवन का उद्देश्य डिविज़नल सेल्स मैनेजर बनना था। उन दिनों मेरे तीन अधिकारी चाहते थे कि मैं अपनी बदली गुजरात करवा लूँ। मैं नरसी मोनजी इंस्टीट्यूट से मास्टर ऑफ मैनेजमेंट कोर्स की पढ़ाई कर रहा (पार्ट-टाईम सायंकाल 7-9) और इसी कारण बदली नहीं चाहता था। मेरे निर्णय से मेरे अधिकारी मुझसे नाखुश थे और चूंकि मैंने बदली स्वीकार नहीं की, डिवीजनल सेल्स मैनेजर का पद पदोन्नति के बाद मेरे एक सहकर्मी को दे दिया गया। मैं भारत का नं. 1 ब्रांच मैंनेजर था और सबसे योग्य उम्मीदवार भी, मेरे सेल्स के आँकड़े सर्वाश्रेष्ठ थे, फिर भी मुझे प्रमोशन नहीं दिया गया। दूसरे नगर के ब्रांच मैंनेजर को मौका दिया गया और यही नहीं उसे मेरा बॉस भी बना दिया गया। एक अहंकार वाले व्यक्ति के लिये यह अपमान

और शर्म की बात थी किन्तु एक उन्नयनित जीवन के लिये महज एक परिणाम था, जिसे कुछ समय बाद बदला जा सकता था। यह मेरे जीवन का बहुत नाजुक क्षण था, इस अन्याय से टूटकर, मैं यूरेका फोर्ब्स में विश्वास खो सकता था (प्रतिगामी विचार), मैं रो सकता था और मेरे साथ हुए गलत व्यवहार की शिकायत कर सकता था (प्रतिगामी शब्द) और काम छोड़ सकता था (प्रतिगामी कार्य) मेरे सभी सहकर्मी, अधीनस्थ कर्मचारी व मित्र इस अन्यायपूर्ण काम से नाराज थे और मेरे समर्थन में मैनेजमेंट से दो-दो हाथ करने को तैयार थे। उन्होंने मुझे इस निर्णय का विरोध करने को कहा और अपने समर्थन का आश्वासन भी दिया। इनमें कुछ खरे लोग भी थे जिन्हें मुझसे सहानुभूति थी, साथ ही कुछ ऐसे भी थे जो इस घटना का प्रयोग अपना उल्लू सीधा करने के लिये करना चाहते थे। मैं इस राजनीति और लोगों के इन खेलों को लेकर अत्यधिक चौकन्ना था और इन गलत उद्देश्यों का शिकार नहीं बनना चाहता था। फिर मैं इन सभी का बॉस बनना चाहता था और इस बारे में बहुत सावधान था कि मेरे कमजोर विचार, शब्द या कार्य इनके सामने न खुलें क्योंकि यह मुझे नैतिक तौर पर उनका ऋणी बना देगा और मुझे उन्हें मदद व समर्थन देना होगा यदि भविष्य में कभी ऐसी ही परिस्थिति में हुए।

तो फिर मैंने क्या किया? मैं अपने लक्ष्यों से निर्देशित था और देर-सबेर उन्हें पाना चाहता था। अत: मैंने इस परिस्थिति को मेरे साथ खिलवाड़ नहीं करने दिया। मेरे पास दो रास्ते थे- पहला मैं जानता था कि मेरे साथ जो भी हुआ वह ठीक नहीं था और मुझे बहुत बुरा भी लगा। मैं उतना ही क्रोधित था जितने मेरे सहकर्मी और शायद थोड़ा अधिक, लेकिन मैंने अपनी नकारात्मक भावनाओं को उभरने नहीं दिया और स्वयं को ऊर्जावान और स्थिर रखा। मैंने अपनी जोरदार वापसी की अच्छी तैयारी की जिससे कम्पनी मैनेजमेंट को अपना फैसला बदलना पड़े और फिर उचित समय आने पर मैं हिसाब चुकता कर सकूं। दूसरा रास्ता था, मेरे जो अन्याय हुआ में उससे स्वयं को अप्रभावित रखूं और अपने मन में किसी प्रकार की दुर्भावना व बदले का विचार न रखूं और अधिक बड़े कीर्तिमान स्थापित करूँ।

पहला पथ बुद्धि का था और दूसरा बुद्धिमत्ता का। मैंने बुद्धिमत्ता से काम करना चुना। मैंने नकारात्मक भावनाओं को स्वयं पर एक नेनो सेकण्ड के लिये भी हावी नहीं होने दिया; और बदला लेने या विद्रोह करने का तो मुझे विचार हीं नहीं आया क्योंकि मैंने वर्षों पहले स्वयं को अनुदेशित किया था कि मैं ऐसी घटनाओं से स्वयं को अप्रभावित रखूंगा। मैं उतना ही उत्साही, प्रतिबद्ध व निर्देशित रहा जैसा में हमेशा था; क्योंकि अभी भी मेरा लक्ष्य तो डिवीजनल सेल्स मैनेजर बनना था। वास्तव में मैंने अगले ही दिन से अपना काम व परिणाम दुगने कर दिये और अपने लक्ष्य की ओर बढने के लिये अधिक मेहनत करने

लगा। कम्पनी मैनेजमेंट का ध्यान इस पर गया, उन्होंने मेरी योजना समझी और मुझे अपने लक्ष्य तक पहुंचा दिया। मेरे लिये, आगे बढ़ना सर्वाधिक महत्वपूर्ण था और मैंने परिस्थितियों व भावनाओं को अपनी प्रगति को नुकसान नहीं पहुंचाने दिया। मुझे हेनरी फोर्ड के कथन पर विश्वास है, "यदि आप सोचते हैं, आप कर सकते हैं अथवा यदि आप सोचते हैं, आप नहीं कर सकते, तो आप दोनों स्थितियों में ही सही हैं।" एक सेल्स के व्यक्ति के रूप में यदि आप अपने कार्यक्षेत्र (फील्ड) में यह सोच कर जाते हैं कि आपका सामान नहीं बिकेगा, तो निश्चित ही खाली हाथ लौटेंगे। यदि आप सौदेबाजी इस विश्वास से आरम्भ करते हैं कि आप जितना चाहते हैं, उतनी कम किमत तक नहीं ला पाएंगे तो आपके विरोधी को उसकी किमत मिल जाएगी। यदि आप मानते हैं कि आपकी फैक्ट्री 500 टन तक ही उत्पादन दे सकती है, इससे अधिक नहीं तो आप कभी 750 टन का लक्ष्य रख भी नहीं पायेंगे। जैसा आपका विश्वास होता है, वैसा ही आपका कार्य भी होता है। आपके विचार ही आपकी विजय या हार निश्चित करते हैं, और यदि जीवन को उन्नयनित होना है तो आपको हर घंटे जीतना होगा; क्योंकि जीतने का एकत्रित अनुभव बहुत महत्वपूर्ण है। अत: आपके सभी विचार, शब्द व कार्य जीतने की दिशा में ही होना चाहिए।

उन सबसे ख़राब चीजों की सूची बनाईये जो आपके जीवन में २०, ३०, ४० या ५० वर्ष बाद घटित हो सकती है – ये आपके परिवार, मित्रों, करियर, भविष्य, व्यवसाय सम्बन्धों, स्वास्थ्य आदि से सम्बन्धित हो सकती हैं।

____

____

____

____

____

____

____

घोषित करें कि इन विपत्तियों में आपके विचार, शब्द और कार्य क्या होंगे और आप किस प्रकार स्वयं को केन्द्रित रख आगे बढ़ेंगे:

____

____

____

____

____

____

____

____

कई बार ऐसे मौके आये हैं जब में पूरी तरह दिग्भ्रमित, उदास, और अंदर से हिल गया था; जी हाँ ऐसे समय मेरे जीवन में भी उसी तरह आते हैं, जैसे वे किसी अन्य के; लेकिन मैं इन क्षणों को अपने भीतर घंटों महीनों तो दूर, कुछ सेकण्ड, मिनिटों या क्षणों से अधिक नहीं रहने देता।

मैंने यह जानने में देर नहीं लगायी कि जब आप उदास, प्रेरणाविहीन और टूटे हुए होते हैं; तो केवल एक व्यक्ति ही आपको उस स्थिति से बाहर निकाल सकता है – आप स्वयं; और जब आप जानते हैं कि केवल आप ही स्वयं को अवसाद से बाहर निकाल सकते हैं, तो मेरा प्रश्न है कि "पहली बात आप अवसाद में जाते ही क्यों हैं?" अतः अपने पूरे जीवन "निरंतर प्रेरित व बढ़िया मानसिक" स्थिति में रहने हेतु आपको कुछ संरचनायें विकसित करनी होंगी – एक ऐसी समर्थन प्रणाली जो इस प्रक्रिया को सरल बना दे। यह संरचना तीन तत्वों से बनी है।

1. लोग।
2. पुस्तकें, ऑडियो, वीडियो।
3. बीते हुए समय से जुड़ना।

लोग

मैंने अपनी समर्थन–प्रणाली का निर्माण अपने आस–पास के लोगों से किया। मैंने अपने जीवन में कुछ चुनिंदा लोगों की पहचान की – मेरी माँ जो मेरे जीवन की महानतम प्रेरणापुंज है, मेरी पत्नी सिंधु, मेरी एक्जीक्यूटिव असिस्टेंट नौशीन और कुछ सहकर्मी व मित्र और फिर इन लोगों को सीएमओ (चीफ मोटीवेटिंग ऑफिसर्स) का पद दिया। मैंने घोषित किया कि मैं इन व्यक्तियों के पास तभी जाऊँगा जब दिग्भ्रमित, उदास, और हिला हुआ अनुभव कर रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि उनका मुझ पर विश्वास स्वयं मेरे विश्वास से अधिक है और वे मेरे अवसाद, मेरी प्रेरणाविहीनता और उदासियों को तुरन्त ही प्रेरणा, आशा व दृढ़ता में रूपांतरित कर देंगे। यह मुझे जीवन की ओर देखने की योग्यता देगा और मुझमें नयी ऊर्जा, उत्साह का संचार कर, मेरी सकारात्मकता और विचारों, शब्दों व कार्यों की प्रगतिशीलता को नवजीवन देगा।

पुस्तक, ऑडियो, वीडियो

मैं उन पुस्तकों, ऑडियो व वीडियो की शरण लेता हूँ जिन्होंने मेरे करियर के आरम्भिक दिनों में मेरे विचारों, शब्दों और कार्यों का निर्माण किया। डॉन बैवेरेज की 'द अचीवमेन्ट चैलेन्ज' दीपक चोपड़ा की '47 स्पिरीचुअल लॉज ऑफ सक्सेस', जोनाथन लिविंगस्टन की 'सीगल' और रिचर्ड बॉक की 'इल्यूज़न', कुछ ऐसी पुस्तकें हैं जो कि मेरी प्रेरणा व आशा के स्थायी स्त्रोत हैं। मैं जब भी स्वयं से निराश व उदासी का अनुभव करता हूँ, इन्हीं की शरण में चला जाता हूँ और ये पुस्तकें आगे का मार्ग दिखा देती हैं। आज तक मेरे जीवन में वह क्षण नहीं आया है जब इन पुस्तकों ने मेरी समस्याओं का समाधान न किया हो।

बीते हुए समय से जुड़ना

समर्थन प्रणाली का मेरा अंतिम और सर्वाधिक कार्यकारी तत्व है, अपने बीते हुए समय से संबंध स्थापित करना। इस दौरान में उन स्थानों पर जाता हूँ जो – मेरे करियर के आरम्भिक दिनों के महानतम संघर्षों, रूपांतरों और सफलताओं के साक्षी रहे हैं।

जब कभी मुझे भावनात्मक कमजोरी का अनुभव होता हैं, तो मैं अधिकतर 'सुकन्या' चला जाता हूँ, यह अंधेरी ईस्ट (मुंबई) में एक छोटी सी बार है, यहाँ मैं एक सेल्स मैनेजर के लम्बे व थकाने वाले दिन के बाद एक ड्रिंक के लिये बैठ जाया करता था, एक और जगह है, खुशरो बाग, पारसी कालोनी, जहाँ मैंने यूरेका फोर्ब्स में कार्य करते हुए अधिकतम वैक्यूमक्लीनर्स बेचे थे। मैं लोकल ट्रेन या बस में सफर करता हूँ या फिर ग्रांटरोड ईस्ट में प्रॉक्टर रोड से स्लेटर रोड

की ओर जाने वाली सड़क पर सैर के लिये निकल जाता हूँ, जो किसी समय मेरी सेल्स टैरिटरी हुआ करती थी, या फिर ढाके कालोनी से अंधेरी स्टेशन तक, जो रास्ता, मैं रोज, 40 पैसे बचाने के लिये पैदल तय किया करता था।

ये सभी जगहें मुझे अपनी जीवन के आरम्भिक दिनों की याद दिला देती हैं – एक कर्ज में डूबे, यूरेका फोर्ब्स के डोर–टू–डोर सेल्समैन की; और फिर सुकन्या में अपने ड्रिंक का घूँट लेते हुए मैं अपने जीवन पर नज़र डालता हूँ – एक अच्छा घर, घर के बाहर खड़ी एस–क्लास मर्सीडीज़, जीवन के सभी सुख–सुविधायें, स्मार्ट, लाखों जीवन, मैं जिन्हें रूपांतरित कर पाया, आदर व किर्ती जो मैंने अर्जित की – नगण्य से जीवन आरम्भ कर आज के सफल जीवन का बोध, मुझ में विश्वास, हिम्मत व आत्मविश्वास का संचार कर देता हैं।

आज के संसार में, एक अकेला रह गया व्यक्ति जीवन के प्रति अपना उत्साह खोने लगता है, नकारात्मक विचार, शब्द व कार्यों का विकास होने लगता है, और नुकसानदायक निर्णय ले लेता है, जो जीवन को सही दिशा से पूरी तरह हटा देते है। किन्तु जीवन उन्नयनित करने के लिये आपको अपने चारों ओर एक समर्थन प्रणाली व तंत्र की रचना करनी होगी, जो कि यह सुनिश्चित करता है कि कठिन व संघर्षपूर्ण स्थितियों में आप सकारात्मक व प्रगतिशील बने रहें।

आपके सी.एम.ओ. (चीफ मोटीवेटिंग ऑफिसर) पुस्तकें, ऑडियो, वीडियो और बीते दिनों से जुड़ने के तरीके, मेरे तरीकों से पूरी तरह भिन्न हो सकते हैं, अत: मैं किसी पुस्तक या ऑडियो या वीडियो की सिफारिश नहीं करूँगा, जो आपको समर्थन–तंत्र का लाभ दे सके। अपने समर्थन–तंत्र का निर्माण स्वयं करें, जो आपको क्षणिक उदासी व दु:खों से उबार सके।

आपके सी. एम. ओ., पुस्तकें, ऑडियो, वीडियो व बीते दिनों से संबंध स्थापित करने के तरीके, जिन्हें आप अपने विचारों शब्दों और कार्यो को प्रेरित व उत्साही बनाये रखने के लिए प्रयोग करते हों, को यहाँ सूचीबद्ध करें।

सी. एम. ओ.

____

____

____

पुस्तकें, ऑडियो व वीडियो

बीते दिनों से सम्बंध

आपको स्वयं को एक कमांडमेंट देना होगा कि जब भी आप निरुत्साहित हों वह आपको इस तंत्र का प्रयोग करने की याद दिलाये। इसे आपको आज ही देना होगा और फिर प्रतिदिन स्वयं को इसकी याद दिलानी होगा ताकि आप, अपने चारों ओर फैले भय व असुरक्षाओं का सामना करते हुए प्रतिबद्ध रहें।

मैंने स्वयं को यह कमांडमेंट 4 अक्टूबर 1985 को दिया था, जिस दिन मैंने यूरेका फोर्ब्स में अपने करियर का आरम्भ किया था। मैंने अपने जीवन के 19वें, 29वें, 39वें, 45वें व 49वें वर्ष में इन नियमों का अनुसरण किया है और आज भी

कर रहा हूँ। मैं, जीवन द्वारा प्रस्तुत किसी भी चुनौती का सामना कर विजयी बन, उभरने के लिये पूरी तरह से तैयार हूँ – उत्साह व ऊर्जा से भरपूर।

अपने जीवन को जीवन–पर्यंत उन्नयनित रखने के लिये आपको यह आज्ञा, यह अनुदेश, यह निदेश, यह आदेश, यह प्रभु का विधान, यह कमांडमेंट, स्वयं को अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे व प्रति मिनट देना होगा।

इलेवन कमांडमेंट्स में से छठा .....

अपने विचारों, शब्दों व कार्यों को घोषित करें।

कमांडमेंट
7

घोषित करें कि आप आजीवन लीडर रहेंगे

**उद्देश्यहीन जीवन किसी को
प्रभावित नहीं करता**

जैसा कि मैंने इस पुस्तक के आरम्भ में कहा था, यह पुस्तक साधारण मनुष्यों के लिये नहीं है, जो साधारण परिस्थितियों में साधारण जीवन जीते हैं। यह पुस्तक उन लोगों के लिये है जिनके पास असाधरण कार्य करने की हिम्मत व साहस है, और ऐसा करने की प्रक्रिया में वे यथास्थिति का विरोध करते है, मान्य मानदंडों को तोड़ते हैं, अपनी व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक चुनौतियों से लड़ते हैं और अपने नाम, कीर्ती व प्रसिद्धि का ऐसा निर्माण करते हैं कि संसार पर अपनी अमिट छाप छोड़ सकें और वह उन्हें उनके जाने के बाद भी याद रखें। इस तरह के लोगों को 'लीडर' कहते हैं।

जोल बारकर के शब्दों में,

"लीडर वह व्यक्ति है, जिसका चुनाव आपने उसके पीछे उस स्थान पर जाने के लिये किया है जहाँ आप स्वयं नहीं जा पायेंगे।"

आगे बढ़ने से पहले चार बार इस परिभाषा को पढ़ें।

यह किसी सामान्य विचारक के सामान्य विचार नहीं है। यह एक गहरी परिभाषा है, जो नेतृत्व के जाने माने विद्वान जोल पारकर द्वारा दी गयी है। एक ऐसी परिभाषा है, जिसे यदि अच्छी तरह समझकर अपने अंदर उतार लिया गया तो वह नेतृत्व का महानतम गुरुमंत्र बन सकती है। सभी पाठकों के लाभ के लिये मैं इसे फिर दोहराता हूँ,

"लीडर वह व्यक्ति है, जिसका चुनाव आपने उसके पीछे उस स्थान पर जाने के लिये किया है, जहाँ आप स्वयं नहीं जा पायेंगे।"

क्या आप उन स्थानों के बारे में सोच सकते है, जहाँ आप अकेले जाने का साहस नहीं कर पायेंगे? सर्वाधिक प्रचलित उत्तर है, "भविष्य"।

अगला प्रश्न है कि 'आप भविष्य में स्वयं क्यों नहीं जा सकते?' आइये, आपके लिए मैं ही इसका उत्तर दूँ, भविष्य भयावह है, यह अनजान व अपरिचित है। यह चुनौतीपूर्ण, सिहरन पैदा करने वाला व डरावना है, यह अनिश्चितता व असुरक्षा से भरा है, जोखिमों और भय से भरा है। भविष्य का अर्थ मृत्यु या पूरी बर्बादी हो सकता है। यह कोई आम मनुष्यों का आम खेल नहीं है, यह उन लोगों के लिये है जो जीवन में कुछ असाधारण पाना चाहते हैं। उन आकांक्षाओं व महत्वाकांक्षाओं तक पहुँचना चाहते है, जिनकी वे कल्पना तो कर सकते है परन्तु अकेले पा नहीं सकते, उन्हें एक नेता की आवश्यकता होती है – एक ऐसा व्यक्ति, वे जिसका चुनाव, उसका अनुसरण करने के लिये करेंगे, यहाँ सारा अंतर 'चुनाव' शब्द से ही आता है।

मैं ऐसे कई लोगों या लीडरों को जानता हूँ, जो अपने आधिनस्थों, अनुयायियों से परेशान, नाराज रहते हैं, क्योंकि वे उनके अनुदेशों का पालन नहीं करते या उनके आदेशों की अवहेलना करते हैं, इन लोगों को इस बात का बोध नहीं होता कि यह नेता के हाथ में नहीं है कि वह अनुयायियों को प्रभावित कर अपने अनुनयन के लिये प्रेरित कर सके, अपितु यह शुद्ध रूप से अनुयायी की इच्छा है कि वह अपने लीडर का अनुनयन करेगा या नहीं। अत: अपने जीवन के उन्नयन हेतु यह आवश्यक है कि आप यह घोषित कर दें कि आप आजीवन लीडर रहेंगे। और फिर ऐसा लीडर बनने के लिये, जिसका लोग अनुसरण करें, आपको स्वयं में विशेष योग्यताओं, क्षमताओं व गुणों का विकास करना होगा जो आपके आसपास के लोगों को प्रभावित कर सकें, आपको इतने प्रबल चरित्र का निर्माण करना होगा कि लोग आपका साथ चाहें। आपको ऐसी भाषा का विकास करना होगा जो इतनी संक्रमणकारी है कि लोग आपको कॉपी करें। विशिष्ट नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन आवश्यक है।

कोई भी व्यक्ति मात्र संयोग से नेता नहीं बनता। इसके लिये रूपरेखा बनानी होती है। यह कोई एक बार का फैसला नहीं है, बल्कि आजीवन रहने वाली घोषणा है जो आपके जीवन के साथ ही जायेगी, और ऐसा करने के लिये, आज ही आपको इसकी घोषणा करनी होगी चाहे आप 26, 35, 43 वर्ष के हों या जो भी आपकी आयु हो। आपको घोषित करना होगा कि आप आजीवन एक लीडर रहेंगे और इस उत्तरदायित्व के निर्वाह में आड़े आने वाली हर वस्तु का त्याग करने को तैयार हैं।

मैंने ऐसा ही निर्णय 1985 में लिया था जब मैंने यूरेका फोर्ब्स में अपना करियर आरम्भ किया और आइये आपको यह भी बताउँ कि इसी से सम्बंधित जो घोषणा मैंने 1992 में की, जब मैं अपनी होने वाली पत्नी – सिंधु से मिला। अपनी शादी से बहुत पहले, अपनी सगाई के दिनों में, मुझे याद है, मैंने उससे कहा, सिंधु तुम किसी साधरण व्यक्ति से विवाह नहीं कर रही हो। मैं एक लीडर हूँ और मेरा जीवन, लोगों के जीवन को रूपांतरित करने के मेरे ध्येय को समर्पित है। मुझ से यह आशा मत रखना कि मैं समान्य पतियों की तरह शाम 5.30 बजे घर आऊँगा, सप्ताह के अंत में तुम्हें फिल्म दिखाने या खाना खाने बाहर ले जाऊँगा, और यदि तुम बीमार हुई तो तुम्हारे सिरहाने खड़ा रहूँगा। मेरे पास तुम्हारे लिये उतना ही समय होगा जितना किसी अन्य के लिये क्योंकि मेरा एक ध्येय है जो पाना है, एक उद्देश्य है जो पूरा करना है, एक पूरा संसार है जिसे रूपांतरित करना है, और यह हमेशा मेरे लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहने वाला है।"

और उसी दिन से मैंने एक लीडर की तरह कार्य किया है, एक लीडर की ही तरह व्यवहार किया है और मैं अपनी अंतिम सांस तक एक लीडर ही रहूँगा।

लीडरों को एक और तरह से परिभाषित किया जा सकता है, **"ऐसे व्यक्ति जो सामान्यजनों को जीवन के सभी क्षेत्रों, व्यक्तिगत, व्यावसयिक एवं आध्यात्मिक में निर्देशित करते हैं और इस प्रकार स्वीकार्य मानदंडो, दर्शनों, प्रथाओं, संस्कृतियों और समाज के जमे हुए ढ़ांचो को चुनौती देते रहते हैं।"**

जब मैं यह परिभाषा व इसका एक-एक शब्द लिख रहा था, तो मुझे एक महिला की याद आ रही थी जिसका जीवन इस परिभाषा के एक-एक शब्द का उदाहरण है; वास्तव में, यह गलत नहीं होगा, यदि मैं कहूँ कि उन्हीं के जीवन ने मुझे इन विचारों तथा इस परिभाषा को लिखने की प्रेरणा दी।

कई सम्मानित पुरस्कार जीतने वाली मैडम क्यूरी, जो नोबल पुरस्कार पाने वाली पहली महिला थी, वे एकमात्र महिला है जिन्हें यह पुरस्कार एक से अधिक विज्ञानों के लिये दिया गया; भौतिकी एवं रसायन शास्त्र; उनके अपने देश, पोलैंड, में उन्हें एक महिला होने के कारण उच्च्य शिक्षा से वंचित रहना पड़ा, क्यूरी ने स्वीकार्य मानदंडों, दर्शनों, प्रयासों और समाज की दी हुई रूपरेखाओं को चुनौती दी और अपनी रूचि के विषय, भौतिकी, रसायनशास्त्र व गणित पढ़ने के लिये पेरिस आ गईं।

अपने पति पियरे क्यूरी के साथ काम करते हुए उन्होंने कई व्यक्तिगत व व्यावसायिक धक्के सहे व असफलताएँ झेली, किन्तु उन्होंने प्राकृतिक विज्ञान में अपने अनुसंधान वर्षों तक जारी रखे और संसार को दो महत्वपूर्ण रेडियोधर्मी तत्वों का उपहार दिया – पोलोनियम व रेडियम। इस ग्रह पर अपने छोटे जीवन में उन्होंने 'रेडिएशन' (विकिरण) प्रस्तुत किया जिसके द्वारा कैंसर का सफल उपचार किया जा सकता था। इस प्रकार उन्होंने शुरुआती कैंसर के संभावित उपचार से दुनिया का परिचय करवाया।

आयोनाइजिंग रेडिएशन के दुष्प्रभावों से अनजान और उनके बारे में जानने की चिन्ता किये बगैर बिना किसी सुरक्षा उपकरण/प्रावधान के शाला में उन्होंने अपने अनुसंधान जारी रखे। वे रेडियोधर्मी आइसोटोप्स से भरी परखनलियाँ अपनी जेबों और मेज की दराज़ों में रखे रखतीं, मानो वे कोई साधारण कण हों। उन्होंने कभी भी बीमारी या मृत्यु के भय को अपने काम को बाधित नहीं करने दिया और इसी कारण वे 'एप्लास्टिक एनीमिया' नामक बीमारी की शिकार हो गई, जो कि लम्बे समय तक विकिरण के प्रभाव में रहने के कारण होता है। 66 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हुई किन्तु वे अपने पीछे ऐसी विरासत छोड़ गयीं जो आज तक अमूल्य मानी जाती है।

रेडियो ऐक्टिविटी के जितने अधिक घातक स्तर पर उन्होंने काम किया। उसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके अनुसंधान के कागज़ आज भी सीसे के अस्तर लगे डिब्बों में रखे हैं और जो लोग उन्हें देखना

चाहते हैं वे कागज़ों के सीधे संपर्क में आने से पहले सुरक्षाकवच पहनते हैं। किन्तु मैडम क्यूरी को रेडियो एक्टिविटी की खोज जुनून में इनमें से कोई भी सुरक्षा उपाय अपनाने का विचार कभी नहीं आया। वे केवल कुछ ऐसा देना चाहती थीं जिससे उनकी मृत्यु के बाद आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर संसार मिल सके।

अपने उद्देश्य की ओर प्रगतिशील लीडरों की निष्ठा व प्रतिबद्धता इतनी प्रबल होती है कि इसकी तुलना में उन्हें जीवन भी तुच्छ लगता है।

वे वास्तव में एक लीडर थीं और जब तक वे इस ग्रह पर रहीं, संसार ने उनका अनुसरण करना ही चुना। उनकी खोज के बाद से आज तक करोड़ों साधारण मनुष्य इस दुनिया में आये और चले गये किन्तु उन्होंने अपनी उपस्थिति का अनुभव अपने आसपास के लोगों को भी नहीं होने दिया।

जो चीज़ लीडरों को साधारण मनुष्यों से भिन्न बनाती है वह है उनका इस एकमात्र जीवन में क्या करना है, इसका निर्णय; और यही उन्हें अविस्मरणीय बनाता है। उन्हें कई धक्के व असफलताएँ झेलनी पड़ती हैं किन्तु उन्होंने इन निराशाओं को उन्हें रोकने की अनुमति नहीं दी। वे लीडर के सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण में पूरा विश्वास रखते हैं।

तेज सफलता के लिये तेज असफलता

लीडरों की विशेषता है, कि वे उन चुनौतियों का सामना करने को तत्पर रहते है, जिन्हें उठाने का साहस आम आदमी कभी नहीं करता, वे व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक क्षेत्र में अपने कार्य संपादन के परीक्षण हेतु भी तैयार रहते हैं, और फिर अपनी सफलता अथवा असफलता का प्रयोग स्वयं में सुधार लाकर अगले स्तर तक जाने के लिये करते हैं। वे न केवल परीक्षण, बल्कि माप-तौल एवं उपहास के लिये भी तैयार रहते हैं, उन्हें संसार द्वारा ली गई इन परीक्षाओं के परिणामों व उनसे उभरने वाली सच्चाई का भय नहीं होता और वे उपहास का पात्र बनने, एक कमजोर, अक्षम या महत्वाकांक्षी बेवकूफ के रूप में प्रदर्शित होने के बाद भी अपनी प्रदर्शित रचना या उत्कृष्टता के उद्देश्य की पूर्ति में लगे रहते हैं। वे अपनी हार स्वीकार करने व फिर से नयी शुरुआत करने से नहीं कतराते। वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अपना पद, सुरक्षा व स्वबिम्ब, खोने से नहीं डरते, और यही गुण उन्हें नेता व उन्नयनित-जीवन बनाते हैं।

नीचे दिये गये घटनाक्रम पर दुष्टि डाले		
1831	–	नौकरी खोई
1832	–	इलीनॉय स्टेट लेजिसलेचर के चुनाव में हार
1833	–	व्यवसाय में असफलता
1834	–	इलानॉय स्टेट लेजिसलेचर के चुनाव में सफलता
1835	–	जीवनसाथी की मृत्यु
1836	–	मानसिक संतुलन बिगड़ा
1938	–	इलीनॉय के हाउस स्पीकर के चुनाव में हार
1843	–	अमेरिकी कांग्रेस से नामांकन की दौड़ में हार
1846	–	कांग्रेस के लिये निर्वाचित
1848	–	पुर्ननामांकन में हारे
1849	–	लैंड ऑफिसर के पद हेतु अस्वीकृत
1854	–	अमेरिकी सीनेट की चुनावी दौड़ में हार
1856	–	उपराष्ट्रपति पद के नामांकन की दौड़ में हार
1858	–	अमेरिकी सीनेट की चुनावी दौड़ में फिर हार
1850	–	अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गये
(रॉन करटस अमेरिका फॉर चैम्पियंस एजूकेशनल एवं पर्सनल डेवेलपमेंट, वेबसाइट के संस्थापक, द्वारा)		

यह अब्राहम लिंकन की कहानी है। अमेरिका के सर्वाधिक सफल व अभिलाषित राष्ट्रपति और रिपब्लिकन पार्टी से बने पहले। लिंकन कभी असफलताओं से भयभीत नहीं हुए, वास्तव में उनका जीवन असफलताओं की कड़ी है, जिन्होंने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया जिसने अपनी असफलताओं को सफलताओं तक पहुँचने का माध्यम बना लिया।

आइये अब हम व्यवसाय की दुनिया में चलें, जो कि सफलताओं और असफलताओं का महासागर है हेनरी फोर्ड जिन्हें आज एक बिजनेस मैगनेट, एक लोक–परोपकारी और एक सामाजिक उद्यमी के रूप में जाना जाता है, वे वास्तव में अपने जीवन में कई बार असफल हुए:

★ जब उन्होंने अपनी पहली कंपनी, डेट्रॉयट ऑटोमोबाइल कंपनी की स्थापना की और 86,000 डॉलर खर्च करने के बाद भी, एक भी कार तैयार नहीं की, तो उनके पहले निवेशकों ने अपने हाथ खींच लिये।

★ अंतत: उन्होंने एक कार निर्मित की और 60,000 डॉलर शेयर पूंजी के रूप में इकट्ठा किये, लेकिन 1901 में डेट्रायट ऑटोमोबाइल कम्पनी का दिवाला निकल गया, कारण था – ग्राहकों द्वारा ऊँची कीमत व खराब क्वालिटी की शिकायत।

★ दूसरी कम्पनी जो उन्होंने आरम्भ की, हेनरी फोर्ड कम्पनी, बैठ गई क्योंकि उनके व उनके भागीदार के बीच मतभेद उत्पन्न हो गये थे।

- ★ 1920 में हेनरी फोर्ड ने अपनी मॉडल टी कार को उन्नत बनाने या नया मॉडल लाने से मना कर दिया, जिससे उनकी कारों की बिक्री गिर गयी, और यही कारण रहा उनकी तीसरी कंपनी 'फोर्ड मोटर कम्पनी' के बैठ जाने का।
- ★ फोर्ड ने एक राजनीतिक करियर आरम्भ करने का प्रयत्न किया किन्तु कभी सफल नहीं हुए।
- ★ वे अपनी एक उद्यमी की यात्रा में पांच बार असफल हो दीवालिया घोषित हुए।

और ये वही हेनरी फोर्ड हैं जिन्हें कार इंजिनियरिंग में क्रांति लाने, असेम्बली लाइन प्रोडक्शन, व्यवसाय, सामाजिक नेतृत्व, शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में उनके काम के लिये जाना जाता है और फोर्ड मोटर कम्पनी जिसकी उन्होंने 1903 में स्थापना की और सैंकड़ो असफलताओं के बाद खड़ी की, वह, 2010 में एकत्रित किये गये, गाड़ियों की बिक्री के आँकड़ों के अनुसार अमेरिका में दूसरे पायदान पर और विश्व में पाँचवे पायदान पर है। वे बार–बार, बार–बार और बार–बार असफल हुए, किन्तु उन असफलताओं के बीच से ही उन्होंने अपनी सफलताओं का पथ तैयार किया और किसी भी चीज़ को उन्हें या उनकी चुनौतियाँ स्वीकार करने की योग्यता को बाधित नहीं करने दिया!

'असफलता सिर्फ एक और शुरूआत का मौका है,
इस समय अधिक बुद्धिमता के साथ।'

–हेनरी फोर्ड

एक अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति जिन्हें अमेरिका के सबसे अच्छे फिल्म निर्माता, निर्देशकों, पटकथा लेखकों, आवाज़ के कलाकारों, एनिमेटर्स, उद्योगियों, मनोरंजनकर्ताओं और परोपकारियों में से एक माना जाता है, उनकी असफलताओं का इतिहास भी, हेनरी फोर्ड से अधिक भिन्न नहीं है अपितु उनकी असफलताऐं कुछ अधिक ही हैं–

- ★ वॉल्ट डिज़्नी को एक अखबार के संपादक की नौकरी से यह कह कर निकाला गया कि उनमें कल्पनाशीलता की कमी है और उनके पास अच्छे विचार भी नहीं है।
- ★ 22 वर्ष की आयु में वे दीवालिया हो गये, जब उनकी कार्टून सीरीज़ केनसास शहर में असफल रही।
- ★ 'औसवॉल्ड द लकी रैबिट' उनके एक सफल कार्टून चरित्र की सफलता के पीछे–पीछे ही वॉल्ट को पता चला कि उनके वितरक ने न केवल गलत

तरीके से इस कार्टून चरित्र के मालिकाना हक, हथिया लिये हैं, बल्कि वॉल्ट के साथ काम करने वाले अधिकांश कलाकारों ने भी वितरक के साथ काम करने के समझौते कर लिये हैं। एक तरह से वॉल्ट का पूरा संघठन ही उन्होंने हथिया लिया था, अब वॉल्ट अकेले थे और उन्हें नयी शुरूआत करनी थी।

★ औसवॉल्ड की जगह उन्होंने एक नये चरित्र 'मिकी माउस' की रचना की और जब 1927 में उन्होंने एमजीएम स्टुडियो को मिकी माउस का वितरण करने को कहा, तो उन्हें कहा गया कि यह विचार चलने वाला नहीं हैं – स्क्रीन पर एक दैत्याकार चूहा महिलाओं को भयभीत कर देगा।

★ जब उन्होंने पहली बार डिज़्नीलैंड की मानसिक कल्पना तैयार कर लोगों के सामने रखी; तो उनके द्वारा प्रस्तावित पार्क, एनएहेम शहर द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया था, उनका मानना था कि यह केवल निम्न श्रेणी के लोगों को ही अपनी ओर खींचेगा।

★ डिज़्नीलैंड बनाने से पहले, कई बार उनका दीवाला निकला किन्तु उन्होंने प्रयत्न जारी रखा।

वॉल्ट ने सब कुछ किया सिवा हिम्मत हारने के! अंततोगत्वा उन्हें सफलता मिली ही, 81 फीचर फिल्मों, सैकड़ों छोटी फिल्मों के सफल निर्माण का श्रेय उन्हें जाता है। उन्हें 950 से अधिक सम्मान मिले, जिनमें 48 अकादमी पुरस्कार व 22 ऑस्कर शामिल हैं, साथ ही उन्होंने कैलिफॉर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ आटर्स की स्थापना भी की।

अब्राहम लिंकन, हेनरी फोर्ड या वॉल्ट डिज़्नी कई बार असफल रहे किन्तु उन्होंने अपने जीवन और अपने व्यवसायों/कम्पनियों/उद्देश्यों को पुर्नजीवन दिया और उन्हें आशातीत ऊँचाईयों पर ले गये। आज उन्हें उनकी सफलताओं और उपलब्धियों के लिये जाना जाता है, न कि उनकी अस्थायी असफलताओं के लिये।

बड़ी असफलताओं का साहस रखने वाले ही
महान उपलब्धियाँ हासिल करते है।

–रॉबर्ट एफ. कैनेडी

अपने जीवन की सभी बड़ी असफलताएँ आपने उनमें से प्रत्येक से जो सीखा, और यदि भविष्य में आपको उस स्थिति का सामना करने का मौका फिर मिले तो आप कौन सा पथ चुनेंगे नीचे दिये गये स्थान में सूचीबद्ध करें।

असफलताएँ	नया पथ	सीख

प्रतिशोध की ताकत: एक लीडर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण

'प्रतिशोध' या 'वेनेजेंस' शब्द का अंग्रेजी में अधिकतर नकारात्मक अर्थ में प्रयोग किया जाता है, बदले की इच्छा वाले व्यक्ति को एक बुरा व्यक्ति समझा जाता है, एक ऐसा व्यक्ति जो माफ नहीं कर सकता और आँख के बदले आँख के दर्शन में विश्वास करता है – एक ऐसा व्यक्ति जो हमारी अब तक की चर्चा के अनुसार लीडर नहीं हो सकता।

फिर भी 'प्रतिशोध' सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है जो कि एक साधरण व्यक्ति के लीडर बनने के लिए आवश्यक है। एक व्यक्ति का बिना अंदरूनी बदले की भावना का होना, ऐसा लीडर होना है जिसके अंदर लोगों को नेतृत्व देने, समस्या समाधान और संसार को बदलने की आग नहीं है। जी हाँ, यहाँ हम उस सकारात्मक प्रभाव की बात कर रहे हैं, जिसका निर्माण प्रतिशोध एक लीडर के जीवन में करता है।

प्रतिशोध, एक व्यक्तिगत क्रोध है, जिसका निर्माण आप अपनी भीतर बहुत सतर्कता से सोच–समझकर करते हैं, ताकि आप हर कही–सुनी बात या आप पर लगाये गये आरोप को स्वीकार न करें और उसका विरोध कर सकें।

आइये इस पर विस्तृत चर्चा करें।

प्रतिशोध एक व्यक्तिगत क्रोध है आप जिसका 'निर्माण' करते हैं। यह कोई आकस्मि[illegible] किसी और द्वारा

थोपा नहीं गया है। यह एक बहुत ही सोच-समझकर व सर्तकता से किया गया चुनाव है। यह इस प्रकार है, मानो आपको कोई कहे कि आप यह नहीं कर सकते, यह आपके बस में नहीं है – और जिस क्षण कोई वास्तव में आपको वही कह देता है, जिसकी आप प्रतिक्षा कर रहे थे, आप अपने भीतर एक विशिष्ट क्रोध अनुभव करते हैं और ठीक वही करने की दिशा में चल पड़ते हैं जो आपको करने या देने से मना किया गया था, या जिसके बारे में कहा गया हो कि यह आपके स्तर पर संभव नहीं हैं।

हालांकि यह एक नकारात्मक मानसिकता है और बदले की क्रिया की ओर इंगित करती है, परन्तु यह आपकी आंतरिक दृढ़ता को दिशा देती है जिससे आप यह सिद्ध कर दुनिया को दिखा सकें कि आप क्या करने में सक्षम हैं। यही है 'प्रतिशोध की ताकत' जिसका एक लीडर में होना अति आवश्यक है। यह आपकी उस मजबूरी, निर्दयता और मनोबल को बाहर लाता है जो कि आपके चारों ओर के प्रतिवेश को बदलने और संसार को एक बेहतर स्थान बनाने के लिये आवश्यक है। हर बार जब कोई चीज़ मुझे नहीं मिल पाती क्योंकि मैं उसे पाने में असमर्थ था या किसी ने मुझे उसके लायक नहीं समझा तो इससे मेरा उस वस्तु को पाने का निश्चय और मजबूत हो जाता है, और मैं अपने आंतरिक प्रतिशोध की ताकत का प्रयोग कर और अधिक आक्रमक जुझारूता से अपनी लक्ष्य प्राप्ति में जुट जाता।

बहुत समय पहले सन् 1980, में जब मैं अपनी किशोरावस्था की आखिरी सीढ़ी पार कर रहा था, मेरी बिल्डिंग में एक लड़का रहता था। हम दोनों बचपन के मित्र थे और चूंकि एक ही बिल्डिंग में रहते थे इसलिए हमारे सम्बंध भी अच्छे थे। उसने बहुत जल्दी पढ़ाई छोड़ दी थी, जबकि मैं आगे पढ़ता रहा और स्नातक स्तर तक की पढ़ाई की। वह "कैन्डी वाइन्स" नामक एक शराब की दुकान पर सेल्समैन था; स्पॉट-सैंलिंग-एजेंट और कमीशन में अच्छा पैसा कमा लेता था। उन दिनों 50 सीसी की मोपेड नयी-नयी बाजार में आई थी और उसने हाल ही में अपनी कमाई से टीवीएस 50 मोपेड खरीदी थी। एक दिन जब मैं बिल्डिंग में प्रवेश कर रहा था, मैंने उसे अपनी मोपेड खड़ी करते हुए देखा, अचानक मेरे मन में उसे चलाने की इच्छा हुई और मैंने उससे अपनी गाड़ी पर एक चक्कर लगाने की अनुमति चाही।

उसने एक क्षण मुझे उपर से नीचे तक ऐसे देखा मानो मैंने कोई अपराध कर दिया हो, फिर उसने अपनी मोपेड की ओर देख जोर से अपनी गाड़ी की कीमत बताई, और कहा, "इसको चलाने की तेरी औकात नहीं है।" उस दिन मैंने मेहनत करने, खूब पैसा कमाने और स्वयं की मोटर साइकिल खरीदने का फैसला किया, और दो महीने यूरेका फोर्ब्स में काम करने के बाद मैंने अपनी औकात सिद्ध की, सारे कीर्तिमान ध्वस्त किये, पर्याप्त पैसा बचाया और एक नयी राजदूत

सीसी टेलीस्कोपिक सस्पेंशन मोटरसाइकिल खरीदी; अपने मित्र की मोपेड से कहीं अच्छी और उसे अपने मित्र की गाड़ी के पास खड़ा किया, आज मेरा कद उसके बराबर था।

मेरे मित्र ने मुझे अपमानित किया, नीचा दिखाया, चुनौती दी और सीमाओं तक धकेला था और मैंने, प्रतिशोध की ताकत का सकारात्मक उपयोग जीवन में आगे बढ़ने के लिये किया।

एक बार, जब में टीम प्रोडक्टिविटी में वाइस प्रेज़िडेंट ऑपरेशन के पद पर कार्य कर रहा था, मेरे ज्वाँइट एमडी मि. ए. डब्ल्यू. जॉर्ज, एक जानी-मानी व प्रतिष्ठित कम्पनी के वाइस प्रेज़िडेंट से मिलने जा रहे थे और उन्होंने मुझे भी उनके साथ चलने को कहा। यह वाइस प्रेज़िडेंट एक बहुत बड़े व्यक्ति थे, अत: मैंने यह मौका हाथ से जाने न दिया। किन्तु जब जॉर्ज ने मेरा परिचय, टीम प्रोडिक्टिविटी के वाइस प्रेज़िडेंट के रूप में दिया तो उन्होंने तल्खी से कहा, "मि. नायर मैं नहीं समझता आप हमें किसी भी रूप में कुछ मूल्यवान दे पायेंगे, क्या आप बाहर बैठेंगे?"

मैंने उस दिन निर्णय लिया कि मैं कॉरपोरेट प्रशिक्षण दुनिया का इतना बड़ा नाम बनूँगा कि इस व्यापारिक घराने को अपने कर्मचारियों को कुछ मूल्यवान देने के लिये मुझे बुलाना पड़े, और इसके बाद, आने वाले वर्षों में मैंने उनके लिये कई कार्यशालाएँ आयोजित की।

इसी प्रकार एक बड़ी भारतीय लगेज निर्माता कम्पनी के, वाइस प्रेज़िडेंट-एच आर और दूरसंचार क्षेत्र की एक दिग्गज कम्पनी के सेल्स-कोऑर्डिनेटर ने भी मुझे भगा दिया था, उनकी सेक्रेटरी, कम्पनी के रिसेप्शन तक, जहाँ मैं बैठा हुआ था चलकर आयीं और कहा, "सेल्स-कोऑर्डिनेटर, अनजान लोगों से नहीं मिलते है, मि. नायर, क्या आप यहाँ से तशरीफ ले जायेगें?" इस सबके बावजूद, एक दिन, इन सभी लोगों को मेरे पास आना पड़ा। क्योंकि वे मेरी सेवाएँ अपने संगठन के लिये चाहते थे। मैंने इन घटनाओं में से प्रत्येक का उपयोग अपने काम व अपनी योग्यताओं और कौशल के संवर्धन के लिये किया जिससे मैंने सदा उत्कृष्ट सेवाएँ दी और मार्केट में ऐसी साख बनायी कि उनके पास और कोई चारा न था। इन घटनाओं के बाद वर्षों तक मैं इन कम्पनियों के प्रत्येक विभाग का मुख्य सेल्स एव नेतृत्व प्रशिक्षक रहा।

आज मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि मैं अपने मित्र, उन वाइस प्रेज़िडेंट, उस एच आर हेड, उस सेल्स कंट्रोलर और उनके जैसे दसियों, सैंकड़ों का, जिनका सामना मैंने अपने जीवन में किया - दिल से आभारी हूँ क्योंकि यदि ये सब न होते और यदि उन्होंने मेरा अपमान न किया होता, मुझे लज्जित न किया होता, तो शायद मैं एक सामान्य मनुष्य ही रह गया होता। किन्तु मेरे भीतर के प्रतिशोध और उन्हें गलत सिद्ध करने की मेरी इच्छा के कारण ही मैंने बेहतर बनने और

अधिक उपलब्धियों के लिये जी तोड़ मेहनत की और वह बन सका, जो आज मैं हूँ।

अपने जीवन की पाँच ऐसी घटनायें लिखें जहाँ आपका अपमान हुआ हो, साथ ही यह भी लिखें कि अपना आत्मविश्वास वापस पाने के लिये आप प्रतिशोध की शक्ति का प्रयोग कैसे करेंगे।

अपमान	प्रतिशोध की रूपरेखा	समयावधि

तो क्या इसका अर्थ यह है कि, नेतृत्व केवल तभी उभरता है जब लोगों को जीवन में कठिन और चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़े? तो फिर अमिताभ बच्चन, एपीजे अब्दुल कलाम, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति; स्टीव जॉब्स; मार्गरेट थैचर, इंग्लैंड की पहली महिला प्रधानमंत्री; चंदा कोचर, सीइओ और एमडी आयसी आयसी आय बैंक; विश्वानाथन आनंद, शतरंज के ग्रैंडमास्टर; और इन्हीं की तरह के अन्य लोगों के बारे में क्या कहा जायेगा, जो कि आज लोगों के आराध्य व लीडर माने जाते हैं।

लीडर वे लोग है, जिनका जीवन एक उद्देश्य को समर्पित है। लीडर उद्देश्य के लिये जीते हैं–ऐसा उद्देश्य जो स्वयं उनसे बड़ा है। उनके जीवन में एक ध्येय होता है – एक ऐसा ध्येय जो स्वयं उनसे, उनकी पसंद–नापसंद से, सुख–सुविधाओं से, जीवन से व उनके निकट के मित्रों एवं परिवार के जीवनों के भी परे है।

★ थॉमस एल्वा एडिसन का उद्देश्य था अविष्कार, अविष्कार और फिर अविष्कार।

★ एडमंड हिलेरी के लिये यह था – माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना।

★ सचिन तेन्डुलकर के लिये यह था – क्रिकेट में उत्कृष्टता।

★ नारायण मूर्ति के लिये यह था – विश्व की सबसे अच्छी सूचना प्रौद्योगिकी कम्पनी की स्थापना।

★ हेनरी फोर्ड के लिये यह ऑटोमोबाइल उद्योग का अविष्कार था।

★ रतन टाटा का उद्देश्य टाटा एंड संस है।

★ अमिताभ बच्चन के लिये यह है दर्शकों को अपने काम से अचंभित कर देना।

★ जाकिर हुसैन के लिये है तबले से जादू की रचना।

ये लोग सोते–जागते, खाते–पीते, सांस लेते हुए भी, वास्तव में अपने उद्देश्य ही जी रहे होते है। ये लोग अपने–अपने दायित्व से परे जा कर, उनके क्षेत्र के हर पहलू को खंगालते हैं, आंतरिक संघर्षों से गुजरते हैं और ऐसी स्थिति पर पहुँच जाते है जहाँ उनका नाम ही उनका उद्देश्य बन जाता है।

सामान्य लोग समस्याओं का सामना करते हैं, वे अपने जीवन का आनंद लेते हैं, शादी करते हैं, बच्चे पैदा करते हैं, संसार की यात्रा करते हैं, सुख–सुविधाओं का आनंद लेते हैं और एक सुरक्षित व स्थिर रिटायरमेंट की रूपरेखा बनाते हैं। ये सब वही है जो एक लीडर भी करता है किन्तु वह उसके लिये जीवन नहीं है अपितु उसके अस्तित्व का एक भाग है, क्योंकि उनकी प्रेरणा ही उन्हें गतिमान रखती है व उनके जीवित रहने का कारण और उनके जीवन का उद्देश्य होती है।

आपका उद्देश्य आप से बड़ा होना चाहिए। क्या हैं, आपके उद्देश्य?

वर्षों पहले मुझे पाँच प्रश्न मिले, जिन्होंने मेरे अंतर को झिंझोड़ दिया और मुझे मेरे जीवन की साधरणता से अवगत कराया। मैं इन्हें “पांच जादुई प्रश्न कहता हूँ” और पाठकों के लाभ के लिये, ये पांचों प्रश्न यहाँ दे रहा हूँ।

पांच जादुई प्रश्न

1. आप प्रतिदिन सुबह बिस्तर से क्यों उठते है?
2. आपके जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण लोग कौन हैं?

3. जीवन में आपके लिये क्या महत्वपूर्ण है?
4. आपको अपने जीवन के बारे में सबसे अच्छा क्या लगता है?
5. यह संसार छोड़ने से पहले आप क्या करना चाहेंगे?

ये प्रश्न बहुत साधारण लगते हैं किन्तु वे आपका परिचय एक नेता के मूल तत्व से कराते हैं, और याद रखें, सभी लीडर जीवन के उन्नयन की राह पर चलने वाले होते हैं। कई वर्षों पूर्व मैंने स्वयं से यही प्रश्न पूछे थे, और कुछ समय बाद इनके उत्तर उभर कर सामने आये।

1. आप प्रतिदिन सुबह बिस्तर से क्यों उठते हैं?

कई वर्षों पूर्व मैं सुबह बिस्तर से इसलिए उठता था, क्योंकि मैं इस संसार को कल से बेहतर बनाना चाहता था।

आज मैं सुबह बिस्तर से इसलिए उठता हूँ ताकि मैं सफलता की कुछ और कथाएँ रच सकूँ, इसके लिये मैं लोगों व संगठनों को उन्हें सीमित करने वाले विचारों एवं परिकल्पनाओं से ऊपर उठने योग्य बनाऊँ व इस प्रतिदिन बदलते विश्व में उन्नति पाऊँ; और यही, प्रासंगिक रूप, से मेरी कम्पनी स्मार्ट का भी मूल उद्देश्य बन गया है, और उन सैकड़ों लोगों के अस्तित्व का कारण भी जो स्मार्ट के लिये काम करते हैं।

इस उत्तर को एक बार फिर पढ़ें। मैंने जो कार्य आरम्भ किया है वह कभी समाप्त नहीं होगा। जब तक इस पृथ्वी पर मानव जीवन रहेगा, मेरा काम भी रहेगा – मैं सफलता की कहानियों का निर्माण करना चाहता हूँ। पर कैसे?

लोगों और संगठनों को इस योग्य बनाकर कि वे स्वयं को सीमाबद्ध करने वाले विचारों और रूपरेखाओं से उपर उठ सकें। इससे क्या होगा? यह लोगों को उन्नत होने में सहायक होगा। यह अंतहीन व अनंतकाल तक चलने वाला काम है, किन्तु मेरे जीवन व अस्तित्व का ध्येय है।

यही प्रश्न जब जीवन उन्नयन से विमुख, साधारण मनुष्यों के सम्मुख रखा जाता है तो उनके उत्तर विभिन्न होते है। अपने 29 वर्षों के व्यावसायिक जीवन में मैंने यह कई बार देखा है और इनके उत्तर कई स्तरों में फैले होते हैं, उदाहरण के लिये –

★ मैं सुबह बिस्तर से इसलिए उठता हूँ कि अपना बचा हुआ काम पूरा कर सकूँ।

★ ऑफिस या फैक्ट्री जाने के लिये।

★ रोजी–रोटी कमाने के लिये, ताकि मैं अपना और अपने परिवार का पेट भर सकूँ।

★ मैं रोज बिस्तर से इसलिए उठता हूँ क्योंकि मेरे लोगों से पूरे दिन मिलने के समय तय होते हैं, और लोग मुझसे मिलने की प्रतीक्षा में होते है।

★ मैं रोज सुबह बिस्तर से इसलिये उठता हूँ कि मुझे पिछले 49 वर्षों से सुबह उठने की आदत है।

★ मैं रोज़ सुबह बिस्तर से इसलिए उठ जाता हूँ क्योंकि मेरी नींद खुल जाती है।

★ मैं रोज सुबह बिस्तर से इसलिए उठ जाता हूँ क्योंकि मैं कल मरा नहीं।

ये सभी लोग बिस्तर से बाहर मात्र अपना जीवन बिताने के लिये आते हैं। उनके पास हासिल करने के लिये कोई कारण या उद्देश्य नहीं होता। संसार को देने के लिये कुछ नहीं होता जिससे कि उनका जीवन अन्यों के लिये उपयोगी व अर्थपूर्ण रहे।

2. आपके जीवन में अति–महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन है?

एक आम व्यक्ति के लिये इस प्रश्न का उत्तर होगा:

★ मैं, मैं और मैं

★ मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, मेरे मित्र, मेरा परिवार

★ मेरे कर्मचारी, मेरे ग्राहक, मेरे सप्लायर्स

मेरे लिये इस ग्रह पर मौजूद प्रत्येक महत्वपूर्ण है, और मैं उसे रूपांतरित करने के लिये, उन्हें उनके लक्ष्य के निकट ले जाने के लिये, उन्हें एक अधिक अर्थपूर्ण जीवन जीने में सहायता देने के लिये और इससे स्वयं को रूपांतरित करने के लिये – हर संभव प्रयत्न करूँगा। कम शब्दों में कहूँ तो – “मानवता”।

3. अपने जीवन में आपके लिये क्या महत्वपूर्ण है?

मेरे लिये महत्वपूर्ण है कि मैं एक अर्थपूर्ण और रूपांतरित जीवन जीयूँ और संसार में मेरा योगदान हो। मेरे लिए महत्वपूर्ण है कि लोग चुनौतियाँ स्वीकार करें क्योंकि मैं उनके जीवन में आया, कि मैं एक प्राणवान, ऊर्जावान और उत्तेजनापूर्ण जीवन जीता हूँ और लोगों को एक भरा पूरा, उपलब्धियों व यश से परिपूर्ण जीवन जीने में सहायता करता हूँ। यह आवश्यक है कि लोग स्वयं एवं स्वयं की योग्यताओं में विश्वास रखें और स्वयं को पूर्णतः उन्नयनित करें,

मुझे जहाँ से भी जो कुछ मिलता है, मैं उससे अधिक लौटाता हूँ; चुनौतियों और बाधाओं का सामना होने पर मैं हिम्मत नहीं हारता; मैं लोगों को सक्षम बनाकर उनके जीवन के सपनों, कल्पनाओं और उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करता हूँ। मेरे लिये यह महत्वपूर्ण है कि मैं अत्यंत प्रबल एवं प्रेरक संप्रेशन द्वारा लोगों को उनके वर्तमान एवं भविष्य के प्रति प्रबोधित करूँ एवं विचारवान बनाऊँ। अंतत: मैं उनके मानस में स्वतंत्रता, मुक्ति एवं आत्मविश्वास से कार्य करने का गुण बैठाना चाहता हूँ।

एक साधारण व्यक्ति के लिये इसका उत्तर हो सकता है :

मेरे लिये महत्वपूर्ण है कि मैं शाम 6 बजे तक घर पहुँच जाऊँ और अपने परिवार व मित्रों के साथ शांति व प्रसन्नता का जीवन बिताऊँ, 50 वर्ष की आयु में रिटायर हो जाऊँ; शेष जीवन शहर की आपाधापी के बाहर एक छोटे फार्महाउस में व्यतीत करूं; विश्व भ्रमण, दुनिया की सबसे अच्छी सुख-सुविधाओं का भोग करूं, आराम, धन आदि।

मैं नहीं जानता आप इस प्रश्न का क्या उत्तर देंगे। यदि आप एक उन्नयनित-जीवन हैं; जो आपको होना चाहिए भी; तो आपका उत्तर इससे बड़ा भी होगा और बेहतर भी - ऐसा उत्तर जो आपकी अपेक्षाओं, इच्छाओं व सुखों से परे हो। यदि नहीं तो अभी इसी क्षण अपने अस्तित्व के उद्देश्य को बदलिए।

4. आपको अपने जीवन के बारे में सबसे अच्छा क्या लगता है?

★ मुझे अपने जीवन मे सबसे प्रिय है कि पिछले एवं 29 वर्षों में मैंने अपने ग्राहकों को सामान बेचते समय एक भी झूठ नहीं बोला है।

★ अपने हर ग्राहक/क्लाइंट से मुलाकात के लिये मैं सदा समय पर पहुँचा - अपने पूरे जीवन।

★ जीवन की सर्वाधिक निराशापूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण स्थितियों में भी मैंने कार्य निश्पादन कर परिणाम दिये।

★ प्रत्येक वर्ष, मैंने बीते हुए वर्ष की तुलना में अधिक धन, कीर्ति, आदर एवं सुयश कमाया।

★ मैंने अपनी पत्नी, बच्चों, माता-पिता और अपने निकट के प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा जीवन दिया।

★ मैं कभी एक सा नहीं रहा और निरंतर अपने चारों ओर की यथास्थिति को प्रति सप्ताह, प्रतिदिन, प्रतिघंटे, चुनौती देता रहा।

★ मैं निरंतर अपना ज्ञान बढ़ाता रहा, अपने विचारों को बदलता रहा, कई नई चीजें सीखी, नयी एवं प्रगतिशील आदतें सीखीं और प्रति वर्ष अपना जीवन व व्यवसाय चलाने की सभी योजनाओं एवं रूपरेखाओं को बदला।

★ मैंने बिना शर्त अपने उद्देश्यों के सामने आत्मसमर्पण किया।

★ मैंने कभी भी काम न कर पाने के लिये बहाने नहीं दिये।

★ अपने पूरे व्यावसायिक जीवन में, मैंने अपने मालिकों और अधिकारियों का आदर किया।

★ यूरेका फोर्ब्स में मैं, नं. 1 सेल्समैन, नं. 1 ग्रुप लीडर, नं. 1 ब्रांच मैनेजर और हर एक चीज़ में नं. 1 था। चाहे वह मेरे व्यवसाय से सम्बंधित हो या मेरे व्यक्तिगत जीवन से।

★ मैं अपने पूरे जीवन स्वयं एवं अन्यों के साथ सख्त रहा।

★ मैंने हजारों व्यक्तियों को स्वयं में विश्वास करने योग्य बनाया, उनसे सर्वश्रेष्ठ की अपेक्षा रखी, उनका ध्यान रखा, अपना ज्ञान बिना किसी शर्त बाँटा और उन्हें विजयी होने दिया।

★ मुझे कभी भय नहीं हुआ कि कोई मुझसे कुछ सीख कर चला जायेगा और जीवन में बड़ा बन जायेगा।

★ मुझे असफलता का भय नहीं है और मैं उसके बारे में पूरे साहस व दृढ़ता से बोलता हूँ।

★ मुझे अपने जीवन के बारे में सबसे प्रिय लगने वाली वस्तु हैं कि मैंने बीस लाख लोगों को प्रशिक्षित किया और उनके जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ी।

★ मैंने दूसरों को सम्भावना विचारक बनाया और अपने निकट के लोगों के विचारों, शब्दों और कार्यों को रूपांतरित किया।

★ लाखों लोगों ने मुझे प्रेम व आदर दिया और मुझे संभाला।

★ इन लम्बे 29 वर्षों तक कार्य करने के बाद भी मैं थका नहीं हूँ।

★ जीवन के 49वें वर्ष में भी मैं युवा हूँ, उर्जा से परिपूर्ण हूँ, उत्तेजित हूँ और आगे बढ़कर अधिक से अधिक कार्य करने को तैयार हूँ।

★ मैं आज भी एक योद्धा हूँ।

★ मेरे पास एक आदर्श माँ, एक प्रेमल पत्नी, बहुत अच्छे बच्चे, बढ़िया सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी, सदा साथ देने वाले ग्राहक, वेन्डर्स, माल देने वाले और असंख्य शुभ चिन्तक हैं.. .और यह सीमाहीन सूची आगे-आगे और आगे बढ़ायी जा सकती है।

आपके जीवन में वह क्या है जो आपको सर्वाधिक प्रिय है? मुझे विश्वास है कि आपके पास भी एक सूची है जिसे लिखने के लिये आपको कई पृष्ठों की आवश्यकता होगी, याद रखें स्वयं से यह प्रश्न प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, प्रतिमाह, प्रति-तिमाही, प्रति वर्ष व हर दस वर्षों बाद, बार-बार, पूछें ... और यदि आप अपने जीवन में अधिक चीजों से प्रेम नहीं करते हैं तो इस ग्रह पर आपकी यात्रा निरर्थक है। आपका जीवन महत्वहीन है; और

एक महत्वहीन जीवन किसी को प्रेरित नहीं करता

5. दुनिया छोड़ने से पहले आप क्या करना चाहेंगे?

यदि आप मुझ से पूछें, तो मैं एक मुसीबतों की टोकरी खोल दूंगा, दुनिया छोड़ने से पहले मैं चाहता हूँ:

★ सौ पुस्तकें लिखना

★ एक हजार ऑडियो एवं वीडियो तैयार करना

★ एक टॉक-शो का संचालन करना

★ दस नयी भाषाएँ सीखना

★ पांच फिल्मों में काम करना

★ अपना स्वयं का स्टूडियो बनाना

★ संतोष नायर नॉलेज प्रोड्क्टस एवं मर्चेंडाइस कम्पनी द्वारा अपने ऑडियो व वीडियों पूरे संसार ये उपलब्ध कराना।

★ स्मार्ट (smmart) को विश्व की बेहतरीन व्यक्ति/उद्यमी/व्यापार, रूपांतरण कम्पनी बनाना, हमारे सभी कर्मचारियों के लिये smmart टाउनशिप का निर्माण करना, जहाँ वे साथ रहें और साथ बूढ़े हों।

★ शोषित बच्चों व महिलाओं के लिये smmart फांउडेशन की स्थापना कर उन्हें उद्यमी बनने हेतु प्रेरित करना।

★ smmart के सभी कर्मचारियों, साझेदारों एवं इससे जुड़े सभी लोगों के लिये एक चमकदार व गौरवपूर्ण भविष्य तैयार करना।

★ इन सभी के बच्चों को सबसे अच्छी शिक्षा देना।

★ विश्वभर में लोगों के मानसिक व शारीरिक नवयौवन-निर्माण हेतु संतोष नायर के सेल्स, नेतृत्व व टी.आई.जी.ई.आर. क्लब की स्थापना करना।

★ लोगों को भयमुक्त व आत्मविश्वासी बनने की शिक्षा देने हेतु विश्व भ्रमण करना।

★ अपनी अचानक मिल गई जन्मजात योग्यताओं से लोगों को उपर उठाना।

★ लोगों को भविष्योन्मुखी व स्व-रूपांतरयोग्य बनाना, व उन्हें नित परिवर्तनशील स्थितियों में उन्नति पाने में सहायक होना।

★ संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ काम करना व दुनियाभर के प्रधानमंत्रियों व राष्ट्रपतियों से बात करना।

★ युद्ध में उलझे हुए विभिन्न गुटों के बीच मुख्य मध्यस्थ की भूमिका निभाना।

★ विभिन्न राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित करना – पाकिस्तान, मध्यपूर्व आदि।

★ संसार में लम्बी व सदा बनी रहने वाली शांति स्थापित करना।

★ भारत व पाकिस्तान को एक देश बनाना।

★ लोगों को प्रोद्योगिकी के दुष्प्रभावों के बारे में शिक्षित करना।

★ संसार भर में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर व्याख्यान देना।

★ भारत व विश्व में से गरीबी को समाप्त कर देना।

★ संसार को दुःख पहुँचाने वाली कम से कम एक हजार समस्याओं का मौलिक समाधान ढूंढ़ना।

★ जीवनपर्यंत, 120 वर्ष की आयु तक, कार्यशील व युवा रहना।?

★ अंतत: संसार के लिये एक आदर्श व्यक्ति बनना, जिसमें उनका विश्वास हो, उनकी श्रद्धा हो; और वे जिसका अनुसरण कर सकें।

क्या आपने स्वयं से ये पांच जादुई प्रश्न पूछे हैं? यदि नहीं, तो एक नया जीवन आरम्भ करने के लिये आज का दिन सर्वोत्तम है। स्वयं से प्रश्न पूछिये और जीवन को जीने योग्य बनाने वाले उत्तर पाइये। इन उत्तरों को अपने जीवन में उता[illegible]को अर्थपूर्ण व

महत्वपूर्ण बनायें व संसार को अपना योगदान दें। आप स्वयं से और पूरे विश्व से प्रेम करने लगेंगे। कर के तो देखिये!

आप प्रतिदिन सुबह बिस्तर से क्यों उठते है?

आपके जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण लोग कौन हैं?

जीवन में आपके लिऐ क्या महत्वहूर्ण हैं?

आपको अपने जीवन के बारे में सबसे अच्छा क्या लगता है?

यह संसार छोड़ने से पहले आप क्या करना चाहेंगे?

एक विलक्षण जीवन जीने वाले कुछ लीडर, नेतृत्व के विचार को पार कर उसके परे चले जाते हैं और एक अनुकरणीय व्यक्ति बन जाते हैं।

एक अनुकरणीय व्यक्ति बनना, नेतृत्व का सर्वाधिक उन्नत रूप है। वे अपने चारों ओर फैले अन्याय, व दुष्कर्मी से अशांत, दुःखी व क्रोधित हो संसार को रूपांतरित करने का दायित्व स्वयं ही उठा लेते हैं। अन्ना हजारे, जैसे लोगों ने भारत में बढ़ते भ्रष्टाचार से दुःखी होकर, भ्रष्टाचार-मुक्त भारत बनाने का बीड़ा स्वयं उठाया। महात्मा ज्योतिबा फूले ने सन् 1848 में, लड़के व लड़कियों के बीच प्रचलित भेदभाव से दुःखी हो महिलाओं को शिक्षित व सक्षम बनाने हेतु संघर्ष किया। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर हिन्दु वर्ण-व्यवस्था एवं सामाजिक-भेदभाव की उन प्रथाओं से व्यथित थे, जिनके कारण नीची जाति के कुछ हिन्दुओं को 'अछूत' माना जाता था। उन्होंने दलितों के प्रति उचित व्यवहार, समान आदर एवं मान पाने का संघर्षपूर्ण प्रयास किया एवं 'अछूत' की अवधरणा को सदा के लिये समाप्त किया।

अनुकरणीय व्यक्तियों का न तो परिवार होता है न घर और न ही, स्वयं का जीवन। उनका राष्ट्र ही उनका घर होता है, राष्ट्रवासी उनके परिजन और उनका उद्देश्य ही उनका जीवन होता है। वे अपने सभी सांसारिक सुख, सम्पदाएँ, इच्छाएँ करियर और व्यवसाय यहाँ तक कि मृत्यु का भय भी त्याग कर अपने उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग पर चलते हैं। उनके पास चार बच्चों के पिता होकर जीने या राष्ट्रपिता बनने का विशेषाधिकार सदा होता है और वे महात्मा गांधी के समान, सदा ही राष्ट्रपिता होना चुनते हैं।

जब आप एक अनुकरणीय व्यक्ति होते हैं, तो लोग आपके व आपके उद्देश्य के सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं।

यह 7 जून 1893 की घटना है, जब इंग्लैंड में शिक्षित व दक्षिणी अफ्रीका में वकालत करने वाला एक व्यक्ति, प्रथम श्रेणी के रेल-टिकट के साथ, डरबन (दक्षिणी अफ्रीका) से प्रिटोरिया (दक्षिणी अफ्रीका के ट्रांसवाल राज्य की राजधानी, जो कि डच साम्राज्य के अधीन थी) जा रहा था। एक यूरोपीय मूल के रेलवे अधिकारी ने उससे तृतीय श्रेणी के डिब्बे में चले जाने को कहा-क्योंकि वे एक भारतीय थे, और 'कुली' व अश्वेत लोगों को प्रथम श्रेणी से यात्रा करने की अनुमति नहीं थी। जब उन्होंने मना किया तो उस युवा व्यक्ति को उसके सामान सहित प्लेटफार्म पर फेंक दिया गया। उस दिन अपने चारों ओर के अन्याय से एक व्यक्ति अशांत, दुःखी व क्रोधित हो उठा था। उसने संसार को बदलने का बीड़ा उठाया – और महात्मा गांधी बन कर उभरा। उन्होंने अपनी वकालत छोड़ दी व 21 वर्षों तक रंगभेद व जातिभेद का विरोध करने और दक्षिणी अफ्रीका में रहने वाले, भारतीय मूल के लोगों के अधिकारों के लिये संघर्ष करने के उपरांत, अपने देश लौटे और भारत को स्वतन्त्रता दिलायी।

चालीस के दशक में कलकत्ता में सड़क पर चलते हुए एक अध्यापिका ने एक निराश्रित महिला को सहायता के लिये रोते हुए देखा। वे समझ गयी थीं कि उस महिला का जीवन समाप्त हो रहा है, वे उसे तुरंत अस्पताल ले गयीं जहाँ उन्हें बैठने व प्रतीक्षा करने को कहा गया। उस महिला की शोचनीय व गम्भीर स्थिति के कारण उसे तुरंत दूसरे अस्पताल ले जाया गया, किन्तु फिर से महिला के निम्न श्रेणी का होने के कारण उस पर सबसे अंत में ध्यान दिया गया। उस रात, उस महिला ने अध्यापिका की गोद में दम तोड़ दिया। उस दिन एक साधारण नन अपनी असहाय स्थिति से अशांत, दुखी व क्रोधित थी और यहीं से मदर टेरेसा का जन्म हुआ, जिन्होंने अपना पूरा जीवन बीमारों व गरीबों की सेवा करने व उनका जीवन उन्नत करने, तथा गम्भीर रूप से बीमार लोगों को एक सम्मानित जीवन न सही, किन्तु सम्मानित मृत्यु पाने के लिये समर्पित किया।

इस कैथोलिक अध्यापिका से बहुत दूर एक वकील थे, जो महाराष्ट्र में वर्धा जिले के एक सम्पन्न जमींदार के पुत्र थे। उनका लालन-पालन संसार की सभी सुख-सुविधाओं और संपन्नताओं के बीच हुआ। 14 वर्ष की उम्र में वे एक बन्दूक के मालिक थे और गाड़ी चलाने की उम्र में उनके पास एक सिंगर-स्पोर्टस-कार थी जिसकी सीटें तेदुंए की खाल से मढ़ी हुई थीं। वे सिनेमा देखने के शौकीन थे और हमेशा दो टिकट – एक आगे की कुर्सी का और एक पीछे का – लेकर फिल्म देखते, ताकि वे पीछे की सीट पर बैठें व आगे की सीट पर अपने पांव फैला सकें – ऐसी थी उनकी फिज़ूल खर्ची! और फिर एक दिन उन्होंने सड़क के किनारे, तेज बारिश में भीगते हुए एक कुष्ठ रोगी को देखा, वह अपनी अंतिम

सांसें ले रहा था। उस दृश्य ने उनकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ा दी थी, अचानक ही धन–दौलत व संसार की सारी सुख–सुविधायें उनके लिये बेमानी हो गयीं, वे अंदर तक हिल गये थे और उसी क्षण बाबा आमटे का जन्म हुआ उन्होंने अपना पारिवारिक पेशा छोड़ पूरा जीवन कुष्ट रोगियों के पुर्नस्थापन व उनके अधिकारों की रक्षा को समर्पित कर दिया।

इन सभी व्यक्तियों में कुछ गुण और योग्यताएँ समान हैं। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति:

1. विरोध, संकटों और व्यक्तिगत दु:खों से उपर उठा।
2. उन्होंने साधरण मनुष्यों को उनके चुनौतीपूर्ण समय में निर्देशित किया।
3. उन्होंने अन्य लोगों की चुनौतियों को अपना कर, उन्हें विजयी बनाया।
4. जब अन्य लोग असमंजस में थे, उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था, तब इन्होंने स्थिति को संभाला।
5. अपने कार्यों के लिये वे स्वयं जिम्मेदार होते हैं।
6. उन्होंने हमेशा अपनी पूरी क्षमता व उर्जा के साथ हल्ला बोला – और जो उन्हें उचित लगा उस पर दृढ़ रहे।

ये सभी अनुकरणीय व्यक्तियों के लक्षण अथवा गुण हैं, जिन्हें आत्मसात् किया जाना चाहिये। नेताओं और अनुकरणीय व्यक्तियों में अंतर करने वाली रेखा बहुत ही बारीक है। यह एक यात्रा है, एक क्रमश: होते रहने वाली प्रगति, जो आपको एक नेता से एक अनुकरणीय व्यक्ति बना देती है, जहाँ आपका बंगला, आपकी S–क्लास मर्सिडीज़, प्राइवेट जेट, करोड़ों डॉलर का व्यवसाय, रोलेक्स घड़ी और आपका बढ़िया 3–पीस सूट सभी नगण्य हो जाते हैं। ये सभी महिलाएँ व पुरुष अपने–अपने जीवन में नेता रहे हैं और फिर उन्होंने अपना 100 प्रतिशत जीवन अपने उद्देश्य को समर्पित करने का निर्णय लिया और वे नेता से अनुकरणीय बन गये।

मैं स्वयं को एक नेता व एक अनुकरणीय व्यक्ति के बीच में कहीं पाता हूँ और एक अनुकरणीय बनने के लिये प्रयत्नशील हूँ। उस स्तर पर पहुँचकर मैं अपने सारे सांसारिक सुख, धन–संपत्ति एवं इच्छाएँ त्याग दूंगा और भारत के उन सुदूर आंतरिक क्षेत्रों की यात्रा करूंगा जहाँ अभी शिक्षा नहीं पहुँची है, मैं वहाँ युवाओं को जाग्रत करूँगा ताकि वे अपनी क्षमताओं को सिद्ध करें व अपने स्वप्नों को साकार कर सकें। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बसने वाले युवाओं के लिये मैं तो अथक कार्य करूँगा, उससे भारत एक विकसित राष्ट्र बन जायेगा। यह एक लम्बा रास्ता है किन्तु मैं इसे तय करूँगा क्योंकि मैं एक उन्नयनित जीवन हूँ।

उपरोक्त वर्णित जीवन एक नेता का जीवन है– जो एक अनुकरणीय व्यक्ति बनने की राह पर है– और एक जीने योग्य जीवन है। एक नेता होना और घोषित करना कि आप आजीवन एक नेता रहेंगे जीवन उन्नयन के लिये आवश्यक व अनिवार्य है।

अपने जीवन को जीवन पर्यंत उन्नयनित रखने के लिये आपको यह आज्ञा, यह अनुदेश यह निदेश, यह आदेश, यह प्रभु का विधान, यह कमांडमेंट स्वयं को अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिमिनट देना होगा। इलेवन कमांडमेंट्स का सातवाँ कमांडमेंट है :

घोषित करें कि आप आजीवन लीडर रहेंगे।

कमांडमेंट
8

भावनाएँ सोखने वाले विकर्षणों को अलविदा कहें।

अत्याधिक भावनाएँ बुद्धि से अवरोध करती हैं

भाग – 1

भारत के अग्रणी बल्लेबाज, सचिन तेन्डुलकर, जब 1999 के क्रिकेट वर्ल्ड कप में खेल रहे थे, उन्हें अपने पिता की मुत्यु का समाचार मिला। धक्के की अवस्था में ही तेन्डुलकर ने भारत पहुँचकर पिता की अन्तिम क्रियाऐं की। उसके तीन दिन बाद ही भारत का केन्या से एक महत्वपूर्ण मैच था, जिसमें देश के अग्रणी बल्लेबाज की पिच पर जरूरत थी। अपने जीवन के सबसे बड़े नुकसान को सहते हुए तेन्डुलकर, 72 घंटों में ही अपने बैग्स को पैक कर अपने देश के लिये खेलने के अपने मार्ग पर चल पड़े। वे लौटे तो धमाके के साथ, 101 गेंदों में 140 का अनबीटन स्कोर, उनकी सर्वकालिक बेहतरीन पारी। उन्होंने वह शतक पिता के नाम अर्पित किया। उन्होंने टीम को गर्वित किया – अपने राष्ट्र को गर्वित किया और सबसे ऊपर अपने पिता को गर्वित किया।

भारतीय बल्लेबाजी की नयी सनसनी, विराट कोहली के पिता का देहान्त 19 दिसम्बर 2006 सुबह के दो बजे हो गया; विराट तब कर्नाटक के विरुद्ध एक जरूरी रणजी ट्रॉफी टाई मैच खेल रहे थे जिसमें वे दिल्ली के ओव्हरनाईट बल्लेबाज थे। उनकी टीम ने, जो कि संवेदनशील, जवाबदार और अच्छे इंसानों का समूह था, उनसे परिवार लौट जाने का आग्रह किया, किन्तु विराट जानते थे टीम के लिये उनकी उपस्थिति कितनी जरूरी थी। अपने खेल व राज्य तथा परिवार की ओर स्वयं की प्रतिबद्धता के उस द्वंद में 18 वर्षीय विराट कोहली ने रुककर राज्य के लिए बल्लेबाजी का निर्णय लिया। वे न केवल खेले ही वरन् उन्होंने अविश्वसनीय 90 रन दिये व अपनी टीम को जीत की ओर धकेला। और 90 रन ठोंक कर सीधे अन्तिम क्रिया में पहुँचे। यह मैच उनके जीवन में बदलाव का मोड़ साबित हुआ।

अनु आगा पूना स्थित इंजीनियरिंग फर्म थरमैक्स की पूर्व चेयरपर्सन को, 1996 में उनके पति की अचानक मृत्यु होने पर, चेयरमैनशिप संभालने को कहा गया। जिस पारिवारिक व्यवसाय को उनके पिता ने शुरु किया तथा उनके पति ने जिसे एक सम्मानित राष्ट्रीय इंजीनियरिंग कम्पनी के रुप में खड़ा किया, उसे तब उनके निर्देशों की आवश्यकता थी और वे उसे संभालने के लिए पति की मृत्यु के 48 घंटों के भीतर ही पहुँच गयीं। उन्हें शोक करने का भी समय न मिल सका। उसके एक वर्ष में ही उन्होंने अपने इकलौते पुत्र को एक कार एक्सीडेंट में खो दिया, वे किसी बिजनेस मीटिंग से लौट रहे थे। फिर भी उन्होंने किला संभाले रखा और अपनी पेशेवर जवाबदारियों को बराबर समर्पण एवं बल से निभाया। उसके एक सप्ताह में ही उनकी सास का देहान्त हो गया, तथा उनका प्रिय पालतू कुत्ता भी चल बसा – किसी 55 वर्षीय महिला के लिये ये सब अपार दुःख था।

अपने जीवन की पुकार की ओर ध्यान देते हुए उन्होंने बड़े ही उदार तथा गरिमामय तरीके से थरमैक्स को मुसीबतों से निकालने के लिये स्वयं को पुनः-निर्देशित किया। वे विदेशी सलाहकारों को लायीं। उन्होंने कम्पनी की संरचना को बदला, बोर्ड को पुर्नगठित किया, कारोबार को कई गुना बढ़ाया। इस प्रकार उन्होंने थरमैक्स को इंजीनियरिंग उत्पादों एवं प्रणालियों का अग्रणी उत्पादक बना कर 14 देशों में उसकी उपस्थिति दर्ज की। जिसके फलस्वरुप उन्हें कई बिजनेस पुरस्कार मिले। और उन्हें बिजनेस में 25 अधिकतम शक्तिशाली महिलाओं की सूची में स्थान मिला।

क्या तेन्डुलकर व कोहली अपने पिताओं की मौतों से अप्रभावित थे, या अनु आगा को अपने परिवार से अनुराग न था? भाई, कोई साधारण मनुष्य वैसा जरूर सोच सकता है, परन्तु केवल कोई उन्नयनित जीवन ही उनके द्वारा प्रदर्शित नेकी और अनुग्रह को समझ सकता है।

हमारे आसपास की दुनिया समस्याओं से लदी है। ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है जो चिन्ताओं, परेशानियों तथा विषाद से मुक्त हो। धनवान या निर्धन, समकालीन या पारम्परिक, बुजुर्ग या युवा, लोग अक्सर कमजोर क्षणों से अभिमुख होते हैं। क्षण जो उन्हें उदास करते हैं, तोड़ते हैं और अन्दर से हिलाकर चकनाचूर कर देते हैं। वह कोई प्रियजन का अवसान हो, कोई पारिवारिक ट्रेजेडी, पारिवारिक विवाद, बढ़ती उम्र के माता-पिता में से किसी का लाइलाज बीमारी से ग्रसित पाया जाना, अलगाव की ओर बढ़ता वैवाहिक कलह, मित्र का विश्वासघात, आपके पुरुष का आपसे दूर चले जाना, आपके पति द्वारा आपकी सबसे अच्छी मित्र से संसर्ग, आपके बच्चे की हत्या, यह सूची केवल बढ़ती ही जा सकती है। ऐसी सभी भीषण घटनायें या तो मेरे साथ अथवा मेरे किसी नजदीकी के साथ घट चुकी हैं। ये सभी ऐसी घटनायें हैं जो आपको अपनी योग्यतानुसार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने से रोक सकती हैं। ये आपको दुनिया तथा उसमें निहित संभावनाओं के प्रति बेपरवाह कर सकती हैं। ये आपको अपने असली श्रेय को पाने के मार्ग से विमुख कर सकती हैं, आपको गतिहीन कर सकती हैं, आपका ध्यान जीवन के उद्देश्य से खींच सकती हैं, आपको केवल सर्वव्यापक-साधारणता तक सीमित रखकर सार्थक-जीवन बनने से हमेशा के लिये रोक सकती हैं। आपको वर्तमान की जटिलताओं में उलझाकर एक बेहतर भविष्य की कल्पना करने से रोककर स्वयं के अस्तित्व के उद्देश्य के पीछे जाने से हटा सकती हैं। जीवन-उन्नयन की मेरी दुनिया में मैं इन घटनाओं को इस नाम से बुलाता हूँ-

ईडीडी यानी कि – भावनाएँ सोखने वाले विकर्षण

जैसा कि नाम से विदित है, भावनाएँ सोखने वाले विकर्षण वे घटनाएँ हैं जो आपको भावना–विहीन करतीं हैं, आपके मन को जकड़कर आपको हमेशा के लिये कमजोर बना देती हैं। जितना आप इस स्थिति में रहेंगे उतना ही जीवन उन्नयन से परे चले जाएंगे।

किसी भारतीय परिवार में मृत्यु होने पर परिवार को कम से कम 13 दिनों तक सांसारिक काम–काजों में लगना वर्जित मानते हुए कुछ रस्मों की अदायगी में लगना होता है। तलाक यदि कोई प्रमुख घटना बन जाए तो वह किसी व्यक्ति को सप्ताहों और महीनों तक अवसाद में डुबाकर रख सकता है। किसी बीमारी को यदि बहुत गम्भीरता से ले लिया तो वह मृत्यु से भी भयानक हो सकती है।

ऐसे समय में, स्वयं को दुनिया से दूर रखकर, काम बन्द कर, स्वयं को उन क्षणों में लम्बे समय तक डुबाये रखना जीवन यात्रा को ही कठिन बना देता है; फिर जीवन उन्नयन तो दूर की बात रह जाती है।

यदि सचिन तेन्डुलकर, पिता की मृत्यु क्यों हुई, सोचते रहते तो वे स्वयं के क्रिकेटर होने की धार खो देते, यदि विराट कोहली पिता की अस्थियों के समीप दिनों–दिन बैठे रहते, तो उनका साहस समाप्त हो जाता, यदि अनु आगा वैसी दुःखद जिन्दगी के लिये नियति को कोसने लग जातीं, तो वे अपनी वास्तविक क्षमता तक कभी भी न पहुंच पातीं।

वैसी परिस्थितियों में इन सब लोगों का जीवन छिन्न–भिन्न हो गया, और क्यों न होता, आखिर वे भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षण जो थे। परन्तु जैसा कि मैं कह चुका हूँ – अत्याधिक भावनाएँ बुद्धि का अवरोध करती हैं। वैसी भावनाएँ होते हुए भी ये लोग अपने उद्देश्य पर कायम थे। उन्होंने उन भावनात्मक क्षणों को अपनी बुद्धि पर हावी न होने दिया और अपने लिये जीवन का उन्नयन कर लिया।

भूतकाल की ट्रेजेडी के दर्द को कम करना ही आज की ट्रेजेडी की खूबी है।

जब तक कोई इन भावनाओं को सोखने वाली घटनाओं को मन में जिन्दा रखता है, उसका जीवन–उन्नयन असंभव है। जीवन–उन्नयन के लिए आपको इन घटनाओं को अलविदा कहना होता है।

मैं यह कदापि नहीं कहता कि इन गंभीर घटनाओं की परवाह न करें अथवा उन्हें तुच्छ समस्याएँ समझकर व्यवहार करें, फिर भी उन्हें आपके जीवन के उद्देश्य पर हावी न होने दें। जीवन रुकता नहीं, इसलिये तो लोग कहते हैं – 'द शो मस्ट गो ऑन ....'

दुनिया के महानतम प्रेरक वक्ताओं में से एक, ज़िग ज़िगलर, अपनी सीडी – 'विनिंग' यानी जीतना में '24 घंटे' नामक धारणा को इस प्रकार समझाते हैं: आपके जीवन की कोई भी घटना, बड़ी या छोटी, दुःखद या सुखद, जीत या हार, असफलता या उपलब्धि, आलोचना अथवा प्रशंसा, को 24 घंटों से अधिक न विचारें। मुद्दा कितना भी बड़ा अथवा तीव्र हो उसे जीवन के 24 घंटों से अधिक न दें। उस क्षण में 24 घंटे अवश्य रहें, किन्तु जैसे ही 25वाँ घंटा लगे, उठें और कोई नई शुरूआत करें।

आपके व्यक्तिगत जीवन में जो कुछ ढह चुका है उसके लिए अपनी पेशेवर जिन्दगी को परे हटाना, एक प्रकार से अपने जहाज की उन दीवारों का ढहाना है जो लहरों के कम होने पर आपको किनारे पहुँचा सकती हैं।

जब जीवन का कोई पक्ष आपको पराजय के समक्ष ले आये तो दूसरे पर अधिक तीव्रता से केन्द्रित हों स्वयं को काम, हॉबीज़, लोगों अथवा समाज इत्यादि में डुबो लें। कभी न लगाया हो वैसा जोर लगा के अपने उद्देश्य की प्राप्ति करें, पहले से अधिक आस्था से अपने सपनों के पीछे पड़ें और एक बार फिर स्वयं को अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित करें। आनन्ददायी काम करें, नौकरी में सांत्वना खोजें, जीवन में इतने डूब जाएँ कि विषाद करने का समय ही न हो, उसे व्यक्त करना तो दूर।

जो कुछ जा चुका है उसे आप वापस नहीं ला सकते; या जो कुछ घट चुका है उसे आप बदल नहीं सकते। आप जो कर सकते हैं वह है – एक बेहतर भविष्य का निर्माण। भूतकाल पर आपका कोई वश नहीं, परन्तु भविष्य तो अभी भी आपके हाथ है; तो फिर किसके इन्तजार में हैं आप? व्यक्तिगत ट्रेजेडियों से निर्मित विषाद से उठकर अपनी स्थिति, अपनी परिस्थितियों का पुनः–निर्माण करें, अपने जीवन का पुनः–निर्माण करें।

जब मैं दुबई में अपने मित्र की पुत्री के विवाह में सम्मिलित था, तब मेरे पिता का देहान्त हुआ। भारत स्थित परिवार द्वारा सूचित करने पर मैं पत्नी सिन्धु के साथ तुरन्त घर पहुँचा और स्थिति को संभाला, अन्तिम क्रिया कर जिस व्यक्ति ने मुझे जीवन की सबसे बेहतरीन सीखों से नवाजा, उसे एक अनुष्ठानिक बिदाई दी। दो दिनों के बाद मुझे टाटा हाउसिंग के एक समूह को गोवा में संबोधित करना था। ऐसा न था कि व्यक्तिगत कारणों पर आधारित मेरी अनुपस्थिति से टाटा हाउसिंग मुझे ब्लैक–लिस्ट कर देते, वरन चूँकि उस प्रोग्राम का रुपया मैं ले चुका था और अपनी उपस्थिति का वादा कर चुका था, और सारे देश से सैकड़ों व्यक्ति मुझे सुनने के लिए आ रहे थे।

बहुतों की राय के विपरीत, मैंने पहली उपलब्ध उड़ान ली और श्रोताओं के समक्ष जा पहुँचा, उन्हें बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करने। सालभर बाद ही मैंने अपने बड़े बहनोई को खो दिया और मेरा व्यवहार कुछ वैसा ही था। मेरी पत्नी

एक गंभीर दुर्घटना का शिकार बनी, मेरी तीनों पुत्रियों – देविका, मालविका, राधिका का जन्म हुआ, जब मैं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संबोधित कर रहा था, परन्तु इनमें से कोई भी घटना – दु:खद अथवा हर्ष के क्षण – मुझे अपने प्रशिक्षक अथवा प्रेरक वक्ता के मार्ग से विकर्षित नहीं कर पाई।

क्या मुझे अपने पिता कम प्यारे थे, क्या मेरे बहनोई की मृत्यु महत्वहीन थी, या क्या मैं अपनी पत्नी या तीन बच्चों के जन्म की कदर नहीं करता था? ऐसा कतई न था। परन्तु एक उन्नयनित–जीवन के रूप में मैंने स्वयं को निर्देशित किया, आदेशित किया तथा अनुरोध किया कि मैं 'ईडीडी' यानी भावनाऐं सोखने वाले विकर्षणों से दूर रहूँगा; किसी भी व्यक्तिगत या पेशेवर ट्रेजेडी या हर्ष के क्षण को मेरे जीवन को पटरी से उतारने न दूँगा।

जीवन के उन महत्वपूर्ण कार्यों, जिनमें आप प्रयासरत हों, के बीच बच्चे जन्म लेंगे, कई ट्रेजेडीज़ हो सकती हैं। यदि उस दिन आप उपलब्ध हों तो अवश्य ही बच्चे के साथ हों किन्तु यदि आप स्वयं के सम्मान की ओर प्रतिबद्ध हों तो उसे परे न हटावें। क्योंकि कोई भी सार्वजनिक वायदा किसी भी निजी ट्रेजेडी या हर्ष से कहीं बड़ा है और उसे ज्यादा वज़न दिया जाना चाहिये, यदि आप एक उन्नयनित–जीवन बनना चाहते हों।

आप वर्तमान में भुगत रहे तीन ईडीडी तथा उनसे उबरने की प्रक्रिया की योजना लिखें–

क्रमांक	ईडीडी	आपकी योजना

अपने जीवन को जीवन-पर्यन्त उन्नयनित बनाए रखने के लिए स्वयं को इस आज्ञा, इस अनुदेश, इस निर्देश, इस आदेश, इस प्रभु के विधान, इस कमांडमेंट को देकर, इसके प्रति आपको जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिमिनिट सजग रहना है।

भावनाएँ सोखने वाले विकर्षणों को अलविदा कहें।

भाग – 2

हमें न्यूनतम समय में अधिकतम परिणाम देने होते हैं, तथा न्यूनतम प्रयासों से अधिकतम परिणाम। कार्यस्थल हो या घर हम तभी उत्पादक हो पायेंगे जब हम विकर्षणों में बह न जाएं। आवेग, चिन्ता, क्रोध, निराशा, चोट, अप्रसन्नता, ईर्ष्या, सन्देह, शत्रुता, अपराध–बोध, असहायता, अवसाद, अस्वीकृति, उपेक्षा, अहं, लोभ इत्यादि सभी 100 प्रतिशत विकर्षण हैं। जैसे ही हम इनमें से एक अथवा सभी भावनाएँ महसूस करना शुरु करते हैं, हमारा ध्यान हमारे लक्ष्यों से हट जाता है। जीवन की नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में उत्पादक बने रहने हेतु हमें स्वयं की भावनाओं का ध्यान रखना पड़ता है। कुछ भावनाएँ ऐसी हैं जो आपको संघर्ष करने और आगे बढ़ने में मदद देती हैं.......... ये हैं ऊर्जावर्धक भावनाएँ।

दूसरी ओर कुछ भावनाएँ आपको खिन्न, क्रोधित, निराश, चिन्तित, अपराध–बोधग्रसित बनाती हैं......... ये ऊर्जा सोखने वाला आत्म विध्वंसक भावनाएँ हैं। जब जीवन में कुछ अप्रिय घटा हो तब, भावनाएँ आपकी मानसिक स्थिति तथा आपके स्वस्थ रहने को निर्धारित करती हैं। और कुछ न कुछ अप्रिय तो होता ही रहता है, तो ऐसे मौकों पर आपकी भावनाएँ कैसी हों?

मैं हमेशा से कहता आया हूँ कि आपके पास निम्नलिखित चार भावनाएँ अथवा मन की स्थितियाँ अवश्य होनी चाहिये।

★ हास्य बोध

★ प्रफुल्लता

★ आत्म–विश्वास

★ उत्साह

ये उन्नयनित जीवन की निशानियाँ हैं।

जीवन में चाहे कुछ भी हो जाये, आपको इस प्रकार के ऐलान करने की जरूरत है:

1. **मैं अपने हास्य–बोध को क्षीण न होने दूँगा। मैं इसे हमेशा जागृत रखूँगा।**

   समस्याओं के समाधान हेतु आपको हास्य–बोध की जरूरत होती है। स्वयं तथा पूरी दुनिया का उपहास उड़ाने की क्षमता। जीवन तथा जीवन द्वारा प्रदत्त अच्छा या बुरा, सबकुछ आपको मनोरंजक लगना चाहिये।

2. **मैं सदैव प्रफुल्लित रहूँगा – और पराजय के उपरांत खुश तथा अगली बड़ी चीज की रचना के लिये तैयार!**

   समस्याओं के समाधान हेतु आपको प्रफुल्लित रहना होगा। सदैव खुशमिजाज, आशावान, उज्ज्वल एवं सुखद।

3. **मैं आश्वस्त रहूँगा तथा स्वयं को याद दिलाता रहूँगा कि आत्म-विश्वास तथा केवल आत्म-विश्वास ही सहायक होगा, मुझे कुछ भी सीखने में, किसी से भी निभाने में और कुछ भी हासिल करने में।**

   आत्म-विश्वास के बिना, किसी पराजय के बाद – खासकर जब स्थिति आपके पक्ष में न हो, आप अपने विचारों, शब्दों तथा कार्यों को इस प्रकार निर्देशित न कर पायेंगे कि आप अगला बड़ा लक्ष्य पा लें।

4. **मैं उत्साहित, जीवन्त तथा जीवन के प्रति उत्तेजित रहूँगा। मैं स्वयं को सदैव याद दिलाता रहूँगा– मेरे आसपास बहुत कुछ ढह चुका है फिर भी बहुत कुछ अक्षत है, साथ ही मेरे पास जीवन में उपलब्धि हेतु बड़े लक्ष्य भी हैं।**

   समस्याओं के समाधान हेतु आपको उत्साहित रहना होगा। बहुत वर्ष पहले मुझे बताया गया था कि उत्साही वह मनुष्य है जिसे ईश्वर ने अपने वश में कर लिया है। अत: आपको इस प्रकार दीखना है मानों आप ईश्वर के वशीभूत हों।

आपका व्यक्तित्व ऐसा हो कि जब लोग आपको देखें, आपसे बातचीत करें तो उन्हें ऐसा महसूस हो कि आप आनन्द से भरे-पूरे हैं। आपको देख कर वे अपने दु:ख भूल जावें। आपका अस्तित्व प्रत्येक को सांत्वना एवं शान्ति प्रदान करे। आपसे मिलना एक उत्सव हो, कोई अनुष्ठान हो या आनन्द के क्षण।

इस उन्मादी जीवन में आपका तरीका क्या हो।

आपका तरीका इस घोषणा में है कि "जीवन की सर्वाधिक नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी मैं सही भावनाओं की छत्र-छाया में रहूंगा।" जैसा कि विलियम शेक्सपीयर कह गये हैं– 'इस दुनिया में कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं.................... (हमारी) सोच उसे वैसा बना देती है।'

हम सभी बुद्धि का प्रयोग करने वाले लोग हैं; बुद्धिमान हैं या नहीं, यह तो बहस का विषय है। तो इसी धारणा को लेकर बढ़ते हैं कि हम सब बुद्धि का प्रयोग करने वाले लोग हैं।

इसके मायने हुए कि हममें अपनी समस्याओं से निबटने की, कठिन परिस्थितियों से बाहर जाने की, ट्रेजेडियों तथा रूकावटों का सामना करते हुए जीवन उबारने की क्षमताएँ हैं। फिर भी अपने 29 वर्ष फैले यशस्वी करियर में मैंने अधिकतर बुद्धि प्रयोग करने वाले लोगों को मूर्खतापूर्ण चीजें करते तथा टूटते हुए देखा है। वैसा क्यों होता है, इस पर कभी आश्चर्य हुआ है क्या?

वे सभी ऐसी भावनाओं से भरे हैं जो उन्हें आगे बढ़ने ही नहीं देतीं। भावनाऐं जैसे कि चिन्ता, अपराध-बोध, शत्रुता, अवसाद, नैराश्य, क्रोध, खिन्नता इत्यादि। हम अपनी अस्तित्व-प्रणाली से जिस प्रकार की माँगें करते हैं उसके फलस्वरूप में भावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

हमारी अस्तित्व-प्रणाली में लोग तथा वस्तुऐं दोनों शामिल हैं। अब यदि आप लोगों के बारे में जानते हैं या वस्तुओं के बारे में जानते हैं तो वे अक्सर गलत हो जाते हैं। दुर्भाग्यवश हमारी अस्तित्व-प्रणाली में हम भी शामिल हैं। इसे जोड़कर देखें तो हमारी अस्तित्व-प्रणाली में शामिल हैं-हम, दूसरे और हमारे आसपास की वस्तुएँ।

इन तीनों घटकों से हमारी माँगें ही सबसे बड़ी समस्या है।

पहली अस्तित्व-प्रणाली माँग है- 'मुझे एकदम सही होना चाहिये।'

दूसरी अस्तित्व-प्रणाली माँग है- 'मेरे इर्दगिर्द दूसरों को एकदम सही होना चाहिये।'

तीसरी अस्तित्व-प्रणाली माँग है - 'मेरा आसपास भी एक दम सही होना चाहिए।'

अब यहाँ एक समस्या है:

माँगें बनाम अपेक्षाएँ

माँगें वे दावे हैं जो आप अस्तित्व-प्रणाली पर करते हैं। ये वे हैं जो आप चाहते हैं एवं उसे पा लेने के अपने अधिकार पर बल देते हैं। दूसरी ओर अपेक्षाएँ आपकी आकांक्षाएँ हैं, यदि वे पूरी हों तो आप खुश होंगे।

अतः हम या तो कुछ माँग सकते हैं - स्वयं से, दूसरों से, और अपने आसपास की वस्तुओं से; और या कुछ अपेक्षा कर सकते हैं - स्वयं से, दूसरों से और अपने आसपास की वस्तुओं से। ये माँग ही समस्या है। यदि माँगों के बजाए

हम मात्र अपेक्षाएँ ही रखें तो हम अपनी चार उपयोगी भावनाओं के साथ चल सकते हैं– प्रफुल्लता, आत्म–विश्वास उत्साह और हास्यबोध।

स्वयं के तथा दूसरों के अनुभवों से सभी जीवन–उन्नयनकर्ताओं को इस बात का एहसास है कि मनुष्य अपूर्ण हैं और एक अपूर्ण दुनिया में रह रहे हैं। एक अपूर्ण दुनिया में, लोगों से पूर्णता की माँग करना केवल मूर्खता ही नहीं अपितु स्वयं के उद्देश्य की पटरी छोड़ देने का एक ग्यारंटेड नुस्खा है। जीवन–उन्नयनकर्ताओं को इस बात का भी एहसास है कि कुछ उलटा हो सकता है और होगा भी और इसीलिए यह 'माँग' कि सब कुछ वैसा ही हो जैसा किसी ने माँगा है, बहुत दूर की कौड़ी है।

अस्तित्व–प्रणाली माँग नं.–1

स्वयं से प्रवीणता की माँग तर्कहीन स्व–विश्वासों को जन्म देती है:

★ मुझे अवश्य ही सबको खुश करना है

★ मुझे अवश्य ही किसी भी चीज़ के लिये तैयार रहना है

★ मेरे बच्चे अवश्य ही मेरा आदर करें

★ मेरे सहकर्मी अवश्य ही मेरा आदर करें

★ मुझे अवश्य ही आज दी गयी सारी 20 गतिविधियाँ पूरी करनी है (जबकि असल में आप पाँच भी नहीं कर पाऐं)

★ मुझे अवश्य ही किसी चीज को मना नहीं करना है

★ मुझे अवश्य ही दूसरों के लिए उपयोगी एवं योग्य बने रहना है

★ मुझे अवश्य ही कोई गलतियाँ नहीं करनी हैं

★ मुझे अवश्य ही स्वयं पर नियंत्रण रखना है

★ मुझे अवश्य ही एक पूर्ण–सिद्ध बेटा, एक पूर्ण–सिद्ध बेटी, एक पूर्ण–सिद्ध पत्नी, एक पूर्ण–सिद्ध पति, एक पूर्ण–सिद्ध भाई, एक पूर्ण–सिद्ध पिता, एक पूर्ण–सिद्ध बॉस, एक पूर्ण–सिद्ध आधीनस्थ, एक पूर्ण–सिद्ध बहू, एक पूर्ण–सिद्ध माँ, एक पूर्ण–सिद्ध मनुष्य बने रहना है।

वे लोग जिन पर 'पूर्ण–सिद्धता' होने के इन विचारों का प्रभुत्व सवार होता है वे चिन्ता तथा अपराध बोध से पीड़ित रहते हैं:

1. **अपने भविष्य की चिन्ता**
2. **अपने भूतकाल का अपराध बोध**

उदाहरण हेतु एक विद्यार्थी स्वयं से पूर्ण-सिद्धता की माँग कर कहता है- 'मुझे अवश्य ही 96 प्रतिशत पाना है तथा अपने शिक्षकों, प्रिंसिपल, माता-पिता, मित्रों इत्यादि की प्रशंसा हासिल करनी है।' यदि उसे 85 प्रतिशत ही मिल पाते हैं और वह उसे मंजूर न कर सके तो चिन्ता की शुरूआत हो जाती है। वह नकारात्मक स्ववार्ता की शुरूआत करता है, 'अब मेरे भविष्य का क्या होगा? मेरा जीवन व्यर्थ है, मेरी जिन्दगी तबाह हो चुकी है। लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे? मैं दुनिया का सामना कैसे करूँ? मैं अपने माता-पिता का सामना कैसे करूँ? यह जीवन जीने योग्य नहीं है।'

यह आत्म-विध्वंसक व्यवहार जैसे कि आत्महत्या की ओर ले जाता है, जो कि आजकल बिलकुल आम है। ये लोग अपने भविष्य के बारे में चिन्तित हैं तथा वह चिन्ता उनकी बुद्धि को अवरोधित कर देती है और वे अपने करियर और जीवन को तबाह कर लेते हैं। एक बार फिर, आपको याद दिला दूँ:

अत्याधिक भावनाएँ बुद्धि का अवरोध करती है।

'मैं अवश्य ही पूर्ण-सिद्ध बनूँ' वाले लोग हमेशा ही भविष्य में जीते हैं तथा उनकी भावनाएँ उनके इर्द-गिर्द की घटनाओं से निर्देशित होती हैं। यदि वे घटनाएँ उनके तथाकथित ' पूर्ण-सिद्धता-मानकों' पर खरी नहीं उतरी तो वे स्वयं पर क्रोधित होते हैं और एक बार यदि क्रोध (एक नकारात्मक भाव) शुरु हुआ तो वे केन्द्रित नहीं रह पाते, कुछ कर नहीं पाते, या जीवन में अपना चित्त नहीं लगा पाते। यह उन्हें जकड़ लेता है, और उसके बाद का व्यवहार और निर्णय उनकी भावनाओं का ही परिणाम होते हैं।

जो प्रोफेशनल्स जीवन से पूर्ण-सिद्धता की माँग करते हैं वे ऐसी भावनाओं से पीड़ित रहते हैं:

★ **मुझे अवश्य ही एक परफेक्ट प्रेजेंटेशन देना है**

★ **मुझे अवश्य ही काम में कोई गलतियाँ नहीं करनी है**

★ **मैं जो कुछ भी करूँ, उसमें मुझे अवश्य ही सर्वोत्तम रहना है**

★ **मुझे अवश्य ही अपनी प्रतिबद्धता, जुनून तथा लगन के लिये प्रशंसित किया जाना चाहिए। यदि मुझे वैसी प्रशंसा न मिले तो मैं व्यर्थ हूँ।**

चिन्ता और पूर्ण-सिद्धतावाद से ग्रसित कोई भी मनुष्य स्वयं को सन्तुलित नहीं रख सकता जब घटनाएँ उसके पूर्ण-सिद्धता के मानकों से मेल न खा रही हों। मेरे मित्रों मैं आपको यह बता दूँ कि आप सदैव पूर्ण-सिद्ध न रह सकेंगे।

ऐसे लोग जो स्वयं से पूर्ण-सिद्धता की माँग करते हैं कभी किसी को 'ना' नहीं कह सकते। चूँकि वे पूर्ण-सिद्धता के विचार से ग्रासित हैं, इसलिए वे ऐसे किसी भी काम को करने के लिए आसानी से तैयार हो जाते हैं जिसे लेकर आप उनके पास जावें। वे मना नहीं कर सकते और चूँकि वे 'ना' नहीं कह सकते, वे अपनी क्षमता से अधिक काम स्वीकार कर लेते हैं। और जब आप जितना कर सकें उससे कहीं अधिक काम स्वीकार कर लेते हैं तो आप अवश्य ही कुछ गलतियाँ कर बैठते हैं।

जब ऐसे पूर्ण-सिद्धतावादी गलतियाँ करते हैं तो वे एक और भावना से पीड़ित रहते हैं, अपराध-बोध। भूतकाल के बारे में अपराध-बोध; मैंने इस काम को क्यूँ लिया, क्यों मैंने 'ना' नहीं कहा, इत्यादि।

अत: जो लोग स्वयं से पूर्ण-सिद्धता की माँग करते हैं वे दो भावनाओं से पीड़ित रहते हैं:

1. **भूतकाल के बारे में अपराध-बोध**
2. **भविष्य के बारे में चिन्ता**

इसीलिए वे भावना शून्य तथा विकर्षित रहते हैं, और कोई व्यक्ति जो भावना-शून्य तथा विकर्षित हो, कभी भी उन्नयनित-जीवन नहीं हो सकता।

अस्तित्व-प्रणाली माँग नंबर-2

आप दूसरों से पूर्ण-सिद्धता की माँग करें और जब आप दूसरों से पूर्ण-सिद्धता की माँग करते हैं, तो ये विचार आपके मन में आते हैं:

★ दूसरे अवश्य ही मेरे प्रति न्यायपूर्ण एवं दयालु हों

★ दूसरे अवश्य ही मेरी सहायता करें

★ वे अवश्य ही मुझे समझ लें

★ वे अवश्य ही मेरी चुनौतियाँ और कठिनाईयाँ जान लें और मुझे उतना ही (काम) दें जो मैं संभाल सकूं?

★ दूसरे अवश्य ही मुझसे गैरशर्तिया प्यार करें

★ वे अवश्य ही मुझ पर माँगें न डालें

★ वे अवश्य ही मेरे निर्णय, मेरे दृष्टिकोणों, मेरे इरादों, और मेरे विचारों की कदर करें?

★ जब मैं ड्राइव करूँ, लोग अवश्य ही न तो लेन बदलें या मुझसे आगे निकलें

★ मेरी पत्नी बाहर निकलने से पहले मुझे अवश्य ही सूचित करे

★ बिजनेस अभियान में वह अवश्य ही मेरा समर्थन करे

★ वह अवश्य ही मुझे समझे और हर समय मेरे दृष्टिकोणों का आदर करे..... सारे समय

★ मेरी पुत्री अवश्य ही बहिर्मुखी हो

★ मेरे बेटे को अवश्य ही यह एहसास हो कि उसका 95 प्रतिशत न ला पाना मुझे निरुत्साहित करेगा। अत: वह अवश्य ही 95 प्रतिशत पावे

★ वह अवश्य ही सारे समय फेसबुक पर उपस्थित न रहे

★ मेरे बच्चे मेरे मित्रों तथा मेहमानों के समक्ष अवश्य ही शिष्ट हों

★ मेरे बॉस अवश्य ही मेरी घरेलू चुनौतियों को समझें और मुझ पर नये कार्यों का भार न डालें

★ मेरे अधीनस्थ अवश्य ही कठिन परिश्रम करें और तब तक घर न जावें जब तक उन्हें दिया कार्य सम्पन्न कर लें

★ वे अवश्य ही गलतियाँ न करें

★ वे अवश्य ही सारे समय समर्पित, वफादार, तथा प्रतिबद्ध रहें

★ मेरे सहकर्मी अवश्य ही मुझे सब कुछ बताएँ

★ मेरे बॉस या सहकर्मी मुझसे अवश्य ही प्रश्न न करें

★ मेरे पार्टनर्स अवश्य ही स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित न हो

★ जो कुछ मुझे पसन्द न हो वैसा वे अवश्य ही न करें

★ मेरी कम्पनी अवश्य ही मेरा स्थानान्तरण न करे

★ मेरे प्रतिष्ठान के समक्ष चाहे जो मुश्किलें हो पर मेरे कमीशन का भुगतान अवश्य ही समय पर हो

★ साल के बीच मेरा टारगेट अवश्य ही न बढ़ाया जाये

★ वो सब जो मुझसे अपेक्षित था, वो में न कर पाऊँ तो भी मुझे प्रमोशन अवश्य ही दिया जाय

★ कोई भी मेरे विरूद्ध अवश्य न जावे, अन्यथा मैं बेकार हूँ

दूसरों से ऐसी पूर्ण-सिद्धता की माँग होने पर लोग इन दो भावनाओं से पीड़ित रहते हैं:

1. शत्रुता
2. अवसाद

शत्रुता

जब आपके इर्दगिर्द के लोग आपके पूर्ण-सिद्धतावादी मानकों के अनुसार नहीं चल पाते तो आप में दूसरों के प्रति शत्रुता व क्रोध भाव आ जाता है, क्योंकि वे आपको तथा आपकी भावनाओं को समझ ही नहीं पा रहे हैं। ऐसी स्थितियों में आप वाकई हिंसक और आक्रामक हो सकते हैं। लोगों की हत्या, उन्हें पीटना, उन्हें चोट पहुँचाना, चीजों को नष्ट करना इत्यादि कुछ भी, आप कर सकते हैं। क्रोध के ऐसे ही क्षणों में, अधिकतम तर्कसंगत एवं समझदार लोगों ने अधिकतर हत्याएँ की हैं। रोड़-रेज, जिसमें लोग अपनी कारों से उतरकर झगड़ते हैं, चन्द पैसों के लिए सब्ज़ीवालों से विवाद, रेस्तराओं में बार-टेण्डर्स या वेटर्स से बहस इत्यादि, ऐसी ही शत्रुता और क्रोध भाव के फलस्वरूप होते हैं।

अवसाद

लोगों के जीवन के किसी कालखंड में जब लगातार नकारात्मक घटनाएँ घटें तो उन्हें महसूस होता है कि दूसरे यानी कि उनके पुत्र, पुत्रियाँ, पति या पत्नी, अधीनस्थ, मित्रगण, समुदाय, परिवार के सदस्य इत्यादि, उनके विचारों अथवा दृष्टिकोणों से मेल न रख पा रहे हैं; ऐसी स्थिति में वे एक दूसरे खतरनाक भाव, जिसे अवसाद कहते हैं, में पहुंच जाते हैं। वे बेकारी का भाव महसूस करते हैं। वे उदास तथा हतोत्साहित हो जाते हैं, और ऐसी भावनाएँ उनकी ऊर्जा सोख लेती हैं और वे अपने चार सकारात्मक भाव अथवा मानसिक स्थितियाँ खो देते हैं :

1. वे अपना हास्य भाव, जो कि आगे बढ़ने के लिए कतई आवश्यक है, खो देते हैं
2. वे प्रफुल्लित नहीं रह पाते
3. वे स्वयं की क्षमताओं पर शक करने लगते हैं और अपना आत्म विश्वास खो देते हैं

4. वे अपना उत्साह जीवित नहीं रख पाते हैं और लोगों द्वारा बनाई परेशानियों और परिस्थितियाँ उन्हें हाँकने लगती हैं

शत्रुता और अवसाद ग्रस्त मनुष्य कभी भी उन्नयनित जीवन नहीं हो सकता।

वह दूसरे लोगों को स्वीकार करने, उनसे समायोजन रखने तथा उनकी प्रशंसा करने की क्षमता खो देता है – एक उन्नयनित जीवन के तीन महत्वपूर्ण गुण जिन्हें हमने कमांडमेंट 5 में समझा था।

अस्तित्व-प्रणाली माँग नं.-3

आप अपने आसपास की वस्तुओं (न कि लोगों) से पूर्ण-सिद्धता की माँग करते हैं, जब ऐसी माँग आपके मन पर हावी हो तो आपके विचार कुछ इस प्रकार होंगे:

★ जब मैं सड़क पर जाऊँ, वहाँ कोई ट्रैफिक अवश्य न हो

★ वहाँ गड्ढे अवश्य न हों

★ मेरे कारोबार में प्रतिस्पर्धा अवश्य न हो

★ सरकार अवश्य ही ऐसे उपाय करे जिससे नागरिकों का जीवन आसान हो

★ मेरी कम्पनी शनिवार तथा रविवार को अवश्य ही छुट्टी रखे

★ यदि संभव हो तो शुक्रवार को भी अवश्य छुट्टी रखे

★ चूँकि मैं सुबह दस बजे उठता हूँ; मेरी कम्पनी मुझे अवश्य ही 9:30 के बजाय 12 बजे काम शुरू करने की अनुमति दे

★ जैसे ही मैं लिफ्ट में प्रवेश करूँ, वह अवश्य ही चल पड़े

★ जब मैं शॉपिंग के लिये जाऊँ तो पार्किंग का स्थान अवश्य ही मिले

★ चूँकि मुझे 16 डिग्री से उपर या नीचे का तापमान पसन्द नहीं है, मौसम अवश्य ही 16 डिग्री पर रहे

★ जब मैं यात्रा करूँ, बरसात अवश्य ही न हो

★ ट्रेन अवश्य ही समय पर आए

★ दुनिया अवश्य ही मुझे समझे और ऐसी स्थितियों एवं परिस्थितियों का निर्माण करे जो मेरे लिये अनुकूल हों

ये लोग चिड़चिड़ाहट एवं खीज जैसी चरम नकारात्मक भावनाएँ महसूस करेंगे। इस प्रकार की भावनाओं को वे कितना सहन कर पाते हैं, वही फर्क पैदा करता है। कुछ लोगों में ऐसी भावनाएँ को मंजूर करने की क्षमता अधिक तो कुछ में कम होती है।

जिन लोगों में बिगड़ सकती चीज़ों को कुबूल करने की क्षमता कम होती है, वे अपनी इच्छा के विरूद्ध हो रही किसी भी चीज़ को सहन नहीं कर पाते। वे 'थ्री ऐज़' संभाल नहीं पाते यानी कि 'एक्सेप्ट' – स्थितियाँ जैसी हैं उन्हें वैसी ही कुबूल करना; 'एडजस्ट' – परिस्थितियों के अनुसार समायोजन; और 'एप्रिशिएट'– दुनिया की सारी खूबियों की प्रशंसा करना। वे अधिकतर चिड़चिड़े, परेशान, अशान्त और गुस्से में रहते हैं। वे सदैव भावनाशून्य एवं विकर्षित रहते हैं।

दूसरी ओर जिन लोगों में बिगड़ सकती स्थितियों को कबूल करने की अधिक क्षमता होती है, वे चरम चिड़चिड़ाहट, खीज को सहन करते हुए भी अपने विचारों, शब्दों और कार्यों को शान्त, व्यवस्थित, चौकन्ने और स्थिर रख पाते हैं। उन्होंने इस तथ्य को मान लिया है कि वे पूर्ण–सिद्ध नहीं हो सकते। उन्होंने दुनिया की अपूर्णताओं के साथ समायोजन कर लिया है, और दुनिया के पास देने को जो कुछ है उसकी प्रशंसा की कला में महारत हासिल कर ली है। वे उन्नयनित–जीवन हैं।

हम सब अपनी इन मांगो को अलग–अलग महत्व देते हैं। हमारी स्वयं की भावनाओं के साथ निर्वाह की क्षमता के अनुरूप जीवन के अलग–अलग मौकों पर, उनमें से कोई एक भाव प्रमुख रहता है।

जो लोग अस्तित्व–प्रणाली माँग नंबर 1 से पीड़ित हैं, वे इस अनिश्चित दुनिया में स्वयं के लिये माँगे करेंगे ही और फलस्वरूपः

★ स्वयं को लेकर हर चीज में पछतावा करते हैं

★ वे आधीनता स्वीकार करते हैं

★ वे स्वयं से अन्यायपूर्वक ढंग से पेश आते हैं

★ वे हर वक्त पीड़ित रहते हैं

★ वे इसलिऐ चिड़चिड़े एवं अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि इस दुनिया ने उनका शोषण किया है

जो लोग अस्तित्व–प्रणाली माँग नंबर 2 से पीड़ित हैं, उनकी दूसरों से इसलिये नहीं बन पाती क्योंकि वे दूसरों से पूर्ण–सिद्धता की माँग रखते हैं और नतीजनः

★ वे दूसरो की परवाह नहीं करते

★ वे दूसरों से अधीरता बरतते हैं

जो लोग अस्तित्व-प्रणाली माँग नंबर 3 से पीड़ित हैं वे जीवन में किसी भी असुविधा का सामना नहीं कर पाते, नतीजन:

★ वे हर चीज़ को कल के किसी सही समय तक के लिये टाल देते हैं

★ वे सदैव दुनिया से हतोत्साहित एवं निराश रहते हैं

यदि आप स्वयं को भावनाशून्य न बताना चाहें तथा सफलता एवं जीवन-उन्नयन के मार्ग पर केन्द्रित रखना चाहते हों, तो लोगों को मेरे सुझाव है :-

शून्य न बताना चाहें तथा सफलता एवं जीवन-उन्नयन के मार्ग पर केन्द्रित रखना चाहते हों, तो लोगों को मेरे सुझाव है :-

अस्तित्व-प्रणाली माँग नंबर 1 से कैसे निबटें

1. मुखर बनें। जब 'ना' कहना हो, कहें।
2. यदि लोगों की माँगों के अनुसार कुछ न कर सकते हों तो 'ना' कहकर उन्हें अप्रसन्न करें, इस प्रकार आपकी 'ना' कहने की योग्यता के बारे में लोग जान जायेंगे। इन स्वर्णिम शब्दों को याद रखें:
   - ★ आप सभी लोगों को सारे समय प्रसन्न नहीं रख सकते।
   - ★ आप किसी एक व्यक्ति को भी सारे समय प्रसन्न नहीं रख सकते।
3. जो कुछ पूछना चाहते हों वह पूछें और जो पाना चाहते हों वह पा लें। पूछने से सिर्फ इसलिये न डरें क्योंकि आप 'अस्वीकृत' नहीं होना चाहते।
4. सर्वप्रथम स्वयं को खुशी प्रदान करें
5. स्वयं से प्यार करें, इस प्रकार आपको प्यार करने वाला कम से कम एक व्यक्ति तो होगा।

अस्तित्व-प्रणाली मांग नंबर 2 से कैसे निबटें

1. यह समझ लें कि लोगों के पास काम करने हेतु उनकी अपनी पहचान, लय एवं शैली होती है। उन्हें उसके अनुरूप काम करने दें।
2. दूसरों के साथ धीरज से पेश आयें।
3. दूसरों से सलाह कर अपेक्षाएं निर्धारित करें ताकि बाद में निराशा न हाथ लगे।

4. अवज्ञा और ना फर्मानी प्रव्याशित है तथा उसके लिये तैयार रहें।
5. दूसरों के साथ ऐसा कुछ न करें जो आपको स्वयं के साथ किया जाना पसन्द न हो।

अस्तित्व–प्रणाली मांग नंबर 3 कैसे निबटें

1. यह समझ लें कि सफल व्यक्तियों एवं उन्नयनित जीवन के पास बिगड़ती बातों को कुबूल कर आगे बढ़ जाने की महान योग्यता होती है।
2. याद रहे कि दुनिया में 'अभी' से बेहतर परिस्थिति कभी भी न थी। दुनिया का बेहतरीन सब कुछ, सभी पहलुओं में, सभी क्षेत्रों में, आपको आज मिला है। उसका आनन्द उठायें।
3. 'अभी' ही कुछ करने योग्य समय है। देर न करें, चल पड़ें!
4. शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक कष्ट ही किसी भी अर्थपूर्ण उपलब्धि की कुंजी है।

इन तीनों अस्तित्व–प्रणाली माँगो में से कौन सी आपके व्यक्तित्व में प्रमुख है? चार उदाहरणों के द्वारा समझाइये।

यहाँ बनी तालिका में उन चार पूर्ण-सिद्धताओं को दोबारा लिखे जिनकी माँग आप स्वयं/दूसरों/आसपास की वस्तुओं से करते हैं और उनसे छुटकारा पाने के लिये उठाये जाने वाले कदम क्या होंगे

क्रमांक	पूर्ण-सिद्धताएँ जिनकी आप मांग करते हैं	छुटकारे के लिये आप क्या कदम उठायेंगे	उसे आप कैसे करेंगे
1			
2			
3			
4			

आपकी अस्तित्व-प्रणाली माँगों की समस्याएँ

मेरे प्यारे मित्रों, समस्याओं के समाधान हेतु बुद्धि, अनुभव एवं ज्ञान ही हमारे औजार हैं।

जैसा कि मैंने शुरूआत में कहा, अत्यधिक भावनाएँ हमारी समाधान करने की योग्यता का अवरोध करती हैं। यदि हम स्वयं की अस्तित्व-प्रणाली से माँगे नहीं करें तो हम बिना पटरी से हटे ही कई चुनौतियों और समस्याओं को हल कर पायेंगे। हम 'ना' कहने की योग्यता का विकास कर चुके होंगे और भावनाएँ सोखने वाले व्यवधानों को अलविदा कहने की योग्यता का विकास भी कर चुके होंगे।

जैसे ही हम 'अपेक्षा' के बजाय 'मांग' करने लगते हैं; हम तर्कहीन और नकारात्मक स्व-वार्ता को जन्म दे देते हैं, और जिस क्षण ऐसा होता है तभी हम अपने गंतव्य की पटरी से उतर जाते हैं। अतः फिर आप स्वयं हों, दूसरे लोग हों या वस्तुएँ, आपका केन्द्रित रहना आवश्यक है क्योंकि आपकी आकांक्षाएँ और महत्वाकांक्षाएँ ही हैं जो प्रमुख हैं, और वैसा कर पाने के लिये स्वयं को इस आज्ञा, इस अनुदेश, इस निदेश, इस आदेश, इस प्रभु के विधान, इस कमांडमेंट को देकर, इसके प्रति अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिमिनिट सजग रहना है।

कमांडमेंट
9

एकाकी होने के लिये तैयार रहें।

केवल असामान्य ही उन्नयनित-जीवन हो सकते हैं

मुझे कई बार अनुभव होता है कि मैं इस ग्रह का एक अनोखा जीव हूँ मेरे विचार दर्शन व सिद्धान्त मेरे आसपास के अन्य लोगों से बहुत भिन्न हैं। मैं अपनी कम्पनी के प्रत्येक ऑफिस अस्सिटेंट को उन्नतिशील बनाना चाहता हूँ। मेरा स्वप्न है कि मेरे ऑफिस की हेल्पर मुमताज़ अपनी स्वयं की चाय की दुकान डाले और आसपास के सभी दफ्तरों में चाय उपलब्ध कराये। मेरा जीवन लक्ष्य है कि अपने सभी एम एस एम ई (माइक्रो स्माल एवं मीडियम इंटरप्राइजेस ग्राहकों को विश्वस्तरीय कारपोरेशंस में बदल दूँ। किसी स्पारटेन (एक 95 करोड़ रु. की बिल्डिंग निर्माण उपकरण बनाने व बेचने वाली कम्पनी) को कैटरपिलर आईएनसी (विश्व की सबसे बड़ी बिल्डिंग निर्माण एवं खनन उपकरण निर्माता कम्पनी, जिसका टर्न ओवर 60 अरब डॉलर है) में, वॉलप्लास्ट (एक 300 करोड़ रु. की दीवार पर लगने वाली पट्‌टी निर्माता कम्पनी) को एशियन पेंटस (भारत की सबसे बड़ी पेंट निर्माण कम्पनी) में, एक गोल्डमाइन (एक 20 करोड़ रु. वाली इंटीरियर डिजाइनिंग वस्तुशिल्प व आर्किटेक्चरल' कम्पनी) को जाहा हदीद वास्तुशिल्प (एक विख्यात वास्तुशिल्प एवं इंटीरीयर डिजाइनिंग कम्पनी जो किलर स्थित है तथा अपनी समसामयिक, आधुनिक व अद्‌भुत रचनाओं के लिये जानी जाती है) में, बदल दूँ। मुझे विश्वास है कि smmart के सारे कार्य किसी अन्य कम्पनी को आउटसोर्स किये जा सकते हैं और smmart एक कम खर्च अधिक लाभ वाले आदर्श पर चलायी जा सकती है। मैं चाहता हूँ कि smmart का प्रत्येक कर्मचारी, कम्पनी का भागीदार इसे और मेरे साथ साझे में कम्पनी का मालिक भी। मैं चाहता हूँ कि मेरी टीम के सभी इच्छुक उम्मीदवारों को कम्पनी में ही उद्योगी होने के मौके मिलें और वे मेरे साथ जीवन भर बने रहे। मेरा स्वप्न है कि मैं अपने कर्मचारियों के साथ ही बूढ़ा होऊँ और हम सभी एक साथ smmart टाउनशिप में रहें (मेरा विश्वास है कि मेरी गली के कोने पर जो सब्जी वाली बैठती है वह अपने आप में एक उद्यमी बने, सब्जी बेचने वालों की एक चेन बनाये और एक सफल व्यापार की मालकिन हो जो कि सदा चलता रहे, मेरे मन में इस स्वप्न को साकार करने की एक तीव्र इच्छा भी है। किसी समय एक ही देश रहे, भारत–पाकिस्तान को मैं फिर से मिलाकर एक ही देश बनाना चाहता हूँ... और मेरी सूची बढ़ती ही जाती है।

मेरे इन विचारों के लिये मुझे विरले ही कोई खरीददार मिला है। मेरी कम्पनी में कार्य करने वाले लोग और यहाँ तक कि कम्पनी के अग्रणी नेतृत्व पर पदस्थ लोग भी कई बार मेरे इन विचारों के साथ एकमत नहीं हो पाते हैं और फिर मैं स्वयं से पूछता हूँ कि क्या इन लोगों के साथ कुछ गड़बड़ है या कि समस्या मेरे साथ है?

इस प्रश्न का उत्तर कुछ इस तरह होगा–

उन्नत जीवन की चाह वाले लोग, जीवन उन्नयन की यात्रा में अकेले ही होते हैं।

एक उन्नयनित जीवन रेलगाड़ी के इंजन की तरह होता है, जो रेलगाड़ी को विशेष गन्तव्य की ओर ले जाता है। अलग–अलग स्टेशनों से लोग चढ़ते हैं, लम्बे समय तक साथ बने रहने का प्रण करते हैं, कई बार वे अपने गंतव्य तक साथ रहते हैं और कई बार बीच राह में उतर जाते हैं। कुछ लोग बहुत कम दूरी के लिये साथ रहते हैं, कुछ अगले स्टेशन पर ही उतर जाते हैं, और कुछ अन्य शायद अनंतकाल तक मेरे साथ रहें। इस यात्रा में लोगों के चढ़ने व उतरने की चिन्ता किये बिना, इंजन अपनी गति से, अपने गंतव्य की ओर बढ़ता रहता है, क्योंकि यह इंजन है जो रेलगाड़ी को चलाता है ना कि उसमें सवार यात्री।

मेरी यात्रा में बहुत लोग मेरे साथ रहे हैं कुछ ने कहा कि वे जिंदगी भर मेरे साथ चलेंगे किन्तु फिर वे अगले स्टेशन पर ही उतर गये, कुछ ने कहा कि वे अगले स्टेशन पर उतर जायेंगे, किन्तु वे लम्बे समय तक मेरे साथ रहे, कुछ और लोग आरम्भ से ही मेरे साथ हैं। जो अगले स्टेशन पर ही उतर गये मैं उनसे कभी नाराज नहीं हुआ, और उन्हें कभी यात्रा में अपने साथ आगे चलने से नहीं रोका, न ही मैंने कभी लोगों की इस बात को गम्भीरता से लिया कि वे लम्बे समय तक मेरे साथ चलना चाहते हैं दूसरे शब्दों में मैंने यह नहीं माना कि वे सदा मेरे साथ रहेंगे। इन दोनों ही परिस्थितियों में मैंने अपने स्वयं के जीवन–उन्नयन की राह में बाधाएँ खड़ी कर ली होतीं – यदि मैं यह विश्वास कर लेता कि लोग सदा मेरे साथ रहेंगे तो मुझे निश्चित ही धक्का लगता जब वे मुझे छोड़ कर जाते; दूसरी ओर यदि मैं लोगों को अपने साथ नहीं चलने देता क्योंकि वे गाड़ी पर चढ़ते ही उतरने के बारे में सोचने लगे हैं, तो मैं उनकी क्षमताओं को पूरी तरह से नहीं उभार पाता और फिर स्वयं के जीवन–उन्नयन की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता। अत: मैंने लोगों को उनकी सुविधानुसार अपने साथ जुड़ने दिया, बिना इस बात की परवाह किये कि हमारा साथ कितनी देर रहने वाला है, और जितना भी समय मुझे उनके साथ मिला मैंने उसका पूरा उपयोग हम दोनों के उन्नयन के लिये किया।

और चूंकि मैं स्वयं एक उन्नयनित जीवन चाहने वाला व्यक्ति हूँ, मैं आज भी इंजन बनकर डिब्बों को अपने साथ खींचता रहता हूँ, बिना इस बात की चिन्ता किये कि कौन मेरे साथ आया ओर कौन बीच में ही छोड़ गया; इंजन, जो किसी न किसी रूप में सभी डिब्बों से जुड़े होते हुए भी अलग रहता है। इंजन की शक्ति सभी डिब्बों की कुल शक्ति से कहीं अधिक होती है। इंजन की अनुपस्थिति में डिब्बे अपनी जगह पर ही खड़े रह जाते हैं, किन्तु डिब्बों के अभाव में भी इंजन अपने गंतव्य पर पहुँच जाता है।

संसार उपहास करने, आलोचना करने व छींटाकशी करने को तत्पर रहता है किन्तु कोई भी आगे बढ़कर रेलगाड़ी चलाने के लिये तैयार नहीं होता है। यह कार्य मात्र इंजन का ही होता है। इस प्रकार इंजन, जीवन को अर्थ देता है, विभ्रम की स्थिति में स्पष्टता देता है, अक्षम को शक्ति, दिशाहीन को दिशा, निरुत्साही को प्रेरणा, कमजोर को आत्मविश्वास, अयोग्य को योग्यता देता है, आदि।

यह एक दिशासूचक, उत्तरदायी एवं नेतृत्व से परिपूर्ण जीवन है। यह एक उत्तरदायित्व है, न कि विशेषाधिकार, और इंजन इस यात्रा में सदा एकाकी होता है। इसीलिये, कई वर्षों पूर्व मैंने स्वयं को यह घोषित किया कि मैं कभी भी डिब्बा नहीं बनूंगा, और आजीवन एक इंजन रहूँगा। जी हाँ, और एक इंजन होने के लिये, आपको जीवन में एकाकी रहने के लिये तैयार रहना होगा।

इस यात्रा के दौरान व्यक्ति को अत्यधिक आत्मसंदेह, हिचकिचाहट, अनिश्चितता, अविश्वास से गुजरना पड़ता है, और पूरे संसार से युद्ध करना पड़ता है। जैसा कि मैंने आरंभ में कहा संसार की 95 प्रतिशत जनसंख्या आम साधरणता एवं मात्र 5 प्रतिशत सार्थक विशिष्ट की श्रेणी में आते हैं। इस तर्क के अनुसार, यदि आप अपने चारों ओर देखें तो पायेंगे कि संसार साधारण लोगों से भरा हुआ है, जो साधारण साधनों के साथ साधारण जीवन जीते हैं। उन्होंने जीवन में किसी भी चीज को चुनौती नहीं दी है और दशकों से यथास्थिति में जी रहे हैं। वे एक जनसमूह या भीड़ हैं। किसी जनसमूह या भीड़ की क्या विशेषता है?

भीड़ एक घायलों का वह जनसमूह है जो कि संख्याओं के पीछे छुपा होता है। यह निर्देश नहीं दे सकता, अन्यों को आशा व आत्म विश्वास भी नहीं दे सकता, इसे प्रभुत्व वाले लोगों का समर्थन चाहिये। इसके कोई सिद्धान्त, दर्शन व अपने स्वयं के मत नहीं होते। इसके अपने कोई विचार या युक्तियाँ भी नहीं होतीं। वे मुखहीन होते हैं और सिर्फ एक मुखौटे से आवृत होते हैं। यह दशकों से ऐसा ही रहा है और आने वाली शताब्दियों तक ऐसा ही रहेगा।

भीड़ का प्रयत्न में विश्वास नगण्य ही है– वे जोखिम भी नहीं उठाते हैं ओर एक सुरक्षित प्रयास में ही संतुष्ट रहते हैं। वे वही करना पसंद करते हैं जो स्वीकृत मापदंडों के अनुरुप हो, जमे हुए ढांचों व प्रतिमानों का ही अनुसरण करते हैं, और वही सब करते हैं जो अन्य लोग कर रहे हों; क्योंकि उनमें कुछ भिन्न करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास व साहस की कमी होती है। इस मुखहीनता द्वारा प्राप्त सुरक्षा उन्हें भाती है और वे ऐसा कुछ भी करने या सोचने को भी तैयार नहीं होते, जो उन्हें इस ढाल से दूर ले जाये।

उन्नयनित जीवन के लिये प्रयत्नशील व्यक्ति यह जानते हैं कि जब तक वे इस भीड़ का भाग रहेंगे, उनके अंदर बैठा व्यक्ति कभी नहीं जागेगा। वे एक साधारण जीवन जीते रहेंगे और उनके विचार, शब्द एवं दर्शन अन्य लोगों से

प्रभावित रहेंगे। उनकी मौलिकता कभी प्रकट नहीं हो पायेगी और वे भीड़ में ही कहीं खो जायेंगे। वे इस संसार में कोई बदलाव नहीं ला पायेंगे, उनसे कोई अंतर नहीं आयेगा, उनके पृथ्वी पर आने व जाने का कोई महत्व नहीं होगा, और वे कभी भी अपना जीवन उन्नयनित नहीं कर पायेंगे।

अत: जीवन उन्नयनित करने के लिये वे पूरी चेतनता के साथ भीड़ से अलग खड़े होने का, सुविचारित निर्णय लेते हैं। वे जानते हैं कि उनके विचार, दर्शन व निर्णय संसार के मानदंडों से भिन्न हैं, किन्तु वे यह भी जानते हैं कि विश्व को उनके मौलिक विचारों की आवश्यकता है; यह भी कि संसार को उनके बेतुके दर्शन व साहसी निर्णयों की आवश्यकता है, क्योंकि ये मौलिक विचार, बेतुके दर्शन एवं साहसिक निर्णय ही उनके लिए एक बेहतर जीवन का मार्ग तैयार करेंगे, अगली क्रांति का आरम्भ करेंगे व इस विश्व को एक बेहतर स्थान बनायेंगे।

1998 में टाटा ग्रुप के चेयरमैन, रतन टाटा ने जो कि टाटा मोटर्स का काम देख रहे थे, जेगुआर एंड लैंड रोवर नामक, पिछले 19 वर्षों से घाटे में चल रही, कम्पनी को खरीदने का निर्णय लिया। इस निर्णय से टाटा मोटर्स पूरी तरह निरस्त हो सकती थी और टाटा ब्रांड भी गर्त में जा सकती थी। यह एक ऐसा निर्णय था जो कोई भी समझदार व्यक्ति अपने होशो-हवास में नहीं लेता। किंतु रतन टाटा ने अपनी साहसी वृत्ति, दूरदृष्टि और एकाकी चलने के मानस से सभी को एक किनारे कर, जे एल आर को खरीद लिया। आज इस प्राप्ति ने न केवल टाटा मोटर्स को बचाया, अपितु, यह उसकी आय में दो तिहाई और कुल लाभ में तीन चौथाई का योगदान भी कर रही है।

इस अनुभव के तुरंत बाद 2009 में जब सभी बड़े कार निर्माता बड़ी लक्जरी कारों के उत्पादन को बढ़ाने पर ध्यान दे रहे थे, रतन टाटा टाटा-नैनो, लेकर आये; संसार की सबसे सस्ती कार, जो कि विशेष रूप से मध्यम वर्ग के लिये बनी थी, और इसमें टाटा मोटर्स की पूरी विश्वसनीयता दांव पर लगी थी। एक ओर प्रत्यक्ष तकनीकी सीमाओं (कम कीमत के कारण) और दूसरी ओर राजनीतिक दबाव; उन्होंने भयंकर विरोध का सामना किया। लोगों ने उनका उपहास किया, कहा कि यह मात्र दम्भ व हठ से प्रेरित हैं; एक निर्लज्ज कल्पना है, जिसका क्रियान्वय असम्भव है। किन्तु रतन टाटा दृढ़ रहे।

सही दिमाग वाला कोई भी व्यक्ति ऐसी कल्पना की घोषणा तो दूर उस पर व्यक्तिगत रूप से काम भी नहीं करता। रतन टाटा इस पथ के एकाकी यात्री थे, किन्तु उनके मौलिक विचार, बेतुके दर्शन के मार्गदर्शन व साहसी कार्यों के सहारे, उन्होंने इसे क्रियान्वित कर दिखाया। उन्होंने दुनिया की सबसे सस्ती कार बनाई जिसकी कीमत थी 1,20,000 रुपये (3,000 अमरीकी डॉलर) यह दुनिया के ऑटोमोबाइल उद्योग के इतिहास में पहली बार हुआ था।

हालांकि टाटा नैनो का प्रोजेक्ट असफल रहा है, किन्तु रतन टाटा ने विश्व भर में एक क्रांति का आरम्भ कर दिया और आज उनके द्वारा लाये गये नवपरिवर्तनों का सैंकड़ों कार निर्माता अनुसरण कर और इसी तरह की कार बनाने में संलग्न हैं। वे टाटा नैनो का एक रूपांतर प्रस्तुत कर और रतन टाटा के अनुभवों व गल्तियों से सीख लेकर जल्द ही नैनो से बेहतर मॉडल की रचना करेंगे, किन्तु इस विचार को जन्म देने का श्रेय सदा रतन टाटा के पास ही रहेगा।

दो वर्ष से कम समय में ही उन्होंने अपनी दूसरी महत्वाकांक्षी परियोजना पर कार्य आरम्भ कर दिया है, "टाटा मैगापिक्सल कॉन्सेप्ट कार", जिसका अनावरण उन्होंने जेनेवा मोटर शो में किया। यह कार 100 किमी प्रति लिटर का औसत देती है। इस कार में विभिन्न प्रौद्योगिकियों का विशिष्ट प्रयोग किया गया है और यह अगले तीन साल में बन कर तैयार हो जायेगी। यह एक नया विचार है और अब तक अनसुना है, फिर से एक बार रतन टाटा इस यात्रा में अकेले हैं।

आइये एक क्षण के लिये कॉरपोरेट जगत से बाहर आयें और राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करें। आंग सान सू की एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध बर्मा (जिसे आज म्यान्मार के नाम से जाना जाता है) की प्रजातन्त्र समर्थक नेता हैं। वे बर्मा के स्वतंत्रता संग्राम के नायक आंग सान की बेटी हैं। जब वे मात्र दो वर्ष की थी उनके पिता की हत्या कर दी गयी थी। पिता के निधन के बाद वे अपनी माँ के साथ भारत आ गयीं जो उस समय बर्मा के चुने हुए राजदूत के रूप में भारत व नेपाल का कार्य देख रही थीं। उन्होंने बर्मा, भारत व यूनाइटेड किंगडम में शिक्षा पाई, जहाँ वे अपने पति माइकल एरिस से मिलीं व दोनों ने 1972 में विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद वे दो बेटों के माता-पिता बन गये।

तब तक वे एक साधारण बर्मी लड़की थीं, किन्तु उनके पिता ने – जिन्होंने अपना जीवन अपने देश व देशवासियों के लिये कुर्बान कर दिया था – उनमें विलक्षणता का बीज बो दिया था।

उन्होंने अपना पूरा जीवन बर्मा के बाहर ही बिताया था किन्तु कुछ था जो उन्हें उनकी मातृभूमि से जोड़े हुए था, इसे भाग्य का चक्र ही कहेंगे; 1988 में आंग सान सू की, अपनी मरणासन्न बीमार माँ की देखभाल करने के लिये अपने देश लौटीं। बर्मा की सत्ता सेना के हाथ में थी, सूकीने इससे क्रोधित हो, उस समय देश भर में फैले हुए लोकतंत्र बहाली के विद्रोह का समर्थन किया और उसी वर्ष उसके समर्थन के लिये नेशनल लीग फॉर डेमौक्रेसी नामक पार्टी की स्थापना भी कर ली जो कि लोगों को मानवाधिकार दिलवाने के लिये संघर्षरत थी।

1988 से उन्होंने अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को छोड़कर बर्मा को एक प्रजातंत्र बनाने के अपने उद्देश्य पर पूरा ध्यान देना आरम्भ किया। जब से उन्होंने यह प्रयास आरम्भ किया उन्हें कई बार जेल में डाल दिया गया। 15 वर्षों से, अधिकतर, वे घर पर ही नजरबंद रही हैं, किन्तु इससे उनके देश के लिए संघर्षरत

रहने के निर्णय को कमजोर नहीं किया। नजरबंद रहते हुए उन्होंने अपना समय दर्शनशास्त्र, राजनीति एवं आत्मकथाएँ पढ़ते हुए बिताया, जिससे वे अपने उद्देश्य के और निकट पहुँची, और जितनी बार भी उन्हें स्वतंत्र किया गया उन्होंने सेना की सत्ता के धैर्य व सहनशीलता की परीक्षा, पूरे देश में प्रचार कर कई जगहों पर भाषण देकर व बर्मा की जनता को प्रजातन्त्र के लिये जागृत करके ली।

1991 में उन्हें विश्व प्रतिष्ठित नोबल सम्मान प्राप्त हुआ, उन्हें नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1997 में, उनके पति को प्रॉस्टेट ग्रंथि के लाइलाज कैंसर से पीड़ित पाया गया। कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों व संगठनों, जिनमें संयुक्त राष्ट्र संघ, संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान व पोप जॉन पॉल द्वितीय भी सम्मिलित थे, की अपील के बावजूद बर्मा की सरकार ने उन्हें अपनी प्रिय पत्नी से अंतिम बार मिलने के लिये वीजा देने से मना कर दिया। हालांकि आंग सान सूकी को यह पेशकश की गयी थी कि वे चाहें तो अपने मरणासन्न पति से जा कर मिल सकती हैं, किन्तु उन्होंने बर्मा छोड़ने से मना कर दिया, क्योंकि वे अपने लोगों को छोड़कर नहीं जा सकती थीं। वे जानती थीं कि यदि वे एक बार बर्मा से बाहर चली गयीं तो फिर उन्हें बर्मा लौटने नहीं दिया जायेगा। और वे अपने उद्देश्य से सदा के लिये अलग हो जायेंगी। नजरबंद रहते हुए वे अपने बच्चों से भी अलग थीं, क्योंकि वे यूनाइटेड किंगडम में रहते हैं, किन्तु सु की ने हिम्मत नहीं हारी।

उनके पास अपने बीमार पति व प्रिय बच्चों के पास लौट आने का रास्ता हमेशा खुला था। किन्तु उन्हें अपने परिवार से विलग होना स्वीकार्य था परतुं अपने उद्देश्य से दूर जाना वे सहन नहीं कर सकती थीं। उनका ध्येय, बर्मा में प्रजातंत्र की स्थापना, उनके पति के जीवन, उनके दोनों बेटों और स्वयं उनसे कहीं बड़ा व महत्वपूर्ण था। अपने व्यक्तिगत बलिदानों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने सदा कहा कि ये बर्मा के लोगों द्वारा झेली गयी त्रासदियों की तुलना में कुछ नहीं है।

इस संघर्ष के दौरान, आंग सान सु की के साथ क्या था? उनके साथ कौन खड़ा था और कौन उन्हें समर्थन दे रहा था, जब वे बर्मा की सैनिक सरकार से लोहा ले रही थीं? उनके पास कौन था, जब उन्होंने अपने जीवन का चौथाई भाग नजरबंद होते हुए गुजारा? किन्तु इन तुच्छ प्रश्नों से उनकी आत्मा व दृढ़ता कभी विचलित नहीं हुई, क्योंकि वे जानती थीं कि वे एक उन्नयनित जीवन चाहने वाली महिला हैं और ऐसे लोग जीवन–यात्रा में एकाकी होते हैं।

वर्षों का समय कम नहीं होता, किन्तु उन्होंने जिस प्रकार का जीवन जीने का निर्णय लिया, वह बर्मा के लोगों के लिये आशा की किरण बन गया। आज भी अपने राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता वैसी ही मजबूत है, हालांकि वे आज भी

एकाकी हैं। वे कभी भी हिम्मत हार कर या समझौता कर, अपने चारों ओर की भीड़ में डूबने वालों में नहीं है।

उन्नयनित जीवन वाले लोग भीतर से एकाकी होते हैं। वे लोगों से घिरे हो सकते हैं; उनके महत्वपूर्ण सम्बन्ध भी होते हैं, जिनके पास कुछ ऐसा भी हो सकता है, जो उनके लिये अमूल्य है; किन्तु फिर भी वे एकाकी होते हैं। उनका लगाव, मात्र उनके उद्देश्य से ही होता है, और इस लगाव को जीवित रखने के लिये वे एक अनासक्त मनुष्य का रूप ले लेते हैं। आपकी अपने परिवार, मित्रों, बच्चों अथवा आपके घर, ऑफिस या कार के प्रति आसक्ति आपके दिमाग व मन को हमेशा घेरे रहती है और आपको जीवन उन्नयन के मार्ग से विमुख कर देती है। किन्तु उन्नयनित जीवन जीने वाले लोग, यद्यपि अपने परिवार, मित्रों, बच्चों, घर, ऑफिस या कार से लगाव रखते हैं परन्तु फिर भी वे इन सभी से एक दूरी बनाकर अनासक्ति का भाव बनाये रखते हैं।

उन्नयनित जीवन वाले लोग एकाकी रहकर सबसे अच्छा काम करते हैं, क्योंकि एकाकी होना उन्हें स्थान, समय और सोचने का मौका देता है जिससे वे अपने उद्देश्य के और निकट जा सकते हैं। जब वे अकेले होते हैं तब उन्नयनित जीवन व उनके उद्देश्य के बीच एक व्यक्तिगत बातचीत होती है। इससे एक प्रेम उभर कर आता है, एक सम्बन्ध बनने लगता है और यह वही लगाव एकमात्र वस्तु है जिसे वे जीवन-पर्यंत पोषित करते हैं, अन्य सभी सांसारिक जुड़ाव सिर्फ उतने ही महत्वपूर्ण रहते हैं जितने होने चाहिए; ताकि उन्नयनित जीवन जीने वाले लोग, उनमें बह कर अपने ध्येय से न हट जायें।

अतः मित्रों, एकाकी होना, जीवन उन्नयनित होने का परिणाम नहीं है, न ही यह लोगों द्वारा उन्नयनित जीवन का प्रयास कर रहे व्यक्ति को अकेले छोड़ देने का नतीजा है, अपितु यह एक सोच समझ कर, व जान बूझकर उठाया गया कदम है, जिससे व्यक्ति स्वयं को संसार से अलग कर लेता है, ताकि वह एक उन्नयनित जीवन बन सके।

अगले एक सप्ताह में अपने सोचने, बोलने व कार्य करने का ऐसा तरीका सोच समझकर व जान बूझकर विकसित करें जो आपके चारों ओर की भीड़ से अलग हो।

मेरे प्रिय मित्रों, यदि आप जीवन उन्नयनित करना चाहते हैं तो आपको एकाकी होना होगा, एकाकी होना होगा, एकाकी होना होगा... और बस। इसे समझिये, स्वीकार कीजिये और इसके लिये तैयार हो जाइये। इसकी घोषणा पूरे संसार में कर दीजिए। यदि लोग आपकी बात से सहमत हो कर आपका समर्थन करते हैं तो इसे बोनस मानिये। किन्तु इसे शर्त मत मानिये। जैसा कि मैंने

कहा था, संसार भीड़ बनाने वाले लोगों से भरा है। वे आपके साथ तभी चलेंगे, जब आप स्वयं को सही सिद्ध कर देंगे, क्योंकि भीड़ को प्रमाण, समर्थन व गारंटी की आवश्यकता होती है।

एक उन्नयनित जीवन, कभी भी इन सब के बारे में नहीं सोचता। वह कभी भी मृत्यु या खतरों से नहीं डरता। वह अपने विचारों के लिये जाने दे सकता है किन्तु भीड़ द्वारा मारा नहीं जा सकता।

सोलहवीं शताब्दी में जब गैलिलियो ने घोषित किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है न कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर, तो उसका उपहास किया गया, उसे यातना दी गई और अपने शब्द वापिस लेने के लिये धमकाया भी गया। किन्तु उन्होंने साम्राज्य को चुनौती देने का साहस किया यद्यपि वे अकेले ही थे। आज सैंकड़ों वर्षों बाद हम जानते हैं कि वे सही थे, विज्ञान ने भी यही प्रमाणित किया है और इस पृथ्वी पर बच्चा-बच्चा इस तथ्य को जानता है।

उन्नयनित जीवन की विशेषता है कि वह भीड़ को चुनौती देता है और लम्बे समय तक ऐसा करता रहता है। जब उन्हें अनुभव होता है कि वे अब ओर नहीं टिक पायेंगे तो वे भीड़ का भाग बन जाने का अभिनय करते हैं। सच्चाई यह है कि वे अभिनय कर रहे होते हैं, समय जुटा रहे होते हैं। वे भीड़ में बैठक कर एक नयी रूपरेखा तैयार कर लेते हैं ताकि वे अधिक प्रबलता से वापसी कर सकें। इतिहास ने सदा यही सिद्ध किया है। गैलिलियो के साथ यही हुआ था और यह आगे भी होता रहेगा, क्योंकि उन्नयनित जीवन कभी हार नहीं मानते और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखते। उनके पास समय ही नहीं होता – पछताने के लिये भी नहीं।

इन सभी महान व्यक्तियों के उदाहरण से, चाहे वे रतन टाटा, आंग सान सू की, गैलीलियो या कोई अन्य हों, जिनका उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है; मैंने सीखा कि यदि आप एक उन्नयनित जीवन चाहते हैं, तो आपको निर्णय करना होगा कि आप भीड़ का भाग बनना चाहते हैं या कि एक अलग विचित्र व्यक्ति; और मैंने घोषित किया कि मैं एकाकी बनूँगा।

अपने जीवन को जीवन-पर्यंत उन्नयनित रखने के लिये आपको यह आज्ञा, यह अनुदेश, यह निदेश, यह आदेश, यह प्रभु का विधान, यह कमांडमेंट स्वयं को अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिमिनट देना होगा:

एकाकी होने के लिये तैयार रहें।

कमांडमेंट
10

घोषित करें आप चिरजीवी हैं

आप तभी चिरजीवी हो सकते है जब
आपके पास कुछ महत्वपूर्ण करने को बकाया है।

जीवन-उन्नयन एक लम्बी एकाकी प्रक्रिया है जिसमें आपको लगातार अपने तत्कालिक स्व का अवसान करना, संभावनाओं के आगे की सोचना एवं स्वयं को भावनाएँ सोखने वाली घटनाओं से दूर रखना इत्यादि; और वैसा करने के लिए अकेले ही अपने इर्दगिर्द के समस्त संसाधनों को उन्नयनित करना तथा बीच मंझधार में नैया को झिंझोड़ना ताकि आप एक ऐसा जीवन जीयें जो कि:

- **स्वायत हो**
- **चिरजीवी हो**
- **मजबूत विचार, शब्द तथा कार्य जिसका नेतृत्व करते हों**
- **अधिनायक का हो**
- **जिसकी अनुकृति मुश्किल हो**

इस प्रकार आजीवन उन्नयनित-जीवन हों।

मेरा अनुरोध है कि आगे बढ़ने से पहले, तत्काल ही, उपरोक्त परिभाषा को कम से कम पाँच बार पढ़ें।

यह एक अनन्त खेल है, और इस खेल में प्रासंगिक बने रहने के लिए आपको अपने स्वास्थ्य के बारे में इरादे घोषित करने होंगे, क्योंकि बगैर अच्छे स्वास्थ्य के, आप उतने का 1 प्रतिशत भी न कर पायेंगे जितना एक उन्नयनित जीवन अपने जीवन काल में कर लेता है।

मेरे अनुसार पहले जीवन है, तदोपरान्त मृत्यु, यानि कि आपका जन्म 29 सितम्बर 1964 को हुआ और आपकी मृत्यु 29 सितम्बर 2084 को होगी। जन्म की ग्यारन्टी है, मृत्यु की भी ग्यारन्टी है। आप बचपन, किशोरावस्था, वयस्कता, प्रौढ़ता और बुढ़ापा...इत्यादि से गुजरेंगे.....परन्तु इनसे कोई फर्क नहीं पड़ता। जीवन को, जन्म और मृत्यु के बीच, अथक रुप से जीना पड़ता है।

जीवन को टुकड़ों में न जीयें। जीवन अथक है - १२० वर्ष तक अथक। ये ही जीवन है।

मैंनें यह तो नहीं कहा है कि मैं 25 या 47, 59 या 89 वर्ष की आयु तक उन्नयनित जीवन रहूँगा। मैं तो मृत्युपर्यन्त एक उन्नयनित जीवन रहूँगा! और जीवन के उन्नयन हेतु आपको भी यही शपथ लेनी होगी; क्योंकि मृत्यु ही जीवन–उन्नयन का अन्त है।

- देव आनन्द, जो कि एक महान भारतीय एक्टर तथा डायरेक्टर थे, उनकी मृत्यु 88 वर्ष की आयु में हुई, उनकी आखिरी फिल्म के रिलीज के चन्द महीनों के बाद।
- किशोर कुमार, एक महान भारतीय गायक, 58 वर्ष तक जिये।
- एम. एफ. हुसैन, एक महान भारतीय चित्रकार, भारत के सर्वकालिक महानतम चित्रकार के रूप में ख्याति पाने के बाद, 95 वर्ष की आयु में दुनिया को छोड़ गये।
- जे. आर. डी. टाटा, एक महान भारतीय उद्योगपति, 89 वर्ष की आयु में कूच कर गये।
- पीटर ड्रॅकर, महान प्रबन्धन गुरु जो 95 वर्ष तक जीयें एवं आखिरी दिनों तक लेखन करते रहे।
- रानी एलिजाबेथ 86 वर्ष की आयु में भी मुस्तैद।
- पंडित रविशंकर, एक महान सितार वादक, मृत्यु पर्यन्त – 92 वर्ष तक संगीत रचते रहे।
- जोहरा सहगल, 100 बरस की एक जीती–जागती महान अदाकारा।
- आशा भोंसले, एक मशहूर प्रतिष्ठित भारतीय गायिका, 79 वर्ष की आयु में भी अपने गानों से लोगों सम्मोहित कर रहीं हैं।
- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, 80 वर्ष की आयु में भी उत्साहित और प्रेरित कर रहे हैं।
- 76 वर्ष की आयु में 14 वें दलाईलामा जीवन–शक्ति से परिपूर्ण हैं।
- रिचर्ड ब्रैन्सन, एक ब्रिटिश उद्यमी, 61 वर्ष की आयु में भी कुछ कर गुजरने को बेताब हैं।
- मार्टिना नवरातिलोवा, एक महान टेनिस खिलाड़ी, 55 वर्ष की आयु मे खेल रहीं हैं।
- हेमा मालिनी और रेखा, दो प्रतिष्ठित भारतीय अदाकारायें, क्रमशः 63 और 57 की आयु में भी जीवन्त और दिलचस्प हैं।

अपनी मौत के पहले न मर जाना ही इन व्यक्तियों की खूबी है। जीवित हैं, तो जीवन्त हैं.... चिर–जीवी होने का यही अर्थ है।

आपकी मृत्यु कैसे हो, उसका चुनाव आप नहीं कर सकते, आप तो केवल यह चुन सकते हैं– आप किस प्रकार जियेंगे।

– जोन बेज़

मैंने एक दिन स्वयं से पूछा, 'मैंने कब तक जीने की योजना बनाई है?' ऐसे प्रश्न कोई नहीं पूछता क्योंकि कुछ लोग इन्हें अशुभ मानते हैं, यह शर्मनाक बात है, 'यह मेरे वश में नहीं है।' कुछ लोग जिन्हें यह विश्वास है कि वे कभी न मरेंगें, इस प्रश्न को नहीं पूछते।

फिर भी मेरा विश्वास है कि हम सब के मन में एक उम्र तय होती है। इसलिये चिन्ता न करें; अपने भय का वध कर स्वयं से पूछें, 'आपने कब तक जीने की योजना बनाई है?' यह प्रश्न पूछने पर जो उम्र मन में उभरे उसे इस ब्लॉक मे लिखें :

मैं______वर्ष तक जीयूँगा

कई, कई साल पहले जब मैंनें स्वयं से ही प्रश्न किया था, तब मैंनें स्वयं से कहा था,

मै ९५ वर्ष तक जीयूँगा

अब स्वयं से एक और प्रश्न करें, 'मृत्यु से एक वर्ष पहले आपका जीवन कैसा होगा?' कल्पना करें, कैसा/ कैसी होगी / आपका / आपकी –

- शरीर
- मनोस्थिति
- संपत्ति
- रिश्ते

- उस वर्ष आप क्या कर रहे होंगे??

जब मैंनें स्वयं से पूछा, 94 पर मैं कैसा रहूँगा, तो ये उत्तर मुझे मिले:

शरीर– नीरोग, टॉप कंडीशन में, आनन्ददायक

मनोस्थिति– एकदम चौकन्ना, शक्ति से परिपूर्ण, स्व–उन्नयनरत, चुनौतियाँ स्वीकारता

संपत्ति–परोपकार हेतु प्रतिवर्ष 10 करोड़ रूपए का दान

रिश्ते– शक्तिपूर्वक बंधे, अपने सारे मित्रों, परिवार और पूरी दुनिया जुड़े हुए

उस वर्ष मैं क्या कर रहा होऊँगा:

- उत्तम–विक्रयशील पुस्तकों का लेखन
- नये विषयों पर ऑडियो, वीडियो (या जो भी प्रचलित फॉरमेट हो) बनाते हुए
- प्रशिक्षण देते हुए विश्व भ्रमण
- दुनिया के लाखों लोगों को उत्साहित एवं प्रेरित करते हुए
- नायक के रूप में मूल्य–रचना एवं लोगों का निर्देशन
- लोगों के एकदम नये समूह से जुड़कर उनमें आत्मविश्वास का संचार
- नये रचनात्मक विचार पैदा करते एवं लोगों को अधिक सक्षम बनाते

मैं ये कभी न कहूँगा:

- अब मैं 50 या 60 का हूँ।
- मैं इतना बूढ़ा हो चुका हूँ।
- मैंने दुनियादारी की अपनी सारी जवाबदारियाँ पूरी कर ली हैं।

- जितना बेहतरीन मैं कर सकता था, कर चुका हूँ।

- मुझे भगवान के बुलावे का इन्तजार है।

जो लोग ऐसा कहते हैं, वे अपना उत्साह, दृढ़ता, जवाबदारी, प्रतिबद्धता, उद्देश्य, धन, मित्र-गण और सारे रिश्ते खो बैठते हैं।

यदि आपका विश्वास है कि आप बूढ़े हो चुके है अथवा बूढ़े हो रहे है तो आप आगे न बढ़ पाते एवं न कोई योगदान कर पाते हैं, प्रकृति आपसे आपके शरीर के स्वस्थ हिस्सों को लेने लगती है और आप वाकई बूढ़े होने लगते हैं, और स्वयं तथा अपने आसपास के सभी लोगों के लिये बेकार हो जाते हैं और जैसे ही आप स्वयं तथा अपने आसपास की दुनिया के लिये बेकार हुए, दुनिया आपकी उपेक्षा करने लग जाती है, इसमें आपके नजदीकी एवं प्रियजन भी शामिल हैं।

उन्नयनित जीवन समझ चुके हैं कि दुनिया आपकी तभी तक कदर करती है जब तक आप अपने इर्दगिर्द लोगों के लिये लाभकारी हों तथा यदि आप आसपास की अस्तित्व-प्रणाली की प्रगति में योगदान कर रहे हों। अत: चिरजीवी होने का निर्णय लें।

इस पुस्तक में उल्लेखित सभी व्यक्ति, अपने जीवन के अन्तिम दिन तक, दुनिया के विशिष्ट योगदानकर्ता रहे। जो जीवित हैं आज भी योगदान दे रहे हैं तथा जब तक अस्तित्व में हैं तब तक योगदानकर्ता बने रहेंगे।

उन्नयनित जीवन की आत्मा जीवन्त होती है

किस प्रकार उन्नयनित जीवन की आत्मा जीवन्त होती है?

1. वे चीजों को उत्तम ढ़ंग से देखते हैं।
2. भविष्य के बारे में वे अलग ढ़ंग से देखते हैं।
3. भविष्य के बारे में वे अलग ढ़ंग से सोचते हैं।
4. वे भविष्य के बारे में अलग ढ़ंग से संवाद करते हैं।
5. वे भविष्य के लिये अलग ढंग से क्रियाशील होते हैं।

1. चीजों को अलग ढंग से देखना

- वे भविष्य को एक असीमित महासागर के रूप में देखते हैं

- वे स्वयं को 100-150 वर्ष तक कायम देखते हैं

2. **भविष्य को अलग ढंग से महसूस करना**

- वे अपना यौवन और जीवन्तता सदैव बनाये रख सकते हैं

3. **भविष्य को अलग ढंग से सोचना**

- वे स्वयं से आगे की सोचते हैं

- जब तक जीवित हैं, और मृत्यु के बाद भी वे दुनिया में कुछ फर्क पैदाकर सकते हैं

4. **भविष्य के बारे में अलग ढ़ंग से संवाद करना?**

- वे जुनून के साथ इस प्रकार संवाद करते हैं कि लोग कुछ करने को मजबूर हो जाते हैं

5. **भविष्य के लिए अलग ढ़ंग से काम करना**

- वे तेजी से काम करते हैं तथा नये प्रॉजेक्ट ले लेते हैं

- उन्हें जोखिम उठाने से डर नहीं लगता, और न ही हार का भय

- वे इस प्रकार काम करते हैं जैसे उन्हें कोई रोक न रहा हो

- वे इस विश्वास से काम करते हैं कि वे:

  - ★ दुनिया को बदल सकते हैं

  - ★ दुनिया के घाव भर सकते हैं

  - ★ दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकते हैं

  - ★ दुनिया पर छाप छोड़ सकते हैं

भविष्य को अपने हाथों में लेकर ऐसा बर्ताव करते हैं जैसे कि भविष्य उन्हीं की मिल्कियत है। आयु–रहित जीवन तथा असीमित–ऊर्जा में उनका विश्वास इन तीन मनोभावों से आता है:

1. **आयु–मुक्त मनोभाव:** वे स्वयं किस उम्र के हैं इसकी खास परवाह उन्नयनित जीवन नहीं करते, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि जीवन उन्नयन के शुरूआत अथवा अन्त की कोई उम्र तय नहीं है। नहीं तो और किस प्रकार आप कर्नल सैण्डर्स का जीवन परिभाषित करेंगे जिन्होंने 79 वर्ष की आयु में के.एफ.सी. नाम से प्रसिद्ध फास्ट–फूड श्रृंखला, केंटुकी फ्राईड चिकन शुरु की। ऐसी उम्र जब साधारण मनुष्य शायद तीर्थगमन करते हैं यदि वे पहले ही बिस्तर न पकड़ चुके हों।

2. **रिटायर न होने का मनोभाव:** उन्नयनित जीवन कभी रिटायर नहीं होते। किसी खास उम्र में वे अपनी नौकरी/कारोबार से रिटायर जरूर हो जावें पर वैसे रिटायरमेंट की स्थिति उनके जीवन–उन्नयन के मार्ग की बाधा नहीं होती। एक रेल्वे इंजीनियर, ई. श्रीधरन ने रिटायरमेंट के बाद, 70 वर्ष से अधिक की उम्र में दिल्ली मेट्रो प्रॉजेक्ट के मैनेजिंग डायरेक्टर बने। तब उन्हें मेट्रो रेल प्रणाली का सिर–पैर भी नहीं ज्ञात था। पर उन्होंने आगे बढ़कर, जिस नये खेल में वे उतरे थे, उसके नियम सीखे तथा इतने सफल हुए कि लोगोंने उन्हें 'मेट्रो–मैन' कहकर बुलाया। 80 वर्ष आयु में आज वे कई राज्य सरकारों के सलाहकार हैं।

3. **जीवन–पर्यन्त उपयोगिता:** उन्नयनित जीवन में, जब तक उनका दिल धड़के, उपयोगी रहने तथा दुनिया में योगदान करने की तीव्र इच्छा रहती है। बृजमोहन मुंजाल, जो 88 की वय में हीरो होण्डा की सफलता पर फल–फूल सकते थे, ने शांतिपूर्ण ढंग से अपनी 26 वर्ष की होण्डा से पार्टनरशिप को समाप्त कर स्वयं को हीरो मोटोकॉर्प के रूप में प्रतिष्ठित करने का बीड़ा उठाया। अब वे स्वतंत्र रूप से भारत में दुपहिया वाहनों का निर्माण कर, जीवन–पर्यन्त उपयोगिता के दर्शन एवं एक चिरजीवी के रूप में अवतरित हुए हैं।

सबसे उपर, उन्नयनित जीवन लॉ ऑफ डिमिनिशिंग रिटर्न्स को चुनौती देते हैं। उनकी केवल आयु बढ़ती है। उनकी आयु बढ़ने से उनका योगदान कुछ कम होगा, वैसा विश्वास उन्हें नहीं होता है। उलटे, उन्हें विपरीत विश्वास होता है कि प्रति वर्ष वे दुनिया को पिछले वर्ष की तुलना में अधिक लौटा पायेंगे।

अब हम मेरे प्रश्नों पर वापस आ जाते हैं। कुछ पहले मैंने आपसे पूछा था, 'आपने कब तक जीने की योजना बनाई है?' आपने कोई उम्र बताई होगी, जैसे की मैंने 95 वर्ष कहा था।

फिर मैंने एक और रोचक प्रश्न किया था, 'आपकी मृत्यु के एक वर्ष पहले आपका जीवन कैसा होगा?' यानी कि आपका शरीर, आपकी मनोवृत्ति,

सम्पत्ति, रिश्ते कैसे होंगे, और उस वर्ष आप क्या कर रहे होंगे? मुझे यकीन है कि आपके उत्तर अब तैयार हैं।

अब मेरा तीसरा प्रश्न है, यदि आप जीवन को इस सकारात्मक एवं प्रगतिशील तरीके से जियें, तो आप क्या सोचते हैं आपकी मृत्यु स्वयं द्वारा नियोजित उस उम्र पर होगी?

प्रत्यक्ष उत्तर 'ना' है।

मेरा चौथा प्रश्न है, **यदि आपकी मृत्यु आपके द्वारा नियोजित उम्र पर नहीं होती, तो आप कब तक जियेंगे?**

कुछ वर्ष पूर्व जब मैंने स्वयं से यह प्रश्न किया था तो मैंने स्वयं से कहा था, मैं 120 वर्ष की आयु तक जीवित रहूँगा। उन 25 विशेष बोनस वर्षों को मैं यात्रा-विस्तार कहता हूँ।

मुम्बई (जहाँ मैं रहता हूँ) में जब आपके पास गंतव्य 'अ' से गंतव्य 'ब' तक जाने का मासिक रेल्वे पास है और आप कुछ आगे गंतव्य 'स' तक जाना चाहें; तो 'ब' से 'स' तक यात्रा विस्तार टिकट ले सकते हैं। अत: 25 अधिक वर्षों के यात्रा-विस्तार से मैं 120 वर्ष तक जियूंगा।

मेरा पाँचवा और अखिरी प्रश्न है, संतोष नायर इन 25 बोनस वर्षों में क्या कर सकेगा?

और मेरा उत्तर था:

- नोबल पुरस्कार जीतूँ
- विश्व की सबसे शक्तिशाली आवाज बनूँ
- 95 की वय तक बनाये जाने वाले 1000 के बजाय में 1500 ऑडियो, वीडियो बनाऊँ
- 95 की वय तक लिखी जाने वाली 100 पुस्तकों के बजाए 150 लिखूँ
- स्मार्ट को विश्व की सबसे बड़ी व्यक्तिगत, उद्यमी तथा प्रतिष्ठान परिवर्तन कम्पनी बनाऊँ
- अध्याय 7 में पूछे प्रश्न 5 के उत्तर में लिखे सारे लक्ष्य प्राप्त कर लूँ (इस दुनिया को छोड़ने से पहले मैं क्या कुछ करना चाहता हूँ)

उपरोक्त शैली से जीवन जीना ही 'चिर-जीवी' होना है। पर जीवन की सारी दैनिक जटिलताओं के मध्य, यह चित्र जल्द ही भुला दिया जाता है।

अतः, आपको समय–समय पर खुद को अपने लक्ष्यों की याद दिलाते रहना है और यह आप स्वयं नहीं कर सकते, ना ही कोई नियुक्त सहायक जो आपको याद दिलाये, ना टेक्नॉलॉजी का उपयोग करें। आपको ऐसे लोगों के समूह का निर्माण करना होगा जो इस दर्शन में आपके साथ हैं और ऐसे ही हम एक अति महत्वपूर्ण संकल्पना – **यात्रा विस्तार बंधु समूह तक आ पहुंचते हैं।**

यात्रा विस्तार बन्धु समूह एक ऐसे लोगों का समूह है जो आप ही की तरह हैं– स्वस्थ, चिरजीवी और मृत्यु पर्यन्त जीवंत। उन्होंने आपकी तरह जीवन–उन्नयन के इरादे की घोषणा की है और उनका सानिध्य ही आपको स्वयं के चिरजीवी होने के लक्ष्य के करीब ले जायेगा। किसी एक या दूसरे कारणवश यदि यह बन्धु समूह सिकुड़ने लगे तो एक स्वयंभू नायक के रूप में आपको इस बन्धु समूह का सतत विस्तार सुनिश्चित करना होगा। यदि कोई एक सदस्य चला गया, तो तीन नये सदस्य जोड़ने होंगे तथा इस समूह का उत्साह तथा यौवन जीवित रखना होगा।

चार ऐसे व्यक्तियों की सूची बनाएं जो आपके यात्रा विस्तार बंधु समूह का हिस्सा बन सकें तथा इसका विवरण दें कि आप किस प्रकार उनके साथ परस्पर प्रभाव के जरिये चिरजीवी बनेंगे।

काल–प्रभाव, उम्र का बढ़ना बीसवीं सदी की संकल्पना है और एक स्व–स्वीकृत भविष्यवाणी। आप जैसा अक्सर सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं। यदि आप सोचते हैं कि आप वृद्ध हैं तो आप बूढ़े हो जाते हैं, यदि आप सोचते हैं कि आप सदैव जीवन्त रहेंगे तो आप चिरजीवी बन जाऐंगे। अपने विचार, संवाद तथा कार्यों से लोगों को दर्शाएँ की आप एक विशालकाय जीवन जियेंगे, 100 के बाद भी। आपके इर्द–गिर्द सभी वैसा देख पाएँ, महसूस कर पाएँ, विश्वास कर पाएँ और उससे प्यार करें। पूर्व सूचना देकर अपने महान भविष्य का निर्माण करें। अपना महान भविष्य जियें! समय, संसाधनों तथा अवसरों का उन्नयन करें। जीवन–उन्नयन करें।

आपको जीवन पर्यन्त, जीवन उन्नयन हेतु स्वयं को इस आज्ञा, इस अनुदेश, इस निर्देश, इस आदेश, इस प्रभु के विधान, इस कमांडमेंट को देकर इसके प्रति अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिमिनिट सजग रहना है:

घोषित करें आप 'चिरजीवी' हैं।

कमांडमेंट
11

ऐसा जीवन जीयें, जिसकी अनुकृति कठिन हो

यदि आपके जीवन को सरलता से अनुकृत किया जा सके,
तो आप उन्नयनित-जीवन नहीं है।

प्रिय मित्रों हम पुस्तक के अंतिम अध्याय पर पहुँच चुके हैं, यह इलेवन कमांडमेंट्स जो मैंने जीवन में सीखे हैं, और जिनका उपयोग मैंने अपने एवं अपने आसपास के जीवन को उन्नयनित करने के लिये किया है, यह उनमें अंतिम है और पहले दस का निष्कर्ष भी।

इस पुस्तक के पहले अध्याय में मैंने 'जीवन जीने व जीवन बिताने' में अंतर की चर्चा की थी। मैं नहीं जानता कि तब मैं अपनी बात ठीक से रख पाया था या नहीं, यदि नहीं तो आइये उस पर फिर से एक नज़र डालें।

अधिकांश लोग अपना जीवन वस्तुओं का उपभोग करते हुए बिता देते हैं, किन्तु वे लोग जिन्हें हम उन्नयनित जीवन कहते हैं रचनाकार होते हैं। रचनाकार उपभोग नहीं करते और उपभोक्ता रचना नहीं करते।

रचनाकार, कॉरपोरेशंस, संस्थाओं, राष्ट्रों एवं स्मारकों की रचना करते हैं। दूसरी ओर उपभोक्ता या साधारण मनुष्य– इन कॉरपोरेशंस या संस्थाओं के लिये काम करते हैं, इन राष्ट्रों या स्मारकों की रचना में भाग लेते हैं और रचनाकारों द्वारा बनाये गये उत्पादों या उनके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं का उपभोग करते हैं।

जीवन उन्नयन्ति करने वाले लोग, अपने जीवन में जल्दी ही एक सोचा समझा निर्णय ले लेते हैं कि उन्हें रचनाकार बनना है, न कि उपभोक्ता, और फिर वे एक ऐसा जीवन जीते हैं जिसकी अनुकृति तैयार करना कठिन है।

और एक रचनाकार होने के लिये मनुष्य को पृथ्वी पर अधिक समय बिताने की आवश्यकता नहीं है। उसका जीवन उतना ही छोटा हो सकता है जितना किसी अन्य का और फिर भी इस एक जीवन में वह जो कर सकता है; वह दूसरे व्यक्ति के लिये सैकड़ों वर्षों में भी दोहराना कठिन है

आइये, एक दृष्टि Apple पर डालें–

एक ऐसी कम्पनी जिसका नवविचारों के प्रति जुनून पागलपन की सीमा तक है। Apple के पीछे स्टीव जॉब्स नामक एक व्यक्ति था, जिसने मात्र 56 वर्ष ही पृथ्वी पर वास किया और इस छोटे समय में उन्होंने 4 उद्योगों को रूपांतरित कर दिया। एक जीवन में एक उद्योग को रूपांतरित करना कठिन है, लेकिन उन्होंने चार उद्योगों को बदला; संगीत उद्योग को आई ट्यून्स से, चलचित्र उद्योग को पिक्सर से, कम्प्यूटर उद्योग को आय पैड/मैक से, संचार उद्योग को आई फोन से; और अगले रूपांतरण की उनकी तलाश उनके जीवन के अंत तक बनी रही।

कॉलेज की पढ़ाई अधूरी छोड़ने वाले, स्टीव जॉब्स ने अपने मित्र स्टीव वॉजनियाक (जिन्हें वॉज़ के नाम से पुकारा जाता है) के साथ Apple की

स्थापना, 1976 में स्टीव परिवार के गैरेज में की थी, स्टीव ने वॉज के साथ मिल कर पूरे मन, वचन व कर्म से Apple का निर्माण किया। यह उनका पहला प्रेम था और दस वर्षों में यह 2 बिलियन डॉलर की कम्पनी बन गई, जिसमें 4000 कर्मचारी थे। उस समय स्टीव की आयु 30 वर्ष थी। कुछ समय बाद उन्होंने एक व्यक्ति को कम्पनी चलाने के लिये रखा, स्टीव का विचार था कि वह व्यक्ति इस काम के लिये उपयुक्त है और उनका पूरा साथ देगा, किन्तु पहले वर्ष के अंत तक भविष्य के बारे में उनके विचार एक से न रहे और उनमें मतभेद हो गया। कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने उस व्यक्ति का साथ दिया और स्टीव को कम्पनी से निकाल दिया गया।

उन्हें अपनी ही कम्पनी से हटा दिया गया था और वयस्क जीवन का एकमात्र ध्येय उनकी आँखों के सामने छिन्न-भिन्न हो गया। किन्तु स्टीव ने जीवन से हार नहीं मानी। उन्होंने दो नयी कम्पनियाँ आरम्भ की– पिक्सर स्टूडियोज़ जहाँ दुनिया की पहली कम्प्यूटर एनीमेटेड फीचर फिल्म– टॉय स्टोरी व अन्य कई फिल्में बनी, और फिर 2006 में इस कम्पनी का वॉल्ट डिज़्नी में विलय हो गया, इस योग ने स्टीव जॉब्स को डिज़्नी का सबसे बड़ा हिस्सेदार बना दिया (शेयर होल्डर); दूसरी कम्पनी, एक कम्प्यूटर हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर बनाने वाली कम्पनी थी Next, जिसको कुछ समय बाद Apple ने ही खरीद लिया और स्टीव फिर से सीईओ बन कर अपने पहले प्यार तक पहुँच गये।

Apple की अपनी दूसरी पारी में उन्होंने आश्चर्यजनक उत्पाद विकसित किये और वे भी चमत्कारिक तेजी से, जिसको अनुकृत नहीं किया जा सकता।

जब भी Apple कोई नया उत्पाद बाज़ार में उतारता, प्रतिद्वंदी कम्पनियाँ उसके बराबर की व समांतर प्रोद्योगिकी एकत्रित करने में जुट जातीं, किंतु वे कभी भी आगे निकलने में सफल नहीं हुई। स्टीव ने कई क्रांतिकारी उत्पाद प्रस्तुत किये, जिनमें मैकबुक एअर, आईपॉड व आईफोन जैसे उत्पाद हैं, इन सभी ने आधुनिक प्रौद्योगिकी के विकास को गति और दिशा दी। इनके प्रभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस दिन आईफोन 5 को बाज़ार में उतारा गया, Apple ने 20 लाख फोन बेचे ... क्या यह संभव लगता है?

“यदि आप अपना हर दिन ऐसे जीते हैं मानो वह आपके जीवन का अंतिम दिन हो, तो किसी दिन आप निश्चित ही बिलकुल ठीक लगेंगे।” स्टीव जॉब्स ने यह उद्धरण सबसे पहले 17 वर्ष की आयु में देखा, और तभी से यह उनके जीवन की नींव बन गया। उन्होंने अपना प्रत्येक दिन ऐसे जीया, जैसे कि वह उनके जीवन का अंतिम दिन हो और जीवन के अंतिम दिन तक काम करते रहे, क्योंकि उनका काम ही उनकी सबसे प्रिय वस्तु थी। अग्नाशय (पैनक्रियास) कैंसर से

पीड़ित थे और कई वर्षों तक उसके कष्ट को परास्त करते रहे, उन्होंने जीवन के सभी सुखों का त्याग किया और स्वयं से कहीं बड़े उद्देश्य के लिये जीये।

स्टीव जॉब्स को अन्य साधारण मनुष्यों से भिन्न बनाने वाले उनके दो मूल गुण–

1. हठीलापन
2. अव्यवहारिकता

टी.टी. रंगराजन, जो कि मेरे घनिष्ठ मित्र व भारतीय आध्यात्म के एक गुरू भी हैं, के अनुसार **"अव्यवहारिकता एक औसत या साधारण मनुष्य की भाषा का शब्द है, जो कि क्रियान्वय का उत्तरदायित्व नहीं उठाना चाहता।"**

स्टीव जॉब्स एक अव्यवहारिक जुनूनी थे जिन्हें अपने काम से प्रेम था। जिन रचनाओं में उनका विश्वास होता वे उसका पूरा दायित्व स्वयं ले लेते। उन्होंने अपने स्वयं को क्रियान्वित करने की पूरी जिम्मेदारी ली और जिसे साधारण मनुष्य एक अव्यवहारिक स्वप्न मान रहे थे, उसे एक व्यावहारिक यथार्थ में बदल दिया। आज, Apple संसार की सबसे मूल्यवान कम्पनी है जिसका बाजार मूल्य 656 अरब डालर है।

"जीवन की लम्बाई नहीं,
अपितु उसकी गुणवत्ता अधिक महत्वपूर्ण है।"
–मार्टिन लूथर किंग जूनियर

मार्टिन लूथर किंग जूनियर के शब्दों के अनुसार स्टीव जॉब्स ने एक लम्बा नहीं, किन्तु उत्कृष्ट जीवन जीया ओर इस प्रक्रिया में उन्होंने शारीरिक, मानसिक व मनोवैज्ञानिक कष्टों पर विजय पायी। उन्होंने अपनी भावनाओं को जीता, अपने दिन और रात को भी जीता। उन्होंने वह असामान्य प्रयत्न किया और सामान्य स्थितियों को विशिष्ट बना दिया। उन्होंने अत्यधिक काम किया, प्रवास किया, बोले, पढ़ा, निर्माण किया और विशिष्ट योग्यताओं और कौशल का विकास किया। उनमें जुनून, दृढ़ता, निष्ठा, ईमानदारी, अनुशासन व उत्तेजना का बाहुल्य था और इन्हीं ने उन्हें एक उत्कृष्ट व्यक्ति बनाया – एक उन्नयनित जीवन! उनके जीवन को दोहराना सरल नहीं है, और यही है वह अंतिम कमांडमेंट जो आपको स्वयं को देना है। याद रखें, आपको इसके लिये पूरी चेतनता के साथ, आगे बढ़कर कार्य करना है।

अपने जीवन को जीवन-पर्यंत, उन्नयनित रखने के लिये आपको यह आज्ञा, यह अनुदेश, यह निदेश, यह प्रभु का विधान, यह कमांडमेंट, स्वयं को अपने जीवन के प्रतिदिन, प्रतिघंटे प्रतिमिनट देना है:

ऐसा जीवन जीयें, जिसकी अनुकृति कठिन हो।

उपसंहार

मित्रों, हम इस पुस्तक के अंत पर हैं। इन ग्यारह अध्यायों में मैंने आपसे जो भी बांटा है वे मात्र किताबी दर्शन नहीं है, अपितु मेरे जीवन का निचोड़ है। यहाँ प्रस्तुत प्रत्येक कमांडमेंट मेरे जीवन का दर्शन व पथ प्रदर्शक रहा है। मेरी आज तक की सभी उपलब्धियों की नींव, ये ही कमांडमेंट्स हैं, और जीवन के सभी उद्देश्य मेरी पहुँच में हैं, क्योंकि मैं इनमें व इस बातचीत में मैंने आपके साथ जो भी बांटा, उसमें विश्वास रखता हूँ।

यदि इन सभी नहीं, तो कुछ कमांडमेंट्स ने निश्चित ही आपका कौतूहल जगाया होगा और आपको जीवन को एक भिन्न दृष्टि से देखने को बाध्य किया होगा। संभव है, आप में से कुछ ने इनका अभ्यास भी आरम्भ कर दिया हो, या निकट भविष्य में जैसे-जैसे आप जीवन को और पास से देखेंगे तो इनका उपयोग आरम्भ कर ही दें। किंतु इससे पहले कि आप यह कदम उठायें, मेरी आप से प्रार्थना है कि आप पुनः इस पुस्तक के आरंभ में जायें व उन इलेवन कमांडमेंट्स को फिर से देखें, जो आपने पढ़े थे, जी हाँ पढ़े थे – किन्तु आत्मसात नहीं किये थे।

जीवन उन्नयन का निचोड़ इस पुस्तक की समग्रता में है – पूरे इलेवन कमांडमेंट्स में, न कि इनमें से किन्हीं दो, चार या पांच में। इन दर्शनों में से केवल कुछ को चुन कर आप अपने जीवन का उन्नयन नहीं कर पायेंगे क्योंकि इलेवन कमांडमेंट्स की सामूहिक शक्ति से ही इनके मायावी प्रभाव की रचना होती है, और इस सामूहिक शक्ति का कारण है इन कमांडमेंट्स का आपस में गुंथा होना व एक दूसरे से जुड़ा होना। और जब आप इनमें से प्रत्येक कमांडमेंट का अभ्यास व अनुसरण करने लगते हैं, उन्हें स्वीकार कर लेते हैं, उन्हें अपने मानस में उतार लेते हैं और उन्हें इस तरह आत्मसात कर लेते हैं कि आप इन कमांडमेंट्स का चलता फिरता उदाहरण बन जायें, तब आपका जीवन उन्नयनित हो जाता है।

आपका जीवन बुद्धिमता ज्ञान, व संभावना-चिंतन का सार होगा, जीवन नैया को मंझधार में झिंझोड़ने का सार होगा, आपके विचारों, शब्दों व कार्यों की सकारात्मकता का सार होगा, नेतृत्व का, भावनात्मक क्षीणता देने वाली परिस्थितियों से दूर जाने का, एकाकी होने का और अंत में एक न दोहराया जा सकने वाला जीवन जीने का सार होगा। आप एक ऐसा जीवन जियेंगे जिसे दोहराने के लिये एक आम मनुष्य को 40 जीवन लेने पड़ें और यही उन्नयनित जीवन का वास्तविक उत्कर्ष होगा।

जब मैं इन इलेवन कमांडमेंट्स पर पुनः दृष्टिपात करता हूँ तो पाता हूँ कि एक व्यक्ति है जो वास्तव में इन इलेवन कमांडमेंट्स का मूर्त रूप है, जिसकी

चर्चा हमने ग्यारहवें अध्याय में की है। इस व्यक्ति ने केवल ग्यारहवां ही नहीं अपितु जीवन उन्नयन के सभी इलेवन कमांडमेंट्स को जीया और उसका जीवन इनमें से प्रत्येक कमांडमेंट का शुद्ध वास्तविक उदाहरण है; स्टीव जॉब्स।

अंत में मैं नव-विचार के इस सर्वाधिक प्रतिभावान साधक को श्रद्धांजली देना चाहूँगा; जिसने जीवन उन्नयन के निचोड़ को मूर्त रूप दिया और इलेवन कमांडमेंट्स में से प्रत्येक का मानवरूप बना। आइये देखें, उन्होंने यह कैसे किया:

- स्टीव जो भी कर रहे थे और जहाँ भी थे, वे उससे संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने निरंतर अपने मौजूदा स्व को समाप्त किया और ऐसे नये उत्पादों की रचना करते रहे जिनकी कल्पना लोगों ने स्वप्न में भी नहीं की थी। वे दुनिया के महानतम अविष्कारक थे, उनसे पहले केवल एक व्यक्ति है- थॉमस एडीसन।
- वे संभावना विचारक थे। उन्होंने Apple का आरंभ अपने पिता के गैरेज से किया और उसे खरबों डॉलर की कम्पनी बना दिया।
- उन्होंने बीच मंझधार में नैया को झिंझोड़ा। कम्प्यूटर उद्योग में अपने सफल व्यवसाय के होते हुए भी उन्होंने दूर संचार, चलचित्र एवं संगीत उद्योग में प्रवेश किया। उन्हें इस बात का भय नहीं था कि इसका उनकी ख्याति और सफलता पर क्या प्रभाव पड़ेगा, और इन सभी उद्यमों में वे सफल रहे।
- वे एक स्वायत्त व्यक्ति थे। जैसे ही उन्हें लगा कि कॉलेज की पढ़ाई का कोई मूल्य नहीं है उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करने लगे, जिनकी वजह से आज उन्हें जाना जाता है। उन्होंने अपना जीवन स्वरचित नियमों के अनुसार जिया और शून्य से आरम्भ कर, विश्व की सबसे मूल्यवान कम्पनी की रचना की।
- उन्होंने अपने चारों ओर मौजूद प्रत्येक संसाधन को उन्नयनित किया और एक ऐसी संस्था की स्थापना की जिसमें 60,000 व्यक्ति काम करते हैं।
- उनके विचार, शब्द व कार्य सदा सकारात्मक थे। उन्हें उनकी कंपनी से निकाल दिया गया, किन्तु वे टूटे नहीं। उन्होंने स्वयं को कुछ ऐसा रचने को तैयार किया जो उनके अब तक किये काम से बड़ा व बेहतर हो।
- वे आजीवन एक नेता रहे और अपने ध्येय के प्रति पूरे समर्पण से प्रयासरत थे। उनका ध्येय था शुद्ध नवपरिवर्तन, नवपरिवर्तन, नवपरिवर्तन।
- उन्होंने स्वयं को भावनात्मक क्षति पहुँचाने वाले व्यवधानों से दूर रखा। वे एक अविवाहित दम्पति की संतान थे और उनके माता-पिता ने उनके जन्म के तुरंत बाद ही उन्हें गोद दे दिया था। उन्हें जब यह पता चला, उनकी आयु पच्चीस वर्ष के लगभग थी, वे अपने पहले माता-पिता से मिले भी, किन्तु उन्होंने इस सच्चाई को अपनी भावनात्मक कमजोरी नहीं बनने दिया।

- वे जीवन में एकाकी थे। उन्हें उनके मौलिक विचारों, बेतुके दर्शन व साहसी कार्यों के लिये जाना जाता है, वे पूरे संसार के प्रति अनासक्त उनकी आसक्ति मात्र उनके उद्देश्य के प्रति थी, और वह था– Apple Inc.
- वे सदा जीवंत रहे। यद्यपि अग्नाशय (Pancreas) का कैंसर घातक था किन्तु उन्होंने जीवन से हार नहीं मानी। वे इस जानलेवा बीमारी से इतनी खूबसूरती से लड़े कि अंतिम सांस तक उन्होंने अपना जीवन जीया – वे अंतिम दिनों तक कार्यरत रहे।
- उन्होंने ऐसा जीवन जीया, जिसे दोहराना कठिन है। अपने छोटे जीवन में उन्होंने चार उद्योगों को रूपांतरित किया और संसार की सर्वाधिक चमत्कारिक कंपनी की रचना की जो कि उनके मरणोपरांत भी जीवित रहेगी।

एक साधारण मानव को एक और Apple कम्पनी बनाने के लिये कितने जीवन लेने होंगे?

मुझे लगता है कि कम से कम 40.

क्या स्टीव जॉब्स का जीवन दोहराया जा सकता है?

यह कठिन कार्य है।

वे इस संसार में बदलाव लाये और यह संसार उन्हें सदा याद रखेगा।

क्या आप ऐसे जीवन के बारे में सोच सकते हैं?

क्या आप अपने मौजूदा सुख को छोड़कर वहाँ पहुँचने को तैयार हैं?

यदि आप असफल हो जायें तो क्या फिर से नयी शुरूआत करने को तैयार हैं?

क्या आप इसका प्रयास करेंगे?

क्या आप ऐसे जीवन की कल्पना कर सकते हैं?

क्या आप इसका प्रयत्न भी कर सकते हैं?

यदि उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर हाँ है, तो आपका पृथ्वी पर आना सार्थक व योगदायी है। यदि नहीं, तो आप किसी भी क्षण मर सकते हैं क्योंकि आपका जीवन जीने योग्य नहीं है।

उन्नयनित जीवन की शुभकामनायें!

संदर्भ

smmart – एक परिचय

smmart ट्रेनिंग एंड कन्सलटेंसी सर्विसेज प्रा. लि. संतोष नायर का मानसपुत्र है और भारत की सबसे अच्छी 'उद्योग रूपांतरण' कम्पनियों में से एक है।

13 वर्ष पूर्व smmart का आरम्भ एक कॉरपोरेट प्रशिक्षण कम्पनी के रूप में हुआ और आज इसने अपने पंख कई उद्योगों व प्रशिक्षण के विभिन्न रूपों में फैला लिये हैं जिनमें प्रेरक व्याख्यान, क्लासरूम प्रशिक्षण कार्यक्रम, आउटबाउंड प्रशिक्षण, इन्टरएक्टिव/एक्टीविटी–बेस्ड कार्यशालाएँ, उद्योग–प्रशिक्षण आदि।

smmart की विशेष योग्यता वाले क्षेत्र हैं–

1. प्रेरणादायी कार्यक्रम
2. सेल्स प्रशिक्षण कार्यक्रम, लघु एवं दीर्घकालीन जिनमें समय–समय पर पुनर्विवेचना का प्रावधान है।
3. नेगोसिएशन
4. नेतृत्व विकास
5. मुख्य/महत्वपूर्ण ग्राहक प्रबंधन
6. कोई अन्य कौशल एवं विचार परिवर्तन कार्यक्रम जो कि संगठन की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किये जाते हैं।
7. सी ई ओ कोचिंग एवं मेंटरिंग
8. उद्यमिता विकास कार्यक्रम जो कि लघु एवं दीर्घकालीन है व उनमें समय समय पर पुनरावलोकन का प्रावधान है।
9. व्यक्तिगत अनुशिक्षण, सलाहकारिता एवं छोटे एवं मंझले उद्योगों का योग्यता संवर्धन
10. कार्य पद्धतियाँ और प्रणालियों का संस्थाकरण, व छोटे एवं मध्यम उद्योगों का समग्र विकास, आदि।

smmart द्वारा प्रशिक्षित कुछ उत्कृष्ट कॉरपोरेशंस है

1. एपटेक इंडिया
2. एशियन पेंट्स (इंडिया) लि.

3. अविवा लाइफ इंश्योरेंस
4. एक्सिस बैंक
5. बजाज एलाएंस
6. भारती एक्सा
7. भारती सैल्यूलर लि. (एयरटेल)
8. बिरला म्युचूअल फंडस
9. बिरला सन लाइफ इंश्योरेंस
10. कोका कोला
11. डी एल एफ लि.
12. डन एंड ब्रैडस्ट्रीट
13. फोर्ड मोटर्स
14. हिन्दुस्तान यूनीलीवर
15. एच डी एफ सी, स्टैंडर्ड लाइफ इंश्योरेंस
16. एच एस बी सी बैंक
17. हुंडई मोटर्स
18. आयसी आयसी आय बैंक
19. आइडिया सैल्यूलर
20. आयन एक्सचेंज
21. आय टी डब्ल्यू इंडिया लि.
22. जौन डिरी
23. कोटक लाइफ इंश्योरेंस
24. महिन्द्रा एंड महिन्द्रा
25. मैक्स लाइफ इंश्योरेंस कम्पनी
26. न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर्स
27. मैटलाइफ
28. ओम कोटस महिन्द्रा
29. फिलिप्स
30. प्रौक्टर एंड गैम्बल
31. रिलाएंस लाइफ इंश्योरेंस

32. सेंट ग़ोबेन ग्लास

33. सोडैक्सो

34. स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक

35. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

36. एस बी आय लाइफ इंश्योरेंस

37. एस के एफ बीयरिंगस

38. टाटा एआयजी

39. टाटा स्काय लि.

40. टाटा वी एस एन एल

41. वोडाफोन एस्सार लि.

42. अन्य कई छोटे व मध्यम उद्योग

हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में अधिक जानने के लिये, या स्वयं और स्वयं के संगठन में बदलाव लाने हेतू, हमारी सेवाएं लेने के लिये आप हमसे संपर्क कर सकते हैं। हमारा पता है–

smmart ट्रेनिंग एंड कन्सल्टन्सी सर्विसेज़ प्रा. लि.
506, आकृति आरकेड
वाडिया स्कूल के सामने, जे. पी. रोड
अंधेरी (पश्चिम)
मुम्बई – 400053
फोन नं. – 022 6772 9000
www.smmart.co.in

संतोष नायर के नॉलेज प्रोडक्टस् एवं मर्चेंडाइस प्रा. लि.,

संतोष नायर द्वारा स्थापित उद्यम है, जिसका उद्देश्य उत्कृष्टता एवं रूपांतरण को बढ़ावा देना है।

'संतोष नायर' ब्रांड, अपने आप में, एक शक्तिशाली नॉलेज बैंक का प्रतिनिधित्व करता है, और इनके ऑडियो, वीडियो, पुस्तकें और अन्य व्यापारिक उत्पाद जैसे कि कैलेन्डर्स, मग्स, टी-शर्टस, जिन पर संतोष नायर के उद्धरण अंकित है, पूरे देश में उपलब्ध है।

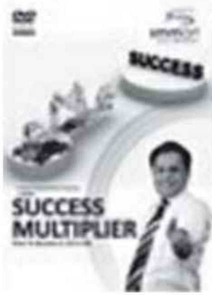
इनमें से प्रत्येक उत्पाद बिजली के झटके की तरह कार्य करते हुए लोगों को स्वयं से विद्रोह के लिए प्रेरित करता है, ये उत्पाद उन्हें उनकी मौजूदा वास्तविकताओं से अवगत कराते हैं, उनके प्रति चेतना लाते हैं, और उनकी वास्तविक क्षमताओं को परिवर्तित करते हैं।



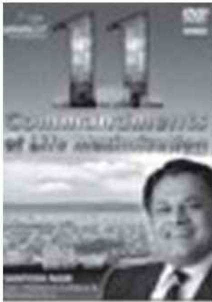
आत्मविश्वास प्रवर्धक – हमें चारों ओर से घेरे हुए भय व असुरक्षा से सामना होने पर, हमारे विचारों, शब्दों एवं कार्यों को शांत, चौकन्ना एवं निर्देशित रखने का शाश्वत गुण ही आत्मविश्वास है। इस चार घंटे के स्वशक्तिकरण कार्यक्रम में, संतोष नायर, आत्मविश्वास व उसकी महत्ता बताते हुए एक प्रेरक व्याख्यान देते हैं, वे आत्मविश्वासी लोगों के पांच कार्यों व तीन महत्वपूर्ण गुणों के बारे में बताते हैं, ताकि श्रोता अपने आत्मविश्वास की सुरक्षा व संवर्धन करने योग्य बन सकें।



भविष्य प्रवर्धक – हमारा भविष्य हमारी सम्पत्ति है, ओर हमें उसकी पूरी देखभाल करनी चाहिये ताकि समय पर हम उसका पूरा लाभ ले सकें। इस चार घंटे के कार्यक्रम में संतोष नायर जीवन के विश्वविद्यालय व उन 12 लक्ष्यो को चुनने व पाने की चर्चा करते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति के भविष्य संवर्धन के लिये आवश्यक है।



सफलता संवर्धक – कई लोग प्राकृति रूप से सफल नहीं होते हैं। सफलता के कुछ पूर्वनिर्धारित मंत्र है, जिन्हें समझकर उनका अभ्यास करने से ही आप जीवन में सफल हो सकते हैं। इस चार घंटे के प्रेरक व्याख्यान में संतोष नायर श्रोताओं को न केवल जीवन के हर क्षेत्र में सफल कैसे हो, इसकी जानकारी देते हैं अपितु सफलता के छः मंत्रों पर से भी पर्दा उठाते हैं।



जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स – इस ग्यारह निदेशों, आदेशों, अपेक्षाओं, अनुदेशों या प्रभु के विधानों की व्याख्या है, जिन्हें हम प्रेम से जीवन उन्नयन के इलेवन कमांडमेंट्स कहते हैं और अपने जीवन के उन्नयन के लिये इनका पालन प्रत्येक दिन, प्रत्येक घंटे, प्रत्येक मिनट व अपने जीवन के प्रत्येक क्षण, करना आवश्यक है। यह सीडी अवश्य देखी जानी चाहिये, विशेषकर, यह पुस्तक पढ़ने के बाद।



कार्यशीलता / उत्पादकता प्रवर्धक – यह एक अतःदृष्टिपूर्ण व आपसी बातचीत पर आधारित कार्यक्रम है, जो सुनिश्चित करता है कि आप कार्यशील/ उत्पादक, आत्मविश्वासी एवं प्रसन्न रहे, चाहे आपके चारों ओर की परिस्थितियां कितनी ही हतोत्साहित करने वाली व चुनौतिपूर्ण क्यों न हो। इस कार्यक्रम में आपका परिचय कुछ यंत्रो व तकनीकों से होता है, साथ ही आप इनका प्रयोग रेशनल इमोटिव बिहेवियर थैरेपी एवं ए बी सी डी ई की अत्याधुनिक तकनीक द्वारा सीखते हैं, जिससे आप प्रत्येक नकारात्मक भावना व विश्वास को सकारात्मकता से प्रतिस्थापित कर सकें।



सेल्स प्रवर्धक – प्रत्येक मनुष्य को जीवन में कुछ न कुछ बेचना होता है, चाहे वह एक उद्यमी हो, एक सेल्स का व्यक्ति, एक अध्यापक, एक बालक एक माता पिता, एक बॉस, या एक अधीनस्थ कर्मचारी। इस प्रभावशाली सीडी में सेल्स गुरु संतोष नायर श्रोताओं को सिखा रहे हैं समय बचाने की नयी आविष्कारिक तकनीकें, संवेग बढ़ाना एवं कोई विचार, उत्पाद अथवा कल्पना बेचते हुए एक अर्थपूर्ण बदलाव लाना जिससे जीवन सरल, जीवन्त, प्रगतिशील एवं सफल हो।



अवसर प्रवर्धक– इस चार घंटे के जीवन रूपांतरित कर देने वाले व्याख्यान में, संतोष नायर दो बीमारियों के बारे में बात करते हैं, जिनसे हममें से अधिकतर लोग ग्रसित है: 100% सही का रोग (जो भी करूंगा, परफैक्ट करूंगा) तथा पुराना–कल–करने–का–रोग (जो भी करूंगा कल से करूंगा) इस बीमारी को ठीक करने वाली एकमात्र दवा है smmart का 75% अवसर–मंत्र, जो आपको बताता है कि आप किस प्रकार अपने व्यवसाय, स्वास्थ्य, सम्पदा, सम्बंध, योग्यताओं एवं जीवन के संवर्धन के सभी अवसरों को पकड़ सकते हैं।



विश्वास प्रवर्धक– सफलता के लिये जिस चीज की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, वह है विश्वास। यदि इसका पोषण ठीक से किया गया तो यह समृद्धिदायी बन जाता है, और यदि खो गया, तो यह सफलतम कॉरपोरेशंस, या सम्बंधों को सदा के लिये समाप्त कर देता है। विश्वास–प्रवर्धक आपको कुछ सरल तकनीकें व 15 गुणों की जानकारी देता है जिससे आप सदा के लिये एक डीटीआर बन जाये डिपेन्डेबल (विश्वसनीय), ट्रस्टवर्दी (विश्वास योग्य), रिलाएबल (विश्वस्त)।



नेतृत्व प्रवर्धक– इस ऊर्जापूर्ण कार्यक्रम में संतोष नायर निम्नलिखित विषयों पर जानकारी देते हैं

- नेता कौन है?
- नेता कैसे बनाएँ जाते हैं?
- नेता के गुण
- नेतृत्व के पाँच स्तर
- नेतृत्व के 14 प्रमुख पाठ



परिवर्तन प्रवर्धक – हमारे चारों ओर का संसार बदल रहा है। लोग बदल रहे हैं, सम्बन्ध बदल रहे हैं, उद्योग बदल रहे हैं, अर्थव्यवस्थाएं बदल रही हैं, जिन स्थितियों व परिस्थितियों में पहले लोग काम करते थे, वे सभी बदल रही है। इस बदलते हुए समय के साथ कदम से कदम मिला कर चलने के लिये, प्रासंगिक बने रहने के लिये और दुनिया के बराबर रहने के लिये आपको परिवर्तन के डीएनए का निर्माण करना होगा और एक परिवर्तन प्रवर्धक बनना होगा। इस कार्यक्रम में संतोष नायर सिखा रहे हैं परिवर्तन–प्रवर्धन की कला और अपनी कम्पनी अथवा संगठन में परिवर्तन लाने की आठ–सूत्री रूपरेखा।



विशिष्ट योग्यता प्रवर्धक– आपको केवल वही करना चाहिए, जो आपको सबसे अच्छा लगे और, यदि आप आने वाले दस वर्ष अथवा 10,000 घंटो तक यही करते रहें, तो आप अपने क्षेत्र के जीनीयस सर्वाधिक प्रतिभावन, व्यक्ति हो

जायेंगे। जीवन को रूपांतरित कर देने वाले इस व्याख्यान में संतोष नायर बता रहे हैं–

- विशिष्ट योग्यता क्या है?
- डी.एफ.एफ. अर्थात डिस्टिंक्ट फोर्ट फियर्स या विशिष्ट योग्यता के भय, जो आपको अपनी विशिष्ट योग्यता पाने नहीं देते।
- विशिष्ट योग्यता व पांच शक्तियों की प्रक्रिया : अपनी विशिष्ट योग्यता को पहचाने
- विशिष्ट योग्यता दल : आपका सहायक समूह जो आपकी विशिष्ट योग्यताओं को पाने में सहायता करे।



उत्तरदायित्व प्रवर्धक – उत्तरदायित्व से भागना जीवन जीने का एक सोचा समझा रूप है। यह एक मानसिक रोग है, एक न्यूरॉसिस है, एक साइकॉसिस है नशे की स्थिति है, यह आपके दर्शन में इतना गहरा बैठा होता है कि आपको इस सच्चाई का भान ही नहीं होता कि आप अपने उत्तरदायित्व से भाग रहे हैं। अंतत: आप अपनी स्वयं की एवं अपने आसपास के लोगों की प्रगति रोक देते हैं। इस कार्यक्रम में संतोष नायर उत्तरदायित्व पलायनकर्त्ता एवं उत्तरदायित्व प्रवर्धक में अंतर करना सिखाते है और उन ग्यारह गुणों पर प्रकाश डालते हैं जो एक उत्तरदायित्व पलायनकर्ता के विशेष गुण हैं, साथ ही आपको उत्तरदायित्व प्रवर्धक बनाने के छ: मंत्र भी बताते हैं।



अनिश्चित समय में जीतना – आज हम सभी अनिश्चित समय का सामना कर रहे हैं। इस अवधि को हम व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक अशांति का समय कह

सकते हैं, यह एक असमंजस, संशय, निराशा, बेचैनी, चिन्ता, अवसाद, कष्ट एवं दबाव का समय हो सकता है। इस चार घंटे के, ऊर्जा से परिपूर्ण कार्यक्रम में संतोष नायर विजयी होने व उन आठ मंत्रों की बात करते हैं जो कि अनिश्चित समय में आपको विजयी बनाने के लिये आवश्यक है।



उद्यमी अवसर क्यों गवां बैठते हैं–

- क्या आपके विचार में, आप एक सफल उद्यमी हैं?
- क्या आपका व्यवसाय साल–दर–साल बढ़ रहा है?
- क्या आप अपने प्रतिष्ठान को प्रगति दे कर अगले स्तर तक पहुँचा रहे हैं?
- क्या आपको एक उद्यमी होना अच्छा लगता है?

  यह कार्यक्रम निश्चित ही आपकी आंखें खोल देगा– चाहे आपने इन प्रश्नों का उत्तर हाँ में दिया हो या ना में। यह आपको उत्कृष्ट उद्यमिता की राह बताता है और उद्यमिता के हर क्षण का आनंद लेने में सहायता करता है।

इन ऑडियो, वीडियो को मंगवाने के लिये अथवा हमारे अन्य नॉलेज प्रॉडक्ट्स व व्यापारिक उत्पादों की जानकारी के लिये आप हमें नीचे दिये पते पर संपर्क कर सकते हैं,

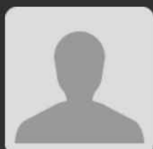
smmart ट्रेनिंग एंड कन्सल्टन्सी सर्विसेज प्रा. लि.
506, आकृति आरकेड,
वाडिया स्कूल के सामने, जे. पी. रोड,
अंधेरी (पश्चिम)
मुम्बई 400 053
भारत
फोन नं. 022 6772 9000
www.smmart.co.in

Before You Go...

Review this book  

On Amazon (as jagpreet) & Goodreads

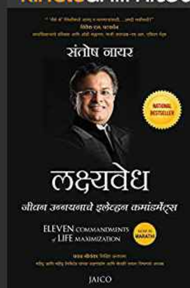
Follow the author



Santosh Nair

 FOLLOW

More by Santosh Nair



Customers who bought this book also bought





